सोशल मीडिया से जुड़ें
Parivehan_Vishesh

RNI No :- DELHIN/2023/86499
DCP Licensing Number :
F.2 (P-2) Press/2023

www.newsparivahan.com

परिवहन विशेष

वर्ष 03, अंक 117, नई दिल्ली, रविवार 06 जुलाई 2025, मूल्य ₹ 5, पेज 8

देश का पहला ट्रांसपोर्ट दैनिक समाचार पत्र

आज का सुविचार

आदत किसी भी चीज की अच्छी नहीं होती, अति होने पर हमेशा कष्टदायक होती है।

03 दिल्ली के समाज कल्याण मंत्री रविंद्र इंद्राज ने जेजे कॉलोनी का दौरा किया

06 कक्षाओं में बहुभाषावाद सीखने के परिणामों को बढ़ाएगा

08 पुरी शहर एक महानगर निगम होगा, एक विश्व स्तरीय आध्यात्मिक शहर भी होगा

दिल्ली में प्रदूषण पर लगाम के लिए सीएक्यूएम का हरियाणा-पंजाब को सख्त निर्देश

संजय बाटला

आयोग ने हरियाणा और पंजाब में प्रदूषण कम करने के लिए एक्शन प्लान की समीक्षा की। आयोग ने पराली प्रबंधन पर जोर देते हुए दोनों राज्यों को पराली जलाने की घटनाओं को खत्म करने का निर्देश दिया। इसके साथ ही औद्योगिक इकाइयों में बायोमास पैलेट्स का इस्तेमाल सुनिश्चित करने और पेट्रोल पंपों पर एएनपीआर कैमरे लगाने के निर्देश दिए गए हैं ताकि प्रदूषण को कम किया जा सके।

नई दिल्ली: आगामी सर्दी में प्रदूषण की रोकथाम के लिए वायु गुणवत्ता प्रबंधन आयोग (CQAM) सक्रियता बढ़ा दी है। इसी क्रम में आयोग ने हरियाणा व पंजाब में प्रदूषण कम करने के एक्शन प्लान पर चल रहे कार्यों की समीक्षा की।

जिसमें सीएक्यूएम ने सड़कों पर धूल, वाहनों के धुएं, थर्मल पावर प्लांटों से उत्सर्जन कम करने सहित सर्दी में प्रदूषण के लिए जिम्मेदार कारकों की रोकथाम के लिए निर्देश दिए।

साथ ही आयोग ने पराली के प्रबंधन पर ज्यादा जोर दिया और दोनों राज्यों को इस बार सर्दी में पराली जाने की घटनाओं को पूरी तरह खत्म करने का निर्देश दिया। पिछले वर्ष पंजाब में 30 नवंबर तक पराली जलाने की 10,909 व हरियाणा में 1406 घटनाएं सामने आई थीं।

पराली से बायोमास बनाने वाले प्लांट का किया निरीक्षण

इसके मद्देनजर सीएक्यूएम की टीम ने पंजाब व हरियाणा में पराली से बायोमास ईंधन (पैलेट्स) तैयार करने वाले संयंत्रों,कंप्रेस्ड बायो-गैस (सीबीजी) संयंत्रों, बायोगैस प्लांट, इथेनाल बनाने के प्लांट और औद्योगिक बायलर इत्यादि का निरीक्षण किया।

ताकि पराली को खेतों में जलाने के बजाए उसके वैकल्पिक इस्तेमाल को बढ़ावा दिया जा सके। इससे पहले सीएक्यूएम के चेयरमैन राजेश वर्मा ने तीन जुलाई को हरियाणा और पंजाब के मुख्य सचिव व वरिष्ठ अधिकारियों के साथ एक उच्च स्तरीय बैठकर पराली जलाने की प्रथा को पूरी तरह समाप्त करने के लिए कहा।

इस दौरान मौजूदा वित्त वर्ष 2025-26 में औद्योगिक इकाईयों में इस्तेमाल होने वाले ईंधन में कम से कम से पांच प्रतिशत बायोमास पैलेट्स का इस्तेमाल सुनिश्चित करने का निर्देश दिया है। हरियाणा को थर्मल पावर प्लांटों में उत्सर्जन के मानक का पालन सुनिश्चित करने के लिए कहा गया है।

पेट्रोल पंपों पर एएनपीआर कैमरे लगाने के निर्देश

सीएक्यूएम ने हरियाणा सरकार को पहले जारी निर्देश के अनुसार 31 अक्टूबर तक फरीदाबाद, गुरुग्राम व सोनीपत में सभी पेट्रोल पंपों पर एएनपीआर (आटोमेटिक नंबर प्लेट रिकग्निशन) कैमरे लगाने लगाने निर्देश दिए गए।

ताकि उम्र पूरी कर चुके वाहनों पर रोक लग सके। दिल्ली में प्रदूषण फैलाने वाले परिवहन व व्यवसायिक माल वाहनों के प्रवेश पर प्रतिबंध लागू किया जाना है। इसलिए दिल्ली में प्रवेश करने वाली सभी बसें स्वच्छ ईंधन से संचालित होंगी। इसमें आल इंडिया परमिट और अन्य सेवाओं के तहत संचालित बसें शामिल होंगी। डीजल से चलने वाले सभी आटो-रिक्शा भी चरणबद्ध तरीके से हटेंगे।

सीएक्यूएम ने हरियाणा सरकार को पहले जारी निर्देश के अनुसार 31 अक्टूबर तक फरीदाबाद, गुरुग्राम व सोनीपत में सभी पेट्रोल पंपों पर एएनपीआर (आटोमेटिक नंबर प्लेट रिकग्निशन) कैमरे लगाने लगाने निर्देश दिए गए। ताकि उम्र पूरी कर चुके वाहनों पर रोक लग सके। दिल्ली में प्रदूषण फैलाने वाले परिवहन व व्यवसायिक माल वाहनों के प्रवेश पर प्रतिबंध लागू किया जाना है। इसलिए दिल्ली में प्रवेश करने वाली सभी बसें स्वच्छ ईंधन से संचालित होंगी।

बदल गई रविवार को मेट्रो की टाइमिंग, इन लाइनों पर हो सकती है दिक्कतें

संजय बाटला

दिल्ली मेट्रो ने घोषणा की है कि चौथे चरण के एकीकरण कार्यों को तेज करने के लिए रविवार को पिंक और येलो लाइन की कुछ सेवाएं देर से शुरू होंगी। पिंक लाइन पर सेवाएं सुबह 8 बजे और येलो लाइन पर जहांगीरपुरी से समयपुर बादली खंड पर सुबह 7 बजे से शुरू होंगी। यात्रियों को सलाह दी गई है कि वे अपनी यात्रा की योजना नए समय के अनुसार बनाएं।

नई दिल्ली। दिल्ली मेट्रो रेल कॉरपोरेशन (डीएमआरसी) ने घोषणा की है कि मेट्रो के चौथे चरण (फेज-4) के एकीकरण कार्यों को तेज करने के लिए 6 जुलाई (रविवार) को पिंक लाइन और येलो लाइन की कुछ सेवाएं देर से शुरू होंगी। यात्रियों को सलाह दी गई है कि वे अपनी यात्रा की योजना नए समय के अनुसार बनाएं।

इन लाइनों पर किया गया बदलाव

पिंक लाइन पर मेट्रो सेवाएं रविवार को सुबह 7 बजे के बजाय 8 बजे से शुरू होंगी। यह बदलाव फेज-4 के तकनीकी कार्यों को पूरा करने के लिए किया जा रहा है। इस लाइन पर 59.24 किलोमीटर की दूरी में 38 स्टेशन हैं, जो उत्तरी दिल्ली के मजलिस पार्क से लेकर शिव विहार तक जाती है। यह दिल्ली की सबसे लंबी मेट्रो लाइन है और रिंग रोड के साथ-साथ चलती है।

येलो लाइन के जहांगीरपुरी से समयपुर बादली खंड पर मेट्रो सेवाएं सुबह 6 बजे के बजाय 7 बजे से शुरू होंगी। यह खंड मिलेनियम सिटी सेंटर (गुड़गांव) से समयपुर बादली तक चलने वाली येलो लाइन का हिस्सा है। इस लाइन की कुल लंबाई 49.31 किलोमीटर है और इसमें 37 स्टेशन हैं, जो उत्तरी दिल्ली से लेकर गुड़गांव तक कनेक्टिविटी प्रदान करती है।

अन्य लाइनों पर कोई बदलाव नहीं

डीएमआरसी ने स्पष्ट किया है कि बाकी सभी मेट्रो लाइनों (जैसे रेड, ब्लू, वायलेट, आदि) पर रविवार को सेवाएं सामान्य समय-सारिणी के अनुसार चलेंगी। यात्रियों को सलाह दी जाती है कि वे पिंक और येलो लाइन पर सुबह की यात्रा के लिए समय में बदलाव को ध्यान में रखें।

दिल्ली में इन तीन फ्लाईओवर की होगी मरम्मत, सड़कों पर ट्रैफिक का दबाव होगा कम

परिवहन विशेष न्यूज

दिल्ली के लोक निर्माण विभाग (पीडब्ल्यूडी) ने दक्षिण दिल्ली में तीन फ्लाईओवर और एक पुलिया की मरम्मत करने और पूर्वी दिल्ली के न्यू अशोक नगर के पास तीन नए पुलों का निर्माण करने की योजना बनाई है। मरम्मत के लिए आईआईटी फ्लाईओवर ओल्ड राव तुला राम फ्लाईओवर और मोदी मिल फ्लाईओवर को चुना गया है। पूर्वी दिल्ली में नए पुल आरआरटीएस मेट्रो स्टेशन के पास बनेंगे।

नई दिल्ली। लोक निर्माण विभाग (पीडब्ल्यूडी) दक्षिण दिल्ली में तीन प्रमुख फ्लाईओवर और एक पुलिया की मरम्मत कराने के साथ साथ शहर के पूर्वी छोर पर न्यू अशोक नगर के निकट तीन नए पुलों का निर्माण शुरू करने की योजना बना रहा है।

पीडब्ल्यूडी अधिकारियों के अनुसार 1994 में बने आईआईटी फ्लाईओवर, ओल्ड राव तुला राम फ्लाईओवर और मोदी मिल फ्लाईओवर को व्यापक मरम्मत कार्य के लिए चुना गया है।

आने वाले दिनों में इन फ्लाईओवर के साथ-साथ लाला लाजपत राय मार्ग के पास एक पुलिया का संरचनात्मक ऑडिट किया जाएगा। पूर्वी दिल्ली में पीडब्ल्यूडी न्यू अशोक नगर में आरआरटीएस मेट्रो स्टेशन के पास तीन छोटे पुलों का निर्माण करने जा रहा है।

हाल ही में इस मेट्रो स्टेशन का उद्घाटन हुआ था। अधिकारियों ने बताया कि दिल्ली-उत्तर प्रदेश सीमा के निकट और शाहदरा नाले से सटे इस क्षेत्र में यातायात की भीड़ बढ़ गई है।

नोएडा एयरपोर्ट के पास बनेगा देश का सबसे सुंदर इंटरचेंज, दिखेगी बेंगलुरु की झलक; नितिन गडकरी करेंगे शुभारंभ

नोएडा इंटरनेशनल एयरपोर्ट को दिल्ली-मुंबई एक्सप्रेसवे से जोड़ने वाला इंटरचेंज देश का सबसे सुंदर इंटरचेंज बनेगा। एनएचएआई इसे बेंगलुरु एयरपोर्ट जैसा बनाएगा जिसमें फूल हरियाली और पौधे होंगे। आठ जुलाई को केंद्रीय परिवहन एवं राजमार्ग मंत्री नितिन गडकरी इसका शुभारंभ करेंगे। 35 एकड़ जमीन पर झील फव्वारे पार्क और पगडंडी विकसित किए जाएंगे।

जेवर। नोएडा इंटरनेशनल एयरपोर्ट को दिल्ली मुंबई एक्सप्रेसवे और यमुना एक्सप्रेसवे से जोड़ने के लिए बन रहे इंटरचेंज को देश का सबसे सुंदर इंटरचेंज बनाया जाएगा। भारतीय राष्ट्रीय राजमार्ग प्राधिकरण ने इसको बेहद शानदार बनाने के लिए बेंगलुरू के केंपेगौड़ा इंटरनेशनल एयरपोर्ट के बाहर दिखने वाली फूल, हरियाली और पौधों से सजी सड़कों जैसी लुक देने का प्लान तैयार कर लिया है।

आठ जुलाई को सड़क परिवहन और राजमार्ग मंत्री नितिन गडकरी परियोजना में एक पौधा मां के नाम लगाकर शुभारंभ करेंगे। जिसके बाद इंटरचेंज पर चार लूप व आठ ट्रेंगलों को पौधे, घास, झील, चबूतरे, पार्क, पगडंडी बनाकर सवांरने का काम शुरू होगा। एयरपोर्ट से व्यावसायिक उड़ाने शुरू होने से पहले इंटरचेंज को पूरी तरह से तैयार कर चालू कर दिया जाएगा।

यमुना एक्सप्रेसवे से जोड़ने के लिए इंटरचेंज बनाया गया

नोएडा इंटरनेशनल एयरपोर्ट को दिल्ली मुंबई एक्सप्रेसवे से सीधे जोड़ने के लिए केएमपी लिंक से 31 किमी का लिंक एक्सप्रेसवे भारतीय राष्ट्रीय राजमार्ग प्राधिकरण बनाकर तैयार कर रहा है। इस लिंक एक्सप्रेसवे को एयरपोर्ट के लगभग एक किमी पहले यमुना एक्सप्रेसवे से जोड़ने के लिए इंटरचेंज बनाया गया है। इस इंटरचेंज में यमुना एक्सप्रेसवे के दोनों तरफ लिंक एक्सप्रेसवे से जोड़ने के लिए चार लूप और आठ ट्रेंगल बने हैं।

इंटरचेंज देश का सबसे सुंदर दिखने वाला इंटरचेंज होगा

भारतीय राष्ट्रीय राजमार्ग प्राधिकरण इन लूप और ट्रेंगल में खाली पड़ी लगभग 35 एकड़ जमीन पर झील, एलईडी लाइटिंग के साथ लेटेस्ट तकनीकि के फाउंटेन फव्वारे, वृताकार बायपाथ (पगडंडी), पार्क विकसित करने जा रहा है। इंटरचेंज की सुंदरता बढ़ाने के लिए उन्नत किस्म के देशी और विदेशी प्रजातियों के फूल देने वाले सुंदर पौधे और हरियाली बढ़ाने के लिए घास लगाई जाएगी। एनएचएआई के अधिकारियों ने बताया कि यह इंटरचेंज देश का सबसे सुंदर दिखने वाला इंटरचेंज होगा।

एयरपोर्ट से पहले ही यात्रियों को होने लगेगा सुंदरता का अनुभव

दरअसल लिंक एक्सप्रेसवे को भारतीय राष्ट्रीय राजमार्ग प्राधिकरण बेंगलुरू इंटरनेशनल एयरपोर्ट के बाहर दिखने वाली हरी भरी फूलों से सजी सड़कों जैसी लुक देने जा रहा है। इसके लिए पूरी परियोजना में लगभग 25 हजार अलग-अलग किस्मों के पौधे लगाए जाने हैं।

लिंक एक्सप्रेसवे या इंटरचेंज पर पहुंचने के बाद ही यात्रियों को यहां कि सुंदरता का अहसास होने लगेगा। यहां लगाए जाने वाले पौधे ज्यादातर सालभर हरे भरे बने रहने के साथ ही फूल भी देते रहने वाले लगाए जा रहे हैं। साथ ही ध्यान रखा जा रहा है कि पर्यावरण को ज्यादा फायदा पहुंचाने वाले पौधों को प्राथमिकता दी जाए।

शनिवार को जन्म लेने वाले जातक और शनिवार का नामकरण: वैदिक और खगोलीय आधार

"शनिवार" शब्द संस्कृत के ₹शनिः (शनैश्चर) और 'वार' (दिन) से मिलकर बना है। वैदिक ज्योतिष और सूर्य सिद्धांत के अनुसार, सप्ताह के सात दिन सात ग्रहों (नवग्रहों में से सूर्य, चंद्र, मंगल, बुध, गुरु, शुक्र, शनि) से जुड़े हैं। शनिवार का संबंध शनि ग्रह से है, जो ₹शनैश्चर₹ (धीमी गति से चलने वाला) कहलाता है, क्योंकि यह सौरमंडल में सबसे धीमी गति से सूर्य की परिक्रमा करता है (लगभग 29.5 वर्ष में एक राशि चक्र पूरा करता है)।

खगोलीय गणितीय आधार: सूर्य सिद्धांत (लगभग 5वीं शताब्दी, आर्यभट्ट और अन्य खगोलशास्त्रियों द्वारा) में ग्रहों की गति और काल गणना का वर्णन है। शनि का सौरमंडल में बृहस्पति के बाद दूसरा सबसे बड़ा ग्रह होना और इसकी धीमी गति इसे समय, कर्म, और दीर्घायु का कारक बनाती है। सप्ताह के दिनों का क्रम (रवि, सोम, मंगल, बुध, गुरु, शुक्र, शनि) ग्रहों की सापेक्ष गति और उनके पृथ्वी से दूरी के आधार पर निर्धारित हुआ, जो खगोलीय गणित का एक हिस्सा है।

दार्शनिक आधार: शनि को वैदिक दर्शन में कर्म का प्रतीक माना जाता है। यह ₹न्याय का देवता₹ है, जो व्यक्ति के कर्मों के आधार पर फल देता है। शनिवार का नामकरण इस दार्शनिक विश्वास से भी प्रेरित है कि यह दिन कर्मों के चिंतन और आत्म-मूल्यांकन के लिए उपयुक्त है।

शनिवार को जन्म लेने वाले जातक का फलादेश: वैदिक ज्योतिष के आधार पर

वैदिक ज्योतिष में, जन्म के दिन का प्रभाव जातक के स्वभाव, कर्म, और जीवन पथ पर पड़ता है। शनिवार को जन्म लेने वाले जातक पर शनि ग्रह का प्रभाव प्रबल होता है, लेकिन इसका पूर्ण फलादेश जन्म कुंडली (लग्न, राशि, नक्षत्र, ग्रहों की स्थिति) पर निर्भर करता है। फिर भी, सामान्य फलादेश निम्नलिखित है:

स्वभाव और व्यक्तित्व:

शनिवार को जन्मे जातक गंभीर, धैर्यवान, और अनुशासित होते हैं। शनि का प्रभाव उन्हें कर्मठ, मेहनती, और दीर्घकालिक सोच वाला बनाता है।

इनमें आत्म-नियंत्रण और जिम्मेदारी का भाव प्रबल होता है, लेकिन कभी-कभी ये अत्यधिक गंभीर या एकाकी हो सकते हैं।

शनि की छाया (साढ़ेसाती, ढैय्या) के कारण इनके जीवन में चुनौतियाँ और विलंब संभव हैं, जो इन्हें धैर्य और संयम सिखाते हैं।

कर्म और करियर:

शनि का संबंध मेहनत, तकनीक, खनन, कृषि, और दीर्घकालिक परियोजनाओं से है। ऐसे जातक इंजीनियरिंग, प्रशासन, कानून, या सामाजिक कार्यों में सफल हो सकते हैं।

इनके जीवन में सफलता देर से मिलती है, लेकिन स्थायी होती है। शनि का प्रभाव इन्हें ₹कर्मयोगी₹ बनाता है।

स्वास्थ्य:

शनि हड्डियों, जोड़ों, और तंत्रिका तंत्र को प्रभावित करता है। शनिवार को जन्मे जातक को जोड़ों का दर्द, गठिया, या तनाव संबंधी समस्याएँ हो सकती हैं।

नियमित व्यायाम, ध्यान, और शनि की शांति के उपाय (जैसे शनिदेव की पूजा, तिल-तेल दान) लाभकारी होते हैं।

आध्यात्मिक और दार्शनिक प्रवृत्ति:

शनि का प्रभाव जातक को आध्यात्मिक और दार्शनिक बनाता है। ये लोग जीवन के गहरे प्रश्नों पर चिंतन करते हैं और सत्य की खोज में रुचि रखते हैं।

सूर्य सिद्धांत और खगोलीय गणित का योगदान

सूर्य सिद्धांत में शनि की गति और काल गणना का वर्णन है। शनि का एक राशि में गोचर लगभग 2.5 वर्ष का होता है, जो जातक के जीवन में दीर्घकालिक प्रभाव डालता है। खगोलीय गणित के आधार पर, शनि की स्थिति (उदाहरण के लिए, उच्च राशि तुला या नीच राशि मेष) और अन्य ग्रहों के साथ युति (जैसे गुरु या मंगल) जातक के फलादेश को प्रभावित करती है।

उदाहरण: यदि शनिवार को जन्मे जातक की कुंडली में शनि लग्न या चंद्र राशि में उच्च का है, तो वह अत्यंत बुद्धिमान, नीतिवान, और नेतृत्वकारी हो सकता है। वहीं, नीच शनि के साथ मंगल की युति हो तो संघर्ष और क्रोध की प्रवृत्ति बढ़ सकती है।

क्वांटम सिद्धांत का समन्वय

क्वांटम सिद्धांत और वैदिक ज्योतिष का समन्वय एक आधुनिक और सट्टात्मक दृष्टिकोण है। क्वांटम सिद्धांत में अनिश्चितता (Heisenberg's Uncertainty Principle) और संभावनाओं का सिद्धांत शामिल है, जो वैदिक ज्योतिष के कर्म और भाग्य के सिद्धांत से मेल खाता है।

कर्म और क्वांटम संभावनाएँ: शनि का प्रभाव कर्म के सिद्धांत को दर्शाता है, जो क्वांटम सिद्धांत में ₹संभाव्यता तरंग₹ (Probability Wave) से तुलनीय है। जैसे क्वांटम यांत्रिकी में एक कण की स्थिति निश्चित नहीं होती, वैसे ही शनि के प्रभाव में जातक का भविष्य कर्मों के आधार पर बदलता रहता है।

समय और क्वांटम: शनि को काल (समय) का कारक माना जाता है। क्वांटम सिद्धांत में समय एक सापेक्ष अवधारणा है (जैसे, सामान्य सापेक्षता में समय का वक्रण)। शनिवार को जन्मा जातक समय के प्रति गहरी संवेदनशीलता रखता है और दीर्घकालिक परिणामों पर ध्यान देता है।

चेतना का दार्शनिक आधार: क्वांटम सिद्धांत में चेतना (Observer Effect) का महत्व है, जो वैदिक दर्शन में आत्मा और कर्म की अवधारणा से जोड़ा जा सकता है। शनिवार को जन्मा जातक अपनी चेतना के माध्यम से कर्मों को संतुलित करने की क्षमता रखता है।

दार्शनिक आधार

वैदिक दर्शन में शनि को ₹दंडनायक₹ माना जाता है, जो कर्मों का हिसाब रखता है। उपनिषदों और भगवद्गीता में कर्म और आत्मा की अवधारणा शनि के प्रभाव को समझने में सहायक है। शनिवार को जन्मे जातक में कर्म और फल के बीच संतुलन की गहरी समझ होती है।

कर्म और पुनर्जनन: शनि का प्रभाव जातक को पिछले जन्मों के कर्मों के प्रति जागरूक बनाता है। यह दार्शनिक दृष्टिकोण क्वांटम सिद्धांत के ₹एंटेंगलमेंट₹ से भी जोड़ा जा सकता है, जहाँ एक कण का व्यवहार दूसरे से जुड़ा होता है, ठीक वैसे ही जैसे जातक का वर्तमान पिछले कर्मों से जुड़ा है।

आत्म-चिंतन: शनिवार का दिन ध्यान, योग, और आत्म-मूल्यांकन के लिए उपयुक्त माना जाता है। यह दार्शनिक आधार शनिवार को जन्मे जातक को स्वाभाविक रूप से चिंतनशील बनाता है।

समन्वित विश्लेषण

शनिवार को जन्मा जातक शनि के प्रभाव से गंभीर, मेहनती, और दीर्घकालिक सोच वाला होता है। वैदिक ज्योतिष में शनि का प्रभाव कर्म, धैर्य, और अनुशासन को दर्शाता है, जो सूर्य सिद्धांत की खगोलीय गणनाओं से पुष्ट होता है। क्वांटम सिद्धांत इसकी तुलना अनिश्चितता और संभावनाओं से करता है, जो कर्म और भाग्य के बीच संतुलन को दर्शाता है। दार्शनिक दृष्टिकोण से, शनिवार का दिन और जातक दोनों ही आत्म-चिंतन और कर्म के प्रति जागरूकता का प्रतीक हैं

उपाय:

शनि की शांति के लिए शनिवार को हनुमान चालीसा का पाठ, तिल-तेल का दान, और नीले रंग के वस्त्र पहनना लाभकारी है।ध्यान और योग से मानसिक संतुलन बनाए रखें।दीर्घकालिक लक्ष्यों पर ध्यान दें और जल्दबाजी से बचें।

जन्म के छः प्रकार

रज प्रधान मैथुनिक समाज में अब मात्र रज और वीर्य के मिलन से ही संतान उत्पत्ति की व्यवस्था जीवित है पर हमारे प्राचीन जीवन शैली में पांच अन्य प्रकार से भी संतान उत्पत्ति का विधान प्रचलित था किन्तु ज्ञान के आभाव में धीरे- धीरे यह विलुप्त हो गया किन्तु इसका वर्णन शास्त्रों में अभी भी मिलता है इस प्रकार जन्म के संबंध मे भारतीय शास्त्रों में छः प्रकार के जन्म पद्धति वर्णित हैं-

1. माता पिता के मैथुन व्यवहार से जो रज-वीर्य का मिलन होता है इसे लौकिक जन्म कहा जाता है अथवा ऐसा भी कहा जा सकता है कि मन की वासना के अनुसार जो जन्म मिलता है, यह जनसाधारण का जन्म है।

2. दूसरे प्रकार का जन्म संतकृपा से होता है। जैसे, किसी संत ने आशीर्वाद दे दिया, फल दे दिया और उससे गर्भ रह गया। तप करे, जप करे, दान करे अथवा किसी साधु पुरूष के हाथ का वरदान मिल जाये, उस वरदान के फल से जो बच्चा पैदा हो, वह जनसाधारण के जन्म से कुछ श्रेष्ठ माना जाता है। उदाहरणार्थः भागवत में आता है कि धुन्धुकारी का पिता एक संन्यासी के चरणों में गिरकर संतान प्राप्ति हेतु संन्यासी से फल लाया। वह फल उसने अपनी पत्नी को दिया तो पत्नी ने प्रसूति पीड़ा से आशंकित होकर अपनी बहन से कह दिया कि, ₹तेरे उदर में जो बालक है वह मुझे दे देना। यह फल मैं गाय को खिला देती हूँ और पति को तेरा बच्चा दिखला दूँगी।₹ ऐसा कहकर उसने वह फल गाय को खिला दिया। उसकी बहन के गर्भ से धुन्धुकारी पैदा हुआ तथा संन्यासी द्वारा प्रदत्त फल गाय ने खाया तो गाय के उदर से गौकर्ण पैदा हुआ जो भागवत की कथा के एक मुख्य पात्र हैं।

3. कोई तपस्वी क्रोध में आकर शाप दे दे और गर्भ ठहर जाय यह तीसरे प्रकार का जन्म है।

एक ऋषि तप करते थे। उनके आश्रम के पास कुछ लड़कियाँ गौरव इमली खाने के लिए जाती थीं। लड़कियाँ स्वभाव से ही चंचल होती हैं, अतः उनकी चंचलता के कारण ऋषि की समाधि में विघ्न होता था। एक दिन उन ऋषि ने क्रोध में आकर कहाः ₹खबरदार ! इधर मेरे आश्रम के इलाके में अब यदि कोई लड़की आई तो वह गर्भवती हो जायेगी।₹ ऋषि का वचन तो पत्थर की लकीर होता है। वे यदि ऊपर से ही डाँट लें तो अलग बात है लेकिन भीतर से यदि क्रोध में आकर कुछ कह दें तो चंद्रमा की गति रूक सकती है लेकिन उन ऋषि का वचन नहीं रूक सकता। सच्चे संत का वचन कभी मिथ्या नहीं होता। दूसरे दिन भी रोज की भाँति लड़कियाँ आश्रम के नजदीक गई। उनमें से एक लड़की चुपचाप अन्दर चली गयी और ऋषि की नजर उस पर पड़ी। वह लड़की गर्भवती हो गई क्योंकि उस ऋषि का यही शाप था।

4. दृष्टि से भी जन्म होता है। यह चौथे प्रकार का जन्म है। जैसे वेदव्यासजी ने दृष्टि डाली और रानियाँ व दासी गर्भवती हो गई। जिस रानी ने आँखें बन्द की उससे धृतराष्ट्र पैदा हुए। जो शर्म से पीली हो गई। उसने पांडु को जन्म दिया। एक रानी ने संकोचवश दासी को भेजा। वह दासी संयमी, गुणवान व श्रद्धा-भक्ति से संपन्न थी तो उसकी कोख से विदुर जैसे महापुरूष उत्पन्न हुए।

5. पाँचवें प्रकार का जन्म है कारक पुरूष का जन्म। जब समाज को नई दिशा देने के लिए अलौकिक रीति से कोई जन्म होता है हम कारक पुरूष कहते हैं। जैसे कबीर जी। कबीर जी किसके गर्भ से पैदा हुआ यह पता नहीं। नामदेव का जन्म भी इसी तरह का था।

नामदेव की माँ शादी करते ही विधवा हो गई। पतिसुख उसे मिला ही नहीं। वह मायके आ गई। उसके पिता ने कहाः 'तेरा संसारी पति तो अब इस दुनिया में है नहीं। अब तेरा पति तो वह परमात्मा ही है। तुझे जो चाहिए, वह तू उसी से माँगा कर, उसी का ध्यान-चिंतन किया कर। तेरे माता-पिता, सखा, स्वामी आदि सब कुछ वही हैं।'

उस महिला को एक रात्रि में पतिविहार की इच्छा हो गई और उसने भगवान से प्रार्थना की कि 'हे भगवान ! तुम्हीं मेरे पति हो और आज मैं पति का सुख लेना चाहती हूँ।' ऐसी प्रार्थना करते-करते वह हँसती रोती प्रगाढ़ नींद में चली गई। तब उसे एहसास हुआ कि मैं किसी दिव्य पुरूष के साथ रमण कर रही हूँ। उसके बाद समय पाकर उसने जिस बालक को जन्म दिया, वही आगे चलकर संत नामदेव हुए।

6. जन्म की अंतिम विधि है अवतार। श्रीकृष्ण का जन्म नहीं, अवतार है। अवतार व जन्म में काफी अन्तर होता है। अवतरति इति अवतारः। अर्थात् जो अवतरण करे, ऊपर से नीचे जो आवे उसका नाम अवतार है।

सच पूछो तो तुम्हारा भी कभी अवतार था किन्तु अब नहीं रहा। तुम तो विशुद्ध सच्चिदानंद परमात्मा थे सदियों पहले, और अवतरण भी कर चुके थे लेकिन इस मोहमाया में इतने रम गये कि खुद को जीव मान लिया, देह मान लिया। तुम्हें अपनी खबर नहीं इसलिए तुम अवतार होते हुए भी अवतार नहीं हो।

श्रीकृष्ण तुम जैसे अवतार नहीं हैं, उन्हें तो अपने शुद्ध स्वरूप की पूरी खबर है और श्रीकृष्ण अवतरण कर रहे हैं।

श्रीकृष्ण का अवतार जब होता है तब पूरी गड़बड़ में होता है, पूरी मान्यताओं को छिन्न भिन्न करने के लिये होता है। जब श्रीकृष्ण का अवतरण हुआ तब समाज में भौतिकवाद फैला हुआ था। चारों ओर लग जड़ शरीर को ही पालने-पोसने में लगे थे। धनवानों और सत्तावानों का बोलबाला था। ऐसी स्थिती में श्रीकृष्ण ने आकर धर्म का मार्ग दिखलाया।

घर में किन प्राणियों की धातु प्रतिमा रखी जाती है ?

घर में कई तरह की प्रतिमाएं होती हैं जिसमें से कुछ वास्तु अनुसार होती है और कुछ नहीं। जो नहीं होती है उसके नकारात्मक प्रभाव भी हो सकते हैं।

1. हाथी की मूर्ति : घर में आप हाथी की मूर्ति रख सकते हैं। यह मूर्ति ठोस चांदी की या पीतल की होना चाहिए। हाथी ऐश्वर्य का प्रतीक है। शयनकक्ष में पीतल की प्रतिमा रखने से पति पत्नी के बीच मतभेद खत्म होते हैं और चांदी का हाथी रखने से राहु संबंधी सभी दोष दूर रहो जाते हैं। यह पंचम और द्वादश में बैठे राहु का उपाय है। हाथी की तस्वीर या मूर्ति घर में रखने से सकारात्मक उर्जा के साथ-साथ धन प्राप्ति के स्रोत बनते हैं।

2. हंस की मूर्ति : घर में अतिथि कक्ष में हंस के जोड़ों की मूर्ति स्थापित करें जिससे अपार धन समृद्धि की संभावनाएं बढ़ जाएगी और घर में हमेशा शांति बनी रहेगी। दो हंसों के जगह आप दो बत्तख या दो सारस के जोड़े की मूर्ति भी लगा सकते हैं। इससे दांपत्य जीवन में भी सामंजस्य बना रहता है।

3. कछुआ : घर में कछुआ रखने से उन्नति के साथ ही धन-समृद्धि का योग बनता है। इसे रखने से आयु भी लंबी होने की मान्यता है। पूर्व और उत्तर दिशा कछुए की स्थापना हेतु सर्वोत्तम मानी गई है। ड्राइंग रूम में कछुआ रख सकते हैं किसी पात्र में जल भर कर। कछुआ धातु का होना चाहिए लकड़ी का नहीं।

4. तोते की मूर्ति : वास्तु के अनुसार तोते की मूर्ति या तस्वीर को अध्ययन कक्ष में रखना चाहिए या जहां बच्चे

पढ़ाई करते हैं वहां रखना या लगाना चाहिए। तोता पालना नहीं चाहिए बल्की उसी तस्वीर या प्रतिमा घर में रखने से लाभ होता है। वास्तुशास्त्र के अनुसार उत्तर दिशा में तोते की तस्वीर को लगाने से पढ़ाई में बच्चों की रुचि बढ़ती है, साथ ही उनकी स्मरण क्षमता में भी वृद्धि होती है। तोता प्रेम, वफादारी, लंबी आयु और सौभाग्य का प्रतीक होता है। अगर आप घर में बीमारी, निराशा, दरिद्रता और सुखों का अभाव महसूस कर रहे हैं तो तोते का चित्र या मूर्ति घर में स्थापित करें। पति और पत्नी में प्रेम संबंध स्थापित करने के लिए भी फेंगशुई के अनुसार तोते के जोड़े को स्थापित किया जाता है। तोता 5 तत्वों का संतुलन स्थापित करने में सहायक होता है। तोते के रंग-बिरंगे पंख वास्तव में पृथ्वी, अग्नि, जल, लकड़ी और धातु के प्रतीक हैं। तोता सौभाग्य की वृद्धि करता है।

5. मछली की मूर्ति : कई लोग घर में एक्वेरियम में मछली पालते हैं परंतु उससे ज्यादा उचित होता है मछली की पीतल या चांदी की मूर्ति बनवाकर घर में रखना। वास्तु अनुसार यह मूर्ति घर में खुशहाली और शांति को दृढ करके उन्नति के मार्ग खोलती है। मछली अच्छे स्वास्थ्य, सुख-समृद्धि, धन और शक्ति का प्रतीक है। इस मूर्ति को आप अपने घर की उत्तर-पूर्व या पूर्व दिशा में ही रख सकते हैं।

6. गाय बछड़े की मूर्ति : बहुत से घरों में बछड़े को दूध पिला रही कामधेनु गाय की पीतल की मूर्ति होती है। गाय की मूर्ति रखने से संतान प्राप्ति के साथ ही मानसिक शांति मिलती है। फेंगशुई में भी इसका महत्व बताया गया है। पढ़ाई में एकाग्रता के लिए भी इस मूर्ति को घर में स्थापित करते हैं।

7. ऊंट की मूर्ति : ऊंट की मूर्ति भी घर में रखने का प्रचलन है। ऊंटों के जोड़े की मूर्ति को ड्राइंगरूम या लिविंग रूम में उत्तर-पश्चिम दिशा की ओर रखा जाता है। ऊंट कठिन परिश्रम का प्रतीक है। करियर में उन्नति हेतु या व्यावसायिक प्रतिष्ठानों में ऊंटों की मूर्ति या तस्वीर रखी जाती है। यह मन को स्थिर रखकर सफलता प्रदान करता है। परिवार के लोग मानसिक रूप से सुदृढ़ और शान्ति से रहते हैं।

बहुत से लोगों के घरों में वस्तु के रूप में बैल, भैसा, शेर, चुहे, घोड़े, नर्मदा शिवलिंग, श्वेतार्क गणपति, सिंघम लक्ष्मी शंख, नजर बट्टू, द्वारिका शिला, नागमणि, पारद शिवलिंग, हीरा शंख, गोमती चक्र, श्रीयंत्र, गौरोचन, मछलीघर, शिवलिंग, शालिग्राम, दक्षिणावर्ती शंख, मणि, नग, कौड़ी, समुद्री नमक, हल्दी की गांठ, रुद्राक्ष, हाथाजोड़ी, पारद शिवलिंग आदि सैकड़ों वस्तुएं हो सकती हैं, लेकिन घर में क्या और कहां कौन-सी वस्तु रखें इसके लिए वास्तु के जानकार से सलाह लें।

"स्वयं को जानने का सशक्त उपाय है यह जानना कि हम स्वयं दूसरों से कैसा संबंध बनाते हैं।"

तटस्थ, उदासीन, विरक्त लोग तो बहुत कम होते हैं, ज्यादातर लोग राग-द्वेष का संबंध ही बनाते हैं।

हमारी दृष्टि इसी पर रहती है कि दूसरे का व्यवहार कैसा है, हम यह नहीं देखना चाहते कि खुद हमारा व्यवहार कैसा है?

यह जानने के लिए जिम्मेदारी लेनी पड़ती है।

और यही जिम्मेदारी सकारात्मक, रचनात्मक बनाती है।ऐसे व्यक्ति का स्वरूप कल्याणकारी होता है।वह समाज का संरक्षक, शुभचिंतक साबित होता है।उस पर भरोसा किया जा सकता है।

कहते हैं -भरोसा करने वाले को कभी धोखा नहीं देना चाहिए।'

आदमी किसको धोखा दे सकता है?

वह जब भी धोखा देता है स्वयं को ही धोखा देता है।

संबंध द्वारा स्वज्ञान करना है तो यह देखना होगा कि हम दूसरे से कैसा संबंध बनाते हैं?

दूसरा हमसे राग का संबंध बनाता है लेकिन हम उससे द्वेष का संबंध बनाते हैं तो?

हमें उसे न देखकर स्वयं को देखना चाहिए कि हम द्वेष का संबंध बनाते हैं।

मांबाप बच्चों से प्रेम का, स्नेह का संबंध बनाते हैं।यह उनका स्वज्ञान है(सेल्फ नोलेज)।

बच्चे घृणा, तिरस्कार से भरकर मां-बाप को वृद्धाश्रम में छोड आते हैं।वे मां-बाप को असुविधाजनक मान सकते हैं।

यद्यपि इस दिशा में काफी सुधार किये गये हैं। फिर भी कानून द्वारा संरक्षण एक बाहरी उपाय है।

बच्चों में स्वज्ञान की प्रवृत्ति हो, उन्हें बचपन से ही यह सिखाया जाय कि वे स्वयं क्या करते हैं, क्यों करते हैं तो उन्हें स्वयं का पता चलेगा कि वे स्वार्थी हैं, अश्रद्धालु हैं, उपेक्षा करने वाले हैं।

जो सेवाभावी है वह जानेगा वह सेवा और श्रद्धाभाव से माता-पिता से संबंधित है न कि उपेक्षा और तिरस्कार से।

एक भारत का नागरिक भारत से किस प्रकार संबंधित है इसके लिए वह खुद जिम्मेदार है।

कोई राष्ट्रीय संपत्ति की तोड़फोड़ करता है, नुकसान करता है,

कोई उसकी रक्षा करता है।

इसके लिए वह व्यक्ति जिम्मेदार है।वह जैसा है वह वैसा संबंध बनाता है।

हम खुद सकारात्मक हैं तो सकारात्मक संबंध बनायेंगे,

हम खुद नकारात्मक हैं तो नकारात्मक संबंध बनायेंगे।

एक व्यक्ति हमसे प्रेम करता है तो वह हमसे प्रेम का संबंध बना रहा है, हम उससे घृणा करते हैं तो हम घृणा का संबंध बना रहे हैं।

वह हमसे घृणा करता है तो वह हमसे घृणा का संबंध बना रहा है,

हम प्रेम करते हैं तो हम प्रेम का संबंध बना रहे हैं।

अब अगर कोई ऐसा हो कि वह हमसे घृणा करे और हम नाराजगी से भर जायें तब दूसरा व्यक्ति जिम्मेदार लगेगा लेकिन हम यह भूल जाते हैं कि हम उससे नाराजगी का संबंध बना रहे हैं।

बात स्वज्ञान की हो रही है, परज्ञान की नहीं है।

अर्थात दूसरा क्या करता है उसे महत्व न देकर यह जानना है कि हमसे कौनसी चीजें शुरू होती हैं।

दूसरा घृणा करता है, क्रोध करता है लेकिन हम क्षमा करते हों, दया करते हों तो?

तो यह हमारा स्वयं को जानना है कि हम ऐसे हैं दयालु, क्षमाशील।

स्वयं को देखते से ही पता चलता है, दूसरे को जिम्मेदार मानने से पता नहीं चलता।

स्वयं को जानने से अपनी बागडोर अपने हाथ में आती है। इससे हिम्मत बढ़ती है, आत्मविश्वास -आत्मबल बढता है।

एक व्यक्ति शिकायत करता है कि दूसरा व्यक्ति उसे डराता है, धमकाता है।

वह तथ्य से अनभिज्ञ है।

स्वज्ञान से ही वह वास्तविकता को जान सकेगा।

उसे पता चलेगा कि वह स्वयं कायर है, डरपोक है।

इसमें दूसरा क्या करे?

साहसी को तो कोई डराता नहीं, धमकाता नहीं।और लेने के देने पड जाते हैं।

फिर भी सभी लोग साहसी नहीं होते, डरपोक भी होते हैं।

तो वे क्या करें?

साहसी हो जायें?

इस तरह प्रकृति को बदला जा सके तो क्या चाहिए!

प्रकृति बहुत शक्तिशाली है।

गुणों से बंधा है आदमी।

इसका मतलब है पहले झूठी अहम्मन्यता को छोड़कर आदमी ईमानदारी से अपने डरभय को स्वीकार करे।

चूंकि भय की तमोगुणी वृत्ति, अहंवृत्ति से मिली होती है, तादात्म्य होता है इसलिए उसे स्वीकारने का अर्थ है अहंवृत्ति को स्वीकार करना।

अहंवृत्ति के रूप में स्वयं को स्वीकार कौन करता है, सब अहंबुद्धि से चलते हैं।

अहंबुद्धि अगर अहंवृत्ति को स्वीकार ले तो वह स्वाभिमान का रुप ले लेती है।

मगर वह तो दूसरों से राग-द्वेष करने में लगी रहती है।

दूसरा राग करे तो राग,

दूसरा द्वेष करे तो द्वेष।

कभी इसका उल्टा भी हो सकता है।

इसका पता तभी चल सकता है जब आदमी खुद से शुरू करे, दूसरे से दृष्टि हटाकर खुद पर केंद्रित करे कि पहले मुझसे कैसे चीजें शुरु होती हैं?

कौन डराता है इसके पहले मैं खुद को जानूं कि मैं डरपोक हूं या साहसी?

इसके लिए दूसरा व्यक्ति जिम्मेदार नहीं है।वह ज्यादा से ज्यादा माध्यम का काम कर सकता है।उसे माध्यम बनाकर हम जान सकते हैं कि हम कैसे हैं?

आततायी लोग भारत से हिंसा और भय का संबंध बनाते हैं।

भारत के लिए यह जानना जरूरी है कि स्वयं भारत उनसे कैसा संबंध बनाता है!

आततायी वे जो घोर तमोगुणी हैं। उन्हें समाप्त किया जा सकता है, सुधारा नहीं जा सकता।

भारत का नेतृत्व जिसके हाथ में है वह इसे समझता है तो वह समाप्त करने का कदम उठायेगा।

सुधार तो सामान्य जनता में एक दूसरे को लेकर संभव है जिसमें लोग ईर्ष्या द्वेष से भरे रहते हैं।

कोई हमसे ईर्ष्या द्वेष कर रहा है, हम उससे ईर्ष्या द्वेष कर रहा है। हम उस पर दृष्टि गडाये बैठे हैं कि वह अनुकूल हो तो हम अनुकूल हों।

इस परज्ञान से किसीका भला नहीं होता। चीजें तो स्वज्ञान (सेल्फ नोलेज) से ही सही रुप धारण करती हैं।

दूसरा हमसे प्रेम या घृणा कर रहा है यह महत्वपूर्ण नहीं है,

हम क्या कर रहे हैं यह जानना महत्वपूर्ण है।

हम जैसे हैं वैसा ही करेंगे।

हम कैसे हैं इसे जानना, अपने को जानना है।

इससे हम स्वयं की गहराई में अपने आप उतरते हैं।

दूसरे को छोडते ही हम स्वयं पर आते हैं, स्वयं पर आते ही अंतर्यात्रा शुरु हो जाती है।

कृष्ण वैराग्य और अभ्यास का उपाय बताते हैं।

कहा है-

'पर' थी खस।

स्व मां वस।

आटलुं बस।

दूसरे से खिसको अर्थात अपनी तरफ आओ। अपने में उतरो कि मेरे भीतर चीजें किस तरह शुरु होती हैं, मैं कैसा हूं -क्रोधी, क्षमाशील, प्रेम करने वाला, घृणा करने वाला, अपना माननेवाला, पराया माननेवाला।

हमारी नजर दूसरों पर है तो यह शिकायत हो सकती है कि लोगों में प्रेम नहीं है, लोगों में परायापन है।

जबकि वास्तविकता यह है कि जिसमें अपनापन है उसका ध्यान ही नहीं जाता कि कौन परायापन रखता है, कौन नहीं!

वास्तव में आदमी खुद अपनी आत्मा के प्रति अपने ही परायेपन से परेशान है।

जब कोई अपने पन का अनुभव कराता है तब यह परेशानी दूर होती है।

जो स्वयं को जानने से शुरुआत करता है वह जान लेता है कि खुद उसके भीतर अपनापन नहीं है, परायापन है।

अपना ही परायापन अपने को दुख दे रहा है, दूसरे का नहीं।

यह जानने पर जरुरी नहीं कि चीजें तत्काल सही हो जायें। पहले की आदतें, संस्कार इसमें बाधा डालते हैं। इसलिए कुछ समय लगता है।

एक मित्र पूछते हैं -अहंभाव, कर्ताभाव कैसे दूर हो? कोशिश करने पर भी सफलता नहीं मिल रही है।'

तो इतना आसान है क्या?

लंबे समय तक अभ्यास जारी रखने पर भी समय लग जाता है। फिर जो केवल इच्छा ही करता है कि ऐसा हो जाय, तत्काल हो जाय तो यह उसके हाथ में नहीं है।

कुछ उपाय बताये हैं -कर्मयोग, ज्ञानयोग, भक्तियोग, ध्यानयोग, राजयोग आदी-आदमी को जो ठीक लगे वह अपना ले और साधक का जीवन जीए, संसारी का नहीं तो मुक्ति की संभावना बढ जाती है।

वर्ना यह तथ्य लागू होता रहेगा कि माया को तरना बेहद मुश्किल है।मम माया दुरत्यया।'

इतना आसान हो तरना तो फिर माया, माया नहीं।

लेकिन हम भी ईश्वर का अंश हैं जैसा कि कृष्ण कहते हैं -

ममैवांशो जीवलोके जीवभूत; सनातनः।

यह कोई मामूली बात है क्या?

लेकिन हम स्वयं से तो शुरु करें, हम क्या हैं तभी इसके सकारात्मक परिणाम आ सकते हैं।

जब तक हम परज्ञान से ग्रस्त हैं, दूसरे क्या करते हैं इसी पर नजरें गडाये बैठे हैं तब तक पराधीन हैं और 'पराधीन सपनेहुं सुख नाहीं।'

इसलिए चीजें जब स्वयं से शुरू होती हैं तब अपना और दूसरे का भला होना संभव है।

इसमें स्व की, आत्मा की असीम ऊर्जा का, महान प्रज्ञा का वास है।

दूसरे से शुरु करने वाला इस लाभ से वंचित रहता है।

स्वयं से ही शुरु हो।

जो जैसा है।

अगर वह साहसी हो तब भी खुद से शुरू करे, अगर वह कायर है तब भी खुद से ही शुरू करे

और ध्यान रखे कि ये रजोगुणी तमोगुणी आने-जाने वाली वृत्तियां हैं, स्वयं नहीं।

स्वयं तो असीम है, पूर्ण है।

यदि मैं सहित किसी भी शब्द का प्रयोग नहीं किया जाय तो अखंडता स्वतःसिद्ध है।

ऐसी अखंडता जो इसकी उसकी, तेरी मेरी नहीं है।

वह ईश्वरीय सत्ता है।

देवशयनी एकादशी व्रत आज

सनातन धर्म में आषाढ़ माह के शुक्ल पक्ष की एकादशी को अधिक महत्वपूर्ण माना जाता है। इस दिन भक्त जगत के पालनहार भगवान विष्णु और मां लक्ष्मी की विधिपूर्वक पूजा-अर्चना करते हैं। साथ ही विशेष चीजों का दान करते हैं।

धार्मिक मान्यता के अनुसार, देवशयनी एकादशी से भगवान विष्णु अगले चार महीने तक क्षीर सागर में विश्राम करने चले जाते हैं, जिसकी वजह से इस अवधि के दौरान शुभ और मांगलिक काम नहीं किए जाते हैं।

देवशयनी एकादशी डेट और शुभ मुहूर्त

वैदिक पंचांग के अनुसार, आषाढ़ माह के शुक्ल पक्ष की एकादशी तिथि की शुरुआत 05 जुलाई को शाम 06 बजकर 58 मिनट पर होगी। वहीं, इस तिथि का समापन 06 जुलाई को शाम 09 बजकर 14 मिनट पर होगा। ऐसे में 06 जुलाई को देवशयनी एकादशी व्रत किया जाएगा।

देवशयनी एकादशी व्रत पारण टाइम

एकादशी व्रत का पारण अगले दिन यानी द्वादशी तिथि पर करना चाहिए। इस बार देवशयनी एकादशी व्रत का पारण 07 जुलाई को किया जाएगा। इस दिन व्रत का पारण करने का शुभ मुहूर्त सुबह 05 बजकर 29 मिनट से लेकर 08 बजकर 16 मिनट तक है। इस दौरान किसी भी समय व्रत का पारण किया जा सकता है।

देवशयनी एकादशी के दिन इन बातों का रखें ध्यान

देवशयनी एकादशी के दिन तुलसी के पत्ते नहीं तोड़ने चाहिए। ऐसा माना जाता है कि इस गलती को करने से मां लक्ष्मी नाराज हो सकती हैं।

इसके अलावा एकादशी के दिन काले रंग के कपड़े न पहनें।

घर की सफाई का खास ध्यान रखें।

किसी के बारे में गलत न सोचें।

क्यों सो जाते हैं श्री हरि?

हरि और देव का अर्थ तेज तत्व से है। इस समय में सूर्य, चंद्रमा और प्रकृति का तेज कम होता जाता है। इसलिए कहा जाता है कि देव शयन हो गया है। यानी देव सो गए हैं। तेज तत्व या शुभ शक्तियों के कमजोर होने पर किए गए कार्यों के परिणाम शुभ नहीं होते हैं। कार्यों में बाधा आने की सम्भावना भी होती है। इसलिए देव सोने के बाद शुभ कार्य नहीं किए जाते हैं।

बोले तो अपने मन की बात ही बोले होसबोले

(आलेख : बादल सरोज)

जिन्हें ढंग की बात करने से कन्नी काटनी होती है, वे मन की बात से भटकाने और बहलाने की पतली गली तलाशते हैं। इन दिनों जो कुनबा उठान पर है, वह इस कला में पूरी तरह दक्ष और सिद्धहस्त है। आज की चिंताओं और समस्याओं से ध्यान बंटाने और उनसे बचते-बचाते अपना वह एजेंडा, जिसे देश की जनता अब तक लगातार ठुकराती रही है, आगे बढाने के लिए नयी-नयी तजबीजें ढूँढने और बातें बनाने की मुहिम छेड़ते रहते है।

इस वक़्त विमर्श और आत्मावलोकन होना चाहिए था :

कि पहलगाम में इतना सब कुछ दर्दनाक देखने और भुगतने के बाद भी दुनिया भर में इतना अकेला क्यों पड़ गया है भारत ?

चिन्ता होनी चाहिए थी कि कोई 19 बार सीजफायर कराने का श्रेय लेने के बाद अब ट्रम्प भारत के साथ किस व्यापार समझौते की बात कर रहे हैं, जो बकौल उसके 9 जुलाई तक हो जाने वाला है ?

भारत के उद्योगों, रोजगारों और खेती-किसानी का भट्टा बिठाने वाली इस डील के पीछे मोदी के नम्बर वन अडानी की गिरफ्तारी के लिए अमरीका में निकले वारंट की भूमिका क्या है ?

मंथन होना चाहिए था कि वायु सेना प्रमुख से लेकर सम्पूर्ण सेना के प्रमुख तक पहलगाम के बाद के हाल तथा देश की सुरक्षा के लिए जरूरी साजो सामान की कमी के बारे में जो सार्वजनिक वक्तव्य दे रहे हैं, उन का कारण और समाधान क्या है ?

इन सब ढंग की बातो को गर्दोगुबार में डुबोने के लिए बाकियों के बोलवचनों का कोई ख़ास असर नहीं दिखा, तो अब होसबोले खुद बोले हैं।

दत्तात्रय होसबोले राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरकार्यवाह — हिंदी में बोले तो महासचिव हैं - और इस तरह एकानुचालकवर्ती आरएसएस में दूसरे नबर के नेता हैं। उन्होंने भारत के संविधान की प्रस्तावना से 'धर्मनिरपेक्षता' और 'समाजवाद' दोनों शब्दों को हटाने की मांग की है। समाचार एजेंसी पीटीआई की रिपोर्ट के मुताबिक, इमरजेंसी की 50वीं बरसी पर आयोजित एक कार्यक्रम में बोलते हुए होसबोले ने कहा कि : "बाबा साहब आंबेडकर ने जो संविधान बनाया, उसकी प्रस्तावना में ये शब्द कभी नहीं थे। आपातकाल के दौरान जब मौलिक अधिकार निलंबित कर दिए गए, संसद काम नहीं कर रही थी, न्यायपालिका पंगु हो गई थी, तब ये शब्द जोड़े गए।" उन्होंने कहा कि "बाद में इस मुद्दे पर चर्चा हुई, लेकिन प्रस्तावना से इन्हें हटाने का कोई प्रयास नहीं किया गया। इसलिए प्रस्तावना में इन्हें रहना चाहिए या नहीं, इस पर विचार किया जाना चाहिए।" इसी के साथ उन्होंने प्रस्थापना दी कि "प्रस्तावना शाश्वत है। क्या समाजवाद के विचार भारत के लिए एक विचारधारा के रूप में शाश्वत हैं ?"

ज्यादा प्याज खाने और झुण्ड में शामिल होने के बाद पहले वालों से ज्यादा लोट लगाने के मुहावरे पर अमल करते हुए जगदीप धनखड़ — जो इन दिनों उपराष्ट्रपति भी है — और जोर से बमके और 'द ट्रिब्यून' से बात करते हुए कहा कि : "ये शब्द आपातकाल के दौरान, जो संविधान के लिए सबसे अंधकारमय समय था, उस दौर में जोड़े गए। इन शब्दों को जोड़ने से हमारे अस्तित्व पर संकट खड़ा हुआ। ये शब्द 'नासूर' हैं, जो उथल-पुथल मचाएंगे। धनखड़ यहीं तक नहीं रुके, ठीये तक पहुंचे और बोले कि "यह हमारी सभ्यतागत विरासत का अपमान है, यह सनातन की आत्मा का अपवित्रीकरण है।" बाकी बात उन्होंने होसबोले की कही ही दोहराई।

होसबोले और उनके संघ पर बाद में, धनखड़ महाशय पर पहले, क्योंकि वे देश के दूसरे सबसे बड़े संवैधानिक पद पर विराजे हुए हैं। डेविल का एडवोकेट बनने से पहले बाकायदा वकील भी रहे हैं। उनसे तो कम-से-कम यह उम्मीद की जा सकती है कि वे आका को खुश करने की बजाय उस संविधान के हिसाब से चलेंगे, जिसकी कसम खाकर देश की अनेक पार्टियों में आते-जाते में मंत्री, राज्यपाल और उपराष्ट्रपति की कुर्सियों का बोझ बढ़ाया है। उन्हें तो यह पता ही होगा कि भारत के सुप्रीम कोर्ट ने एक बार नहीं, अनेक बार, बल्कि जब-जब जरूरत आयी, तब-तब हरेक बार कहा है कि धर्मनिरपेक्षता संविधान का मुख्य हिस्सा है और इसे बदला नहीं जा सकता। सबसे पहले 1973 में, केशवानंद भारती मामले में सर्वोच्च न्यायालय के 13 जजों वाली इतिहास की सबसे बड़ी पीठ ने माना था कि प्रस्तावना संविधान का अभिन्न अंग है। इस फैसले में कहा गया कि धर्मनिरपेक्षता संविधान का मूल हिस्सा है, संसद संविधान में संशोधन कर सकती है, लेकिन संविधान के "मूल ढांचे" में बदलाव नहीं कर सकती। 1994 के बोम्मई केस सहित बाद में आये अनेक फैसलों ने यह भी यह स्पष्ट कर दिया कि यह "मूल ढांचा" क्या है।

ज्यादा पीछे न जाएँ, तो अभी आठ महीने भी नहीं हुए, जब सुप्रीम कोर्ट ने भाजपा के फितरती याचिकाबाज सुब्रमण्यम स्वामी सहित संघ की एक भुजा द्वारा प्रस्तुत "समाजवादी" और "धर्मनिरपेक्ष" शब्दों को संविधान की प्रस्तावना से हटाने की याचिकाओं को खारिज करते हुए एक बार फिर धर्मनिरपेक्षता को भारतीय संविधान का एक अभिन्न अंग माना और इसे संविधान के मूल ढांचे का हिस्सा बताया। इतना ही नहीं इस बार सुप्रीम कोर्ट ने यह भी स्पष्ट किया कि धर्मनिरपेक्षता का अर्थ राज्य का सभी धर्मों के साथ समान व्यवहार करना, किसी भी धर्म के साथ भेदभाव नहीं करना होता है। डबल बेंच ने संघी कुप्रचार का खंडन करते हुए यह भी कहा कि "धर्मनिरपेक्षता" शब्द को पश्चिमी अवधारणा के रूप में नहीं देखा जाना चाहिए, बल्कि यह भारतीय संविधान में निहित एक महत्वपूर्ण सिद्धांत है। इसके बाद भी धनखड़ इसे 'नासूर' बताने की हिमाकत किस आधार पर कर रहे हैं ?

होसबोले का दावा तो, जिसे धनखड़ और बाकी कुनबे ने प्रतिध्वनित किया, और भी हास्यास्पद है। वे कहते हैं कि इन दोनों शब्दों को आपातकाल में तब जोड़ा गया, जब लोकतंत्र का गला घोंटा जा रहा था, न्यायपालिका पंगु बना दी गयी थी, वगैरा वगैरा। वे उसी आपातकाल की बात कर रहे हैं, जिसका आरएसएस ने समर्थन किया था। उस वक़्त के संघ प्रमुख ने इसको लेकर इसे लगाने वाली इंदिरा गांधी की शान में कसीदे काढ़े थे, उनकी वक्तृत्व कला की स्तुतियाँ गाई थीं, उनका निर्वाचन अवैध घोषित किये जाने वाले हाईकोर्ट के फैसले को सुप्रीम कोर्ट द्वारा उलट दिए जाने पर उन्हें मुबारकबाद दी थी। यही नहीं, बल्कि इस आपातकाल के महान मौके पर किये जा रहे महान कामों में योगदान देने के राष्ट्रीय कर्तव्य में आरएसएस कार्यकर्ताओं को भाग लेने का अवसर देने के लिए कभी सीधे, तो कभी 'सरकारी संत' विनोबा भावे के मार्फ़त चिट्ठी पर चिट्ठी लिखी थीं।

इस तरह के पाखण्ड — हालांकि ऐसी हरकतों के लिए पाखंड एक छोटा शब्द है — के करतब दिखाने में यह कुनबा सिद्ध और पारंगत है। लोकतंत्र का गला घोंटने और न्यायपालिका की पंगुता और तानाशाही के दौर की बात वह गिरोह कर रहा है, जिसने पिछले 11 सालों में संविधान को ही स्थगित करके रख दिया, न्यायपालिका को लोया कर दिया और तानाशाही का ऐसा अंधेरा ला दिया, जिसके आगे इमरजेंसी एक दिन की अमावस वाली धुंधलाहट महसूस होती है। घोषित इमरजेंसी की 50वीं बरसी पर इस अघोषित इमरजेंसी पर विस्तार से लिखा जा चुका है, इसलिए उसे फिर से दोहराकर स्याही-कागज जाया करने का मतलब नहीं है।

अम्बेडकर की सोच और संविधान की भावना में यह सब न होने का दावा भी इतना ही निराधार और बेतुका है। पहली बात तो यही है कि इस संविधान और उसकी पवित्रता के प्रति संघ में इतना आदर और अनुराग कब से पैदा हो गया ? जब संविधान बन रहा था, तब यही संघ था जिसने आकाश पाताल एक कर मारा था। संविधान को अभारतीय पाश्चात्य धारणा बताया था, इसकी ड्राफ्टिंग कमेटी के अध्यक्ष और बाद में इसके निर्माता के रूप में यशस्वी हुए डॉ. बी आर अम्बेडकर के लिए अभद्र, अशोभनीय और आपराधिक शब्दों के इस्तेमाल की सुनामी ला दी थी। रामलीला मैदान की सभा में यहाँ तक बोल दिया था कि "किसी महार के लिखे संविधान को यह देश कभी नहीं मानेगा।" आज अचानक उन्हीं अम्बेडकर में इतनी श्रद्धा कि उनकी विचारधारा की भी व्याख्या कर रहे हैं ? बिना पढ़े और बिना जाने ही, संविधान सभा की बहसों और उनके सार को सूत्रबद्ध करने वाले संविधान में जाए बिना ही, उसकी शुद्धता खंडित होने की दुहाई दे रहे हैं!! संविधान सभा ने 9 दिसंबर, 1946 से २4 जनवरी, 1950 तक 166 दिनों तक बैठकें कीं, जिसमें संविधान का मसौदा तैयार किया गया. इन बहसों को 1२ खंडों में प्रकाशित किया गया है, और ये संविधान के निर्माण की प्रक्रिया को समझने के लिए महत्वपूर्ण हैं।

इन बहसों में धर्मनिरपेक्षता भी रही, जो नागरिकों के बुनियादी अधिकारों के नाम से लिखी गयी है और जिन्हें बदला नहीं जा सकता। संविधान सभा में तो अल्पसंख्यकों के अधिकारों पर भी बहस हुई, और बाकी बातों के साथ, उनके अलावा यह तक स्पष्ट किया गया था कि अल्पसंख्यकों को उनकी संख्या के अनुसार मान्यता दी जाएगी। विकास की दिशा भी — भले काम उसके प्रतिकूल ही हुए — समतावादी समाज के निर्माण की थी। संविधान के उस हिस्से में इसे दर्ज किया गया है, जिसे डायरेक्टिव प्रिंसिपल्स — नीति निर्देशक तत्व — कहा जा सकता है। इसमें लिखा है कि नीतियाँ इस तरह से बनाई जायेंगी, ताकि संपत्ति का केन्द्रीकरण रोका जा सके, ऐसी बनायी जायेंगी कि न्यूनतम और अधिकतम आमदनी में 1 और 10 से अधिक का अंतर न हो। ऐसे अनेक प्रावधान हैं, जो समाजवादी समाज की ओर जाने, ले जाने की बात करते हैं। इस तरह समाजवाद संविधान सभा और संविधान दोनों की बुनियादी समझदारी का अविभाज्य हिस्सा है।

जहां तक डॉ अम्बेडकर का प्रश्न है, उनके राजनीतिक जीवन का आगाज़ ही समाजवाद — फेबियनवादी समाजवाद — से हुआ था। 15 अगस्त 1936 को बनाई अपनी पार्टी — इंडिपेंडेंट लेबर पार्टी — के घोषणापत्र में उन्होंने आर्थिक और सामाजिक शोषण दोनों से मुक्ति का लक्ष्य ही नहीं लिया था, बल्कि उसका झंडा भी लाल चुना था। वाइसराय की कौंसिल के लेबर मेम्बर के रूप में उनके काम और देश की संसद में बिजली क़ानून का मसौदा रखते और जवाब देते में की गयी उनकी टिप्पणियाँ आदि समाजवाद के प्रति बाबा साहब के स्पष्ट आग्रह का उदाहरण हैं। वे एक काफी अधिक केंद्रीकृत सार्वजनिक अर्थव्यवस्था के पक्षधर थे और इसे वे "राज्य समाजवाद" कहते थे। इस राज्य समाजवाद को भारत के तीव्र औद्योगिकीकरण के लिए महत्वपूर्ण मानते थे।

उनका तर्क था कि निजी पूंजीवाद भारत के औद्योगिकीकरण के कार्य को पूरा नहीं कर सकता — भयानक गैर-बराबरी को पैदा किए बिना इसे पूरा नहीं कर सकता है। धर्मनिरपेक्षता के बारे में उनकी समझ दोहराए जाने की आवश्यकता नहीं — श्रीमान धनखड़ को बस इतना भर याद कर लेना चाहिए कि 'समाजवाद' और 'धर्मनिरपेक्षता' के जिन दोनों शब्दों के जोड़े जाने को वे "सनातन की आत्मा का अपवित्रीकरण" बता रहे हैं, उस सनातन के बारे में बाबा साहब के क्या विचार थे ?

दरअसल उन सहित भारत की संविधान सभा का अपार बहुमत मानता था कि इस कथित सनातन द्वारा भारत की सभ्यता और उसकी विरासत के साथ जो किया गया है, उसे समाजवाद और धर्मनिरपेक्षता के रास्ते पर चलकर ही अनकिया किया जा सकता है।

इस पूरे स्वांग में सबसे जोरदार मजा केंद्रीय कृषि मंत्री शिवराज सिंह ने बांधा, जब 'अधजल गगरी छलके जाए' के अंदाज में वे अपने ही आका के सामने ही आईना लेकर बैठ गए। 'समाजवाद' और 'धर्मनिरपेक्ष' शब्दों के बारे में उन्होंने दावा किया कि "ये भावनाएं भारतीय संस्कृति में पहले से ही मौजूद हैं।" वेद और पुराणों के कई उद्धरण देते हुए कहा कि भारत का मूल भाव सर्वधर्म सद्भाव है।' भारत हमेशा से सभी धर्मों को समान रूप से सम्मान देने वाला देश रहा है। सारी दुनिया एक ही परिवार है, से होते हुए वे भारतीय संस्कृति में समाजवाद तक को ढूंढ लाये!! हालांकि इसी के साथ उन्होंने जिन शब्दों को वे भारतीय संस्कृति का बता रहे हैं, उन्हें ही संविधान से हटाने की मांग भी कर दी। अब भैय्ये जब इतना सब कुछ हैईये, तो फिर इन दो शब्दों से बैर क्या ?

मूल बात इसी में निहित है और वह यह कि निशाने पर सिर्फ दो शब्द नहीं है, पूरा संविधान है। इस बार कोशिश पानी में कंकर मारकर उसकी उछाल देखने भर का नहीं है। यह आर एस एस की स्थापना के शताब्दी वर्ष में झिलमिलाई जाने वाली फुलझड़ियाँ या आतिशबाजी भी नहीं है। यह "भारत दैट इज इंडिया" की बुनियाद में डायनामाइट बिछाने की कोशिश है। धरा के इस हिस्से पर हजारों मातृभाषाओं, सैकड़ों विकसित और संगठित भाषाओं के समृद्ध साहित्य में लाखों किताबें हैं, मगर २6 नवम्बर 1949 को पूरी हुई और २6 जनवरी 1950 से अमल में आई भारत का संविधान नाम की किताब वह अकेली किताब है, जो पूरे देश और हरेक नागरिक की अपनी किताब है। यह वह किताब है, जिसने विभाजित और बंटे भारत को जोड़ कर एक किया और करीब आठ दशकों से अखंड बनाए रखा।

ऐसा न अनायास हुआ, न अपने आप हो गया — इसे इसके पहले के नौ दशकों 1857 से 1947 के वर्षों में चले जनता के महान संघर्षों ने सहज बनाया। इसका महत्व और योगदान वे लोग नहीं समझ सकते, जो इन नब्बे बरसों की लड़ाई में मलिका-ए-बर्तानिया के हुज़ूर में साक्षात दंडवत थे। जिनके डी एन ए में समता, समानता, लोकतंत्र, नागरिक स्वतन्त्रता, यहाँ तक कि धर्मों के बीच सहअस्तित्व की भारतीय परम्परा का विरोध और निषेध दोनों है — उन्हें संविधान से डर लगना ही है। कभी इस, तो कभी उस बहाने इससे मुक्ति पा कर मनुस्मृति के पिशाच की प्राण-प्रतिष्ठा का रास्ता खोजना ही है।

होसबोले की मन की बात इसी तरह की कोशिश है। अब यह सिर्फ विमर्श या जैसा कि उन्होंने कहा है, 'विचार' की बात नहीं है। यह व्यवहार में भी उतारी जा रही है ; इटावा में एक यादव कथावाचक का पादुका पूजन, मूत्र प्रक्षालन आधुनिक शम्बूक अध्याय है। ग्वालियर हाईकोर्ट में अम्बेडकर की मूर्ति को लेकर खड़ी की जा रही वितंडा एकलव्य बनाने की द्रोणाचार्य की उमड़ती आतुरता का ताजा अध्याय है। राष्ट्रीय भाषाओं पर हमले और हजारों वर्ष पुरानी भाषाओं पर एक ताज़ी-ताज़ी बनी भाषा थोपने की जल्दबाजी भी इसी तरह का धतकरम है। पिछली बार भी संविधान और आरक्षण पर आक्रमण बिहार चुनाव के ठीक पहले किया था — इस बार भी वही समय है ; पिछली बार भी बिहार ने मनु की पालकी को वापस लौटा दिया था, उम्मीद है कि इस बार भी ऐसा ही होगा। मगर ये हमले जिस तरह के हैं, उनसे सिर्फ चुनाव नतीजों से पार नहीं पाई जा सकती — संविधान जिन महान संघर्षों की उपज है, उसे बचाने के लिए भी वैसे ही — शायद उससे ज्यादा भी — तीखे और समावेशी संघर्षों की दरकार है।

(लेखक 'लोकजतन' के संपादक और अखिल भारतीय किसान सभा के संयुक्त सचिव है

दिल्ली के समाज कल्याण मंत्री रविंद्र इंद्राज ने जेजे कॉलोनी का दौरा किया

मुख्य संवाददाता/सुषमा रानी

नई दिल्ली। दिल्ली के समाज कल्याण मंत्री रविंद्र इंद्राज सिंह ने शनिवार को उत्तर-पश्चिम दिल्ली स्थित बवाना क्षेत्र की जेजे कॉलोनी का दौरा करते हुए जन सुनवाई की। इस दौरान उन्होंने नशे के खिलाफ लड़ाई में जनसहयोग की अपील की।

मंत्री ने एक बयान में कहा कि नशे की लत किसी भी व्यक्ति को केवल शारीरिक और मानसिक रूप से ही नहीं, बल्कि सामाजिक रूप से भी कमजोर बना देती है। उन्होंने कहा कि नशा न केवल व्यक्ति को परिवार से दूर करता है, बल्कि समाज में उसकी प्रतिष्ठा भी समाप्त कर देता है। अगर कोई व्यक्ति अपनी मेहनत की कमाई नशे में गंवा देगा तो बच्चों की पढ़ाई-लिखाई और भविष्य पर गंभीर असर पड़ेगा।

समाज कल्याण मंत्री ने कहा कि दिल्ली सरकार प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी और मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता के नेतृत्व में राज्य को नशामुक्त बनाने के लिए पूर्ण रूप से प्रतिबद्ध है। नशे की समस्या को जड़ से समाप्त करने के लिए दिल्ली सरकार हर संभव प्रयास कर रही है और विभागीय समन्वय से इस दिशा में निरंतर ठोस कदम उठाए जा रहे हैं।

जन सुनवाई के दौरान स्थानीय निवासियों ने पानी की नई लाइन बिछाने, सड़कों और नालियों के निर्माण एवं नियमित सफाई, पार्कों के सौंदर्यीकरण को लेकर चर्चा की और अपने सुझाव दिए। समाज कल्याण मंत्री ने मौके पर उपस्थित संबंधित विभागों के अधिकारियों को स्पष्ट निर्देश दिए कि बवाना कॉलोनी में जल्द से जल्द बुनियादी सुविधाएं सुनिश्चित की जाएं। उन्होंने कहा कि सड़कों की मरम्मत, नियमित सफाई व्यवस्था और पीने के पानी की उपलब्धता पर प्राथमिकता से काम किया जाए।

मंत्री रविंद्र इंद्राज ने कहा कि सभी झुग्गी-बस्तियों और कॉलोनियों का समग्र विकास सरकार की प्राथमिकता है। जनसहयोग से दिल्ली को विकसित दिल्ली बनाना है।

दो साल से पहले नहीं मिलेगी दिल्ली को यमुना प्रदूषण से मुक्ति, अभी महज नौ नालों का पानी हो पा रहा है ट्रीट

दिल्ली में यमुना नदी सबसे ज्यादा प्रदूषित है जिसका कारण 22 बड़े नाले हैं। इनमें से सिर्फ 9 नालों का पानी एसटीपी में शोधित होता है। सरकार ने समस्या के समाधान के लिए कार्य योजना बनाई है जिसे पूरा होने में दो साल लगेंगे। छोटे नालों को ट्रैप कर शोधित करने की योजना है और दिसंबर 2027 तक यमुना को साफ करने का लक्ष्य है।

नई दिल्ली: दिल्ली में यमुना पल्ला से असगरपुर के बीच मात्र 48 किलोमीटर बहती है, लेकिन यहां सबसे अधिक प्रदूषण होता है।

इसका सबसे बड़ा कारण दिल्ली के २२ बड़े नाले हैं। इन नालों से शहर की गंदगी और औद्योगिक अपशिष्ट यमुना में गिर रहा है।

इनमें से मात्र नौ नालों का पानी सीवेज उपचार संयंत्र (एसटीपी) में लाकर शोधित किया जाता है। अन्य का दूषित पानी सीधे नदी में गिर रहा है।

इसके समाधान के लिए सरकार ने कार्य योजना तैयारी की है, जिसके पूरा होने में दो वर्ष से अधिक का समय लगेगा।

२२ किलोमीटर के हिस्से में गिर रहे २२ बड़े नाले यमुना में गिरने वाले नालों के पानी को ट्रैप कर शोधित करना बड़ी चुनौती है। वजीराबाद से ओखला के बीच लगभग २२ किलोमीटर के हिस्से

में लगभग २२ बड़े नाले नदी में मिल रहे हैं। इनमें सबसे बड़ी नजफगढ़ और शाहदरा ड्रेन है। अधिकारियों का कहना है कि तकनीकी रूप से इन्हें पूरी तरह से ट्रैप नहीं किया जा सकता है, इसलिए इसमें गिरने वाले 18२ छोटे नालों के पानी को शोधित करना होगा।

२6 छोटे नालों को एसटीपी तक लाने की है योजना इन छोटे नालों में से २6 को ट्रैप कर एसटीपी तक लाने और शेष को उसके मुहाने पर शोधित करने की योजना तैयार की गई है। दिल्ली गेट और सेन नर्सिंग होम नाले का पानी भी आंशिक रूप से एसटीपी तक पहुंच रहा है।

भाजपा सरकार का कहना है कि नालों के पानी को एसटीपी तक लाकर उसे शोधित करने के लिए पिछली सरकार द्वारा ठोस कदम नहीं उठाए गए। अब तक सिर्फ नौ नालों का पानी ही एसटीपी तक पहुंच रहा है। वहीं, 14२ मिलियन गैलन प्रतिदिन (एमजीडी) सीवेज भी बिना शोधित किए नदी में जा रहा है।

सिर्फ २7 एसटीपी का ही हो सका अपग्रेडेशन

चालू 37 एसटीपी में से अधिकांश अपनी क्षमता व मानदंड के अनुरूप काम नहीं कर रहे हैं। इस कारण एनजीटी ने वर्ष २015 में इनके अपग्रेडेशन का आदेश दिया था।

अभी तक २7 का ही अपग्रेडेशन हो सका है। पिछली सरकार की लापरवाही के कारण समस्या गंभीर हो गई है। इसके समाधान के लिए कार्ययोजना तैयार कर केंद्र सरकार के सहयोग से काम शुरु किया गया है।

इसके अंतर्गत बगैर सीवेज नेटवर्क से जुड़े नालों का सर्वे सितंबर तक पूरा करने किया जाएगा। उसके बाद डिटेल प्रोजेक्ट रिपोर्ट (डीपीआर) तैयार की जाएगी।

यह प्रयास होगा कि दिसंबर तक काम शुरु कर दो वर्षों में उसे पूरा कर लिया जाए। इस तरह से यमुना में गिरने वाले गंदे पानी को पूरी तरह से रोकने के लिए दिसंबर, २0२7 तक का लक्ष्य रखा गया है।

दिल्ली में पहली बार दिखीं पक्षियों की 21 दुर्लभ प्रजातियां, 160 से अधिक कीं दर्ज

परिवहन विशेष न्यूज

दिल्ली वर्ल्ड एटलस के अनुसार दिल्ली में 160 पक्षी प्रजातियां पाई गई हैं जिनमें से 21 पहली बार देखी गईं जिनमें ग्रेटर फ्लेमिंगो और इंडियन पिट्टा शामिल हैं। वाइल्ड लाइफ एसओएस और दिल्ली वन विभाग के सहयोग से यह परियोजना चलाई जा रही है। इसके तहत 145 ऑब्जर्वेशन जोन बनाए गए हैं ताकि पक्षियों के वितरण पैटर्न को समझा जा सके। मई 2025 तक 500 पक्षियों को बचाया गया।

नई दिल्ली: दिल्ली वर्ल्ड एटलस के तहत राजधानी दिल्ली में 160 पक्षियों की प्रजातियां दर्ज की गई। खास बात ये है कि इनमें से 21 पक्षियों की प्रजाति पहली बार देखी गई है। इनमें गुलाबी व सफेद पंखों वाला Greater Flamingo और Indian pitta भी शामिल हैं, जिन्हें इनकी अनोखी आवाज के लिए जाना जाता है।

राजधानी दिल्ली में देखी गईं इन 160 से अधिक पक्षियों की प्रजाति में लुप्तप्राय और प्रवासी प्रजातियां भी शामिल हैं। इस एटलस का समर फेज वाइल्ड लाइफ एसओएस और दिल्ली वन एवं वन्यजीव विभाग के सहयोग से चलाया जा रहा है।

पहली बार देखी गई 21 प्रजातियां की गई रिपोर्ट

जिन्होंने पहली बार देखी गईं 21 प्रजातियों की रिपोर्ट दी और E-Bird प्लेटफॉर्म पर 600 से अधिक चेकलिस्ट अपलोड की गईं। ये आंकड़ा सर्दियों की तुलना में अधिक है।

ग्रेटर फ्लेमिंगो (फिनिकोप्टरस रोजियस), ब्लैक बिटर्न (इक्सोब्रायचस फ्लाविकोलिस), बोनेलीज ईगल (एक्विला फासियाटा) और इंडियन पिट्टा (पिट्टा ब्रैक्यूरा) पहली बार देखी गईं प्रजातियों में शामिल हैं।

ये प्रजातियां दिल्ली में अपनी प्रवासी प्रकृति या क्षेत्र में दुर्लभता के कारण खास हैं। इनकी मौजूदगीजैव विविधता ट्रैकिंग और संरक्षण के लिए उत्साहजनक संकेत हैं।

अधिकारियों ने बताया कि इस परियोजना के तहत दिल्ली को 145 ऑब्जर्वेशन जोन में बांटा गया है। जिसका उद्देश्य मौसम के अनुसार पक्षियों के वितरण पैटर्न की दीर्घकालिक समझ बनाना है।

भाजपा ने फिर लगाया स्पेशल और तदर्थ कमेटी के गठन में अड़ंगा- अंकुश नारंग

मुख्य संवाददाता/ सुषमा रानी

नई दिल्ली। आम आदमी पार्टी ने बीजेपी के मेयर राजा इकबाल सिंह द्वारा स्पेशल और एडहॉक कमेटियों के चुनाव रद्द करने पर कड़ी आपत्ति जताई है। एमसीडी में नेता प्रतिपक्ष अंकुश नारंग का कहना है कि मेयर को सत्ता का लालच है। वह एमसीडी की सारी शक्तियां अपने पास रखना चाहते हैं। इसलिए उन्होंने स्पेशल और एडहॉक कमेटियों के चुनाव को रद्द कर दिया है। जबकि इन कमेटियों के चुनाव के लिए 3 जुलाई तक नामांकन पत्र दाखिल किया जाना था। उन्होंने कहा कि बीजेपी ने ₹आप₹ सरकार के दौरान भी कमेटियों का गठन नहीं होने दिया और अब जब खुद एमसीडी में है, तब भी इन कमेटियों का गठन नहीं होने देना चाहती है। क्योंकि बीजेपी को दिल्ली की जनता के हित में कोई काम नहीं करना है।

अंकुश नारंग ने शनिवार को कहा कि एमसीडी की स्पेशल और तदर्थ कमेटीयों की 3 जुलाई 2025 को नॉमिनेशन की लास्ट डेट थी, लेकिन 2 जुलाई को मेयर राजा इकबाल सिंह ने पत्र संख्या 358/MS/MCD//2025 के जरिए एक नोटिफिकेशन जारी कर इलेक्शन की नई तारीख आने तक रद्द कर दिए। उन्होंने कहा कि भाजपा ने ना तो कभी एमसीडी के हाउस को चलने दिया और ना ही कभी कमेटियों का गठन होने दिया। जब से वे सत्ता में हैं, उन्होंने नकारात्मक तरीके से अपनी भूमिका निभाई है। ना तो हाउस को चलने दिया, ना दिल्ली की जनता की आवाज को उठने दिया और ना ही कोई फैसला लेने दिया। आज फिर जब स्पेशल कमेटी और एडहॉक कमेटी की अधिसूचना निकली, तो मेयर राजा इकबाल सिंह ने खुद एक पत्र जारी करके इसका गठन रद्द करवा दिया। यह शर्मनाक है कि मेयर ने एक बार फिर कमेटियों के गठन को रोक दिया।

अंकुश नारंग ने कहा कि मेयर राजा इकबाल सिंह सिर्फ सत्ता अपने हाथ में रखना चाहते हैं और दूसरों को कोई अधिकार देना नहीं चाहते। सूत्रों से पता चला है कि भाजपा के अंदर इस बात को लेकर रोष है, क्योंकि राजा इकबाल सिंह सारी शक्तियां अपने पास रखना चाहते हैं। सभी लोग इसका विरोध कर रहे हैं और मांग कर रहे हैं कि कमेटियों का गठन खुला होना चाहिए। साथ ही, राजा इकबाल सिंह को भविष्य में किसी भी कमेटी का चेयरमैन नहीं बनाना चाहिए। इस रोष की वजह से मेयर भारी दबाव में हैं।

अंकुश नारंग ने कहा कि जब स्टैंडिंग कमेटी के सदस्यों का चुनाव होना था, तब हाईकोर्ट ने आदेश दिया कि स्टैंडिंग कमेटी के सदस्यों का चुनाव होना चाहिए। लेकिन फिर भी भाजपा ने इसमें अड़ंगा डाला। इतिहास में पहली बार ऐसा हुआ कि निगम पार्षद पूरी रात बैठे रहे। स्टैंडिंग कमेटी के चुनाव की प्रतीक्षा करते रहे, लेकिन चुनाव नहीं हो सका। ढाई साल तक भाजपा ने स्टैंडिंग कमेटी का गठन नहीं होने दिया। उन्होंने कहा कि जब "आप" विपक्ष में आई, तो उसने सकारात्मक भूमिका निभाई। "आप" ने एक-एक को ढंग से करवाया और स्टैंडिंग कमेटी का गठन करवाया। इसके विपरीत, भाजपा ने हमेशा नकारात्मक तरीके से विपक्ष की भूमिका निभाई। ना तो दिल्ली की जनता के काम होने दिए, ना हाउस को चलने दिया।

अंकुश नारंग ने कहा कि बीजेपी कभी नहीं चाहती कि दिल्ली की जनता के हित में काम हो। वे नहीं चाहते कि कमेटियों का गठन हो। भाजपा में सिर्फ एक व्यक्ति, मेयर राजा इकबाल सिंह, सारी शक्तियां अपने पास रखना चाहते हैं। यह दिल्ली की जनता के साथ अन्याय है। जब मेयर का चुनाव होना था, तब भी भाजपा ने इसे रोकने की कोशिश की। भाजपा ने माइक तोड़े। खुद सीएम रेखा गुप्ता उस वक्त निगम पार्षद थी। और पार्षद के रूप में रेखा गुप्ता खुद माइक तोड़ती हुई नजर आईं और उन्होंने कहा कि मेयर का चुनाव नहीं होगा। इस तरह उन्होंने दिल्ली के मेयर का चुनाव नहीं होने दिया। खूब हंगामा किया।

यूपीआईटीएस 2025 रोडशो का आयोजन नई दिल्ली में, उत्तर प्रदेश सरकार का निर्यात पर केंद्रित भव्य व्यापार शो का तीसरा संस्करण

मुख्य संवाददाता

नई दिल्ली, उत्तर प्रदेश को वैश्विक व्यापार मानचित्र पर मजबूत स्थान दिलाने के उद्देश्य से, उत्तर प्रदेश सरकार ने इंडिया एक्सपोज़ीशन मार्ट लिमिटेड (IEML) के सहयोग से, यूपी इंटरनेशनल ट्रेड शो (UPITS) 2025 के तीसरे संस्करण के लिए एक प्रभावशाली रोडशो का आयोजन शुक्रवार, 4 जुलाई 2025 को होटल द रॉयल प्लाज़ा, अशोक रोड, कनॉट प्लेस, नई दिल्ली में किया। यह आयोजन 27 जून 2025 को लखनऊ में माननीय मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ द्वारा आयोजित कर्टन रेज़र कार्यक्रम के बाद संपन्न हुआ।

यह रोडशो आगामी यूपीआईटीएस 2025 की तैयारी की दिशा में एक महत्वपूर्ण पड़ाव रहा, जो 25 से 29 सितम्बर 2025 के बीच इंडिया एक्सपो सेंटर एंड मार्ट, ग्रेटर नोएडा में आयोजित किया जाएगा। 'Ultimate Sourcing Begins Here' थीम पर आधारित यह आयोजन उत्तर प्रदेश के प्रमुख क्षेत्रों जैसे एमएसएमई, इलेक्ट्रॉनिक्स, आईटी, हथकरघा और वस्त्र, ओडीओपी, खादी एवं ग्रामोद्योग, रेशम उद्योग, खाद्य प्रसंस्करण, ऑटोमोबाइल, ईवी, नवीकरणीय ऊर्जा और पारंपरिक हस्तशिल्प के निर्यात को गति देने पर केंद्रित है।

दिल्ली रोडशो की अध्यक्षता उत्तर प्रदेश सरकार के माननीय कैबिनेट मंत्री राकेश सचान ने की, जो एमएसएमई, खादी एवं ग्रामोद्योग, रेशम, हथकरघा एवं वस्त्र विभाग के प्रभारी हैं। उनके साथ मंच पर उपस्थित थे आलोक कुमार, प्रमुख सचिव, एमएसएमई एवं निर्यात प्रोत्साहन विभाग, उत्तर प्रदेश सरकार; डॉ. राकेश कुमार, अध्यक्ष, इंडिया एक्सपोजीशन मार्ट लिमिटेड; डॉ. अजय सहाय, महानिदेशक एवं सीईओ, फेडरेशन ऑफ इंडियन एक्सपोर्ट ऑर्गनाइजेशंस (FIEO); डॉ. नीरज खन्ना, अध्यक्ष, हस्तशिल्प निर्यात संवर्धन परिषद (EPCH); शैलेन्द्र भाटिया, ओएसडी, यमुना एक्सप्रेसवे औद्योगिक विकास प्राधिकरण तथा अन्य वरिष्ठ अधिकारीगण। इस आयोजन में ऑस्ट्रिया, कनाडा, वियतनाम, सिंगापुर और नॉर्वे सहित कई देशों के दूतावास प्रतिनिधियों, व्यापार संघों, खरीद एवं आपूर्ति सलाहकारों, क्षेत्रीय उद्योग विशेषज्ञों और उत्तर भारत भर के विभिन्न हितधारकों ने

सक्रिय भागीदारी की।

राकेश सचान ने अपने संबोधन में कहा, "उत्तर प्रदेश आज विकास, उद्यमिता और वैश्विक संपर्क की दिशा में तेजी से आगे बढ़ते हुए एक संभावनाओं के केंद्र के रूप में उभर रहा है। 25 से 29 सितम्बर 2025 तक ग्रेटर नोएडा के इंडिया एक्सपो सेंटर एंड मार्ट में आयोजित होने वाला यूपी इंटरनेशनल ट्रेड शो — यूपीआईटीएस 2025 — इस प्रगति का सशक्त प्रमाण है। यह केवल उत्पादों की प्रदर्शनी नहीं है, बल्कि उत्तर प्रदेश के उद्योगों, कारीगरों, एमएसएमई इकाइयों और उद्यमियों की शक्ति को वैश्विक मंच पर प्रस्तुत करने का अवसर है। हथकरघा और ओडीओपी से लेकर इलेक्ट्रॉनिक्स, खाद्य प्रसंस्करण और नवीकरणीय ऊर्जा तक, यूपीआईटीएस परंपरा और आधुनिकता का अद्वितीय संगम प्रस्तुत करता है।"

डॉ. राकेश कुमार, अध्यक्ष, इंडिया एक्सपोज़ीशन मार्ट लिमिटेड और यूपीआईटीएस के सह-आयोजक ने कहा कि "यूपीआईटीएस में उत्तर प्रदेश के कई प्रमुख क्षेत्रों और उत्पादों को विशेष रूप से उभारा जाएगा जो वैश्विक स्तर पर उत्कृष्टता प्राप्त कर रहे हैं। यह एक आदर्श प्लेटफॉर्म है, जहां एक ही स्थान पर राज्य के सभी उत्पाद और सेवाएं उपलब्ध होंगी।"

डॉ. अजय सहाय, महानिदेशक एवं सीईओ, फेडरेशन ऑफ इंडियन एक्सपोर्ट ऑर्गेनाइजेशंस (FIEO) ने कहा कि "राज्य सरकार के सहयोग से विदेशी खरीदारों के लिए विशेष कार्यक्रम और वित्तीय सहायता की व्यवस्था की गई है। उत्तर प्रदेश की विनिर्माण और रचनात्मक शक्ति को एक मंच पर लाकर, यूपीआईटीएस घरेलू और अंतरराष्ट्रीय खरीदारों के लिए एक अद्वितीय सोर्सिंग डेस्टिनेशन बन गया है।"

रोडशो में यूपीआईटीएस 2025 की विशेषताओं की झलक भी प्रस्तुत की गई — जैसे विस्तृत प्रदर्शनी वर्ग, केंद्रित बी2बी बैठकें, खरीदार मंडल, ओडीओपी प्रदर्शनियां, और निर्यात प्रोत्साहन क्षेत्र। यह पहल उद्योग जगत की भागीदारी को आकर्षित करने और देश-विदेश के खरीदारों की भागीदारी सुनिश्चित करने की दिशा में एक कदम है।

यह रोडशो एक राष्ट्रव्यापी श्रृंखला का हिस्सा है, जिसे यूपीआईटीएस 2025 के प्रचार-प्रसार और भागीदारी को बढ़ाने के लिए आयोजित किया जा रहा है। दिल्ली संस्करण विशेष रूप से राजधानी क्षेत्र के सोर्सिंग सलाहकारों, संस्थागत खरीदारों, निर्यातकों और व्यापारिक संगठनों से जुड़ाव मजबूत करने के उद्देश्य से आयोजित किया गया। इस प्रचार अभियान की श्रृंखला में इसके पश्चात हैदराबाद, बेंगलुरु, मुंबई और अहमदाबाद में और भी रोडशो आयोजित किए जाएंगे।

पूर्व के संस्करणों की अभूतपूर्व सफलता के बाद, जिसमें लाखों आगंतुक और खरीदार आए और हजारों करोड़ के व्यापारिक प्रस्ताव प्राप्त हुए, यूपीआईटीएस 2025 को और अधिक व्यापक, प्रभावी और दूरगामी माना जा रहा है। यह शो राज्य के व्यापार, परंपरा और परिवर्तन की दिशा में एक ऐतिहासिक पहल है।

चंद मिनटों की बारिश ने खोल दी पोल नगर निगम सोनीपत के खोखले दावों की सड़क सुरक्षा संगठन सोनीपत द्वारा पिछले कई दिनों से जल भराव वाले स्थानों की जालियों की सफ़ाई हेतु आवाज उठाई जा रही थी लेकिन निगम द्वारा गंभीरता पूर्वक इंतजाम नहीं किया गया।

प्रभु भक्ति के बिना मानव जीवन अधूरा है : आचार्य मृदुल कृष्ण गोस्वामी महाराज

(डॉ. गोपाल चतुर्वेदी)

वृन्दावन। छटीकरा रोड़ स्थित मृदुल वृन्दावन धाम में द भागवत मिशन फाउंडेशन एवं भागवत परिवार समिति (रजि.) दिलशाद गार्डन,दिल्ली के संयुक्त तत्वावधान में चल रहे अष्टदिवसीय श्रीमद्भागवत कथा एवं श्रीगुरू पूर्णिमा महोत्सव के अंतर्गत तीसरे दिन श्रीहरिदासी वैष्णव संप्रदायाचार्य विश्वविख्यात भागवताचार्य आचार्य गोस्वामी मृदुल कृष्ण महाराज ने देश विदेश से आए भक्तों-श्रद्धालुओं को भक्ति की महिमा बताते हुए कहा कि प्रभु भक्ति के बिना मानव जीवन अधूरा है।प्रभु की भक्ति अमूर्त है, इसे केवल अनुभव किया जा सकता है।हममें से ज़्यादातर लोग भगवान से प्रार्थना करते हैं कि वे हमारी कुछ इच्छाएँ पूरी करें। क्या इसे भक्ति कहा जा सकता है?

सच्ची भक्ति बिना किसी माँग के भगवान की पूजा करने में है। जैसे एक माँ अपने बच्चे को बिना माँगे खिलाती है, वैसे ही भगवान जो माँ से भी बढ़कर है, हमें वह देगा जिसकी हमें ज़रूरत है। अगर भगवान हमें वह नहीं देते जिसकी हमें चाहत है, तो हमें समझना चाहिए कि हमें इसकी ज़रूरत नहीं है। अगर हम यह समझ जाएँ तो हम मुसीबतों से बाहर

निकल जाएँगे और हमारे जीवन से दुख सदैव के लिए दूर हो जाएगा।

श्रद्धेय गोस्वामी मृदुल कृष्ण महाराज ने कहा कि ध्रुव जैसा प्रभु भक्त होना अत्यंत कठिन है। उन्होंने अपनी पांच वर्ष की आयु में ही कठोर भगवद साधना करके परमात्मा को प्राप्त किया। इसीलिए हमें भी अपने बच्चों को प्रारंभ से ही प्रभु भक्ति की ओर अग्रसर करना चाहिए।जिससे उनके हृदय में बचपन से ही धर्म का प्रवेश हो सके।तभी हमारे बच्चे संस्कारवान और कर्तव्यशील बनेंगे।

इससे पूर्व महोत्सव के मुख्य यजमान श्रीमती हिना-विकास अग्रवाल, श्रीमती श्याम लता-कुसुम पाल शर्मा, श्रीमती अरुणा शर्मा आदि ने श्रीमद्भागवत महापुराण और व्यासपीठ का पूजन अर्चन किया।

इस अवसर पर प्रख्यात साहित्यकार डॉ. गोपाल चतुर्वेदी, प्रमुख समाजसेवी दासबिहारी अग्रवाल, आचार्य किशोर कुमार शर्मा, डॉ. राधाकांत शर्मा, आदि के अलावा विभिन्न क्षेत्रों के तमाम गणमान्य व्यक्ति उपस्थित रहे।

पंच दिवसीय श्रीहनुमंत चरित्र कथा का आयोजन 06 जुलाई से

(डॉ. गोपाल चतुर्वेदी)

वृन्दावन। रुक्मणी विहार स्थित होटल हाईड अवे स्टूडियो में मारवाड़ी सेवा परिवार, सिलीगुड़ी के द्वारा पंच दिवसीय श्रीहनुमंत चरित्र कथा का आयोजन 06 से 10 जुलाई 2025 पर्यन्त अत्यन्त श्रद्धा एवं धूमधाम के साथ किया जाएगा।

जानकारी देते हुए डॉ. गोपाल चतुर्वेदी ने बताया है कि कार्यक्रम के अंतर्गत नित्य प्रातः 09:30 से दोपहर 01 बजे तक श्रीवृन्दावन बालाजी देवस्थान के संस्थापक-अध्यक्ष पण्डित अनुराग कृष्ण पाठक अपनी सुमधुर वाणी के द्वारा श्रीहनुमंत चरित्र कथा का रसपान कराएंगे।

मारवाड़ी सेवा परिवार, सिलीगुड़ी के अध्यक्ष अशोक कुमार माडदा, सचिव छगन लाल जैन, कोषाध्यक्ष प्रयाग चंद अग्रवाल एवं संयोजक राजेश झंवर ने सभी से इस आयोजन में उपस्थित होने का आग्रह किया है।

मनुष्यों की सभी विपदाओं का नाश करती है श्रीमद्भागवत कथा : मां ध्यान मूर्ति गिरि

(डॉ. गोपाल चतुर्वेदी)

वृन्दावन। गौशाला नगर स्थित मां ध्यानमूर्ति सत्संग सेवा संस्थान में गुरु पूर्णिमा के पावन उपलक्ष्य में चल रही सप्तदिवसीय श्रीमद्भागवत कथा के दूसरे दिन व्यास पीठाधीन महामंडलेश्वर मां ध्यान मूर्ति गिरि महाराज ने देश-विदेश से आए सैकड़ों भक्तों-श्रद्धालुओं को श्रीमद्भागवत महापुराण की कथा श्रवण कराते हुए कहा कि मनुष्यों के जब कई-कई जन्मों के पुण्यों का उदय होता है, तब ही उसे हरि कथा व सत्संग आदि श्रवण करने का सौभाग्य प्राप्त होता है।श्रीमद्भागवत महापुराण की अमृतमयी कथा श्रवण करने से मनुष्यों के ऊपर आने वाली सभी विपदाओं का नाश हो जाता है। उन्होंने कहा कि महर्षि वेदव्यासजी द्वारा रचित श्रीमद्भागवत महापुराण की कथा सभी प्रकार के अरिष्टों को दूर करने वाली है।इसका वाचन, श्रवण एवं अध्ययन तीनों ही मंगलकारी एवं कल्याणकारी है।इसमें समस्त धर्म ग्रंथों का सार समाहित है।इसीलिए इसे पंचम वेद कहा गया है।

महोत्सव में पधारे प्रख्यात साहित्यकार डॉ. गोपाल चतुर्वेदी ने कहा कि मां ध्यानमूर्ति सत्संग सेवा संस्थान धर्म और अध्यात्म के अलावा समाज सेवा के क्षेत्र में भी पूर्ण समर्पण के साथ विभिन्न लोक कल्याणकारी सेवा कार्य कर रहा है। जिनमें अन्न क्षेत्र,वृक्षारोपण, संतो और निर्धनों की निःशुल्क चिकित्सा आदि प्रमुख हैं। इन सभी सेवा कार्यों की जितनी भी प्रशंसा की जाए, वो कम है।

इससे पूर्व यजमान परिवार द्वारा श्रीमद्भागवत ग्रंथ और व्यासपीठ का पूजन-अर्चन किया गया।साथ ही उनकी आरती की गई। सायं काल मां ध्यानमूर्ति सत्संग सेवा संस्थान के सचिव डॉ. हरिओम शास्त्री के द्वारा सुंदरकांड का संगीतमय सामूहिक पाठ किया गया।

इस अवसर पर प्रख्यात साहित्यकार डॉ. गोपाल चतुर्वेदी,

सुर्ज्ञान मोदी, राजकुमार अग्रवाल, कृष्ण कुमार बंसल, राजेंद्र मोदी, दीनू पण्डित, चेतराम, महेन्द्र अग्रवाल, सागर शर्मा, देवनारायण शुक्ला, राजकुमार गौतम, प्रमुख समाजसेवी विष्णु शर्मा, डॉ. राधाकांत शर्मा, राधिका रमन शरण मोदी आदि के अलावा विभिन्न क्षेत्रों के तमाम गणमान्य व्यक्ति उपस्थित रहे।संचालन डॉक्टर हरिओम शास्त्री ने किया। साथ ही सभी का स्वागत किया।

नर्सिंग न केवल पेशा, बल्कि सेवा, समर्पण व करुणा का प्रतीक है: एएसपी करियारे
नर्सिंग छात्रों का प्रमाण पत्र वितरण समारोह, भावुक हुआ पल

सुनील चिंचोलकर

बिलासपुर, छत्तीसगढ़। विश्वास सोशल वैलफेयर सोसायटी (उपासना एजुकेशन ट्रस्ट) में नर्सिंग के बच्चों का प्रमाण पत्र वितरण समारोह स्थानीय जेपी वर्मा कॉलेज के सभागार आयोजित किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि एडिशनल एसपी ट्रेफिक रामगोपाल करियारे थे। अध्यक्षता जेपी वर्मा कॉलेज के प्रिंसिपल एसएल निराला ने की।

कार्यक्रम का शुभारंभ दीप प्रज्वलन से हुआ। एएसपी करियारे ने कहा, ₹नर्सिंग न केवल एक पेशा है, बल्कि यह सेवा, समर्पण और करुणा का प्रतीक है। हर आपातकाल परिस्थितियों में वो घर परिवार भूलकर अपना सर्वश्रेष्ठ देने के प्रयास करती हैं। आने वाले समय में स्वास्थ्य क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान देंगे।₹ करियारे ने नर्सिंग छात्रों की प्रशंसा करते हुए कहा, ₹आप सभी ने कठिन परिश्रम और अनुशासन के साथ अपना प्रशिक्षण पूरा किया है। अब आप समाज की सेवा के लिए तैयार हैं।₹ उन्होंने सफल विद्यार्थियों को प्रमाण पत्र वितरित किए और उनके उज्जवल भविष्य की कामना की। जमुना प्रसाद वर्मा कॉलेज के प्रिंसिपल एसएल निराला ने भी छात्र छात्राओं को प्रोत्साहित किया।

कार्यक्रम में जनरल ड्यूटी असिस्टेंट और मेडिकल लैब टेक्नीशियन के 3 बैच के बच्चों को प्रमाण पत्र वितरित किया गया। कार्यक्रम सियान चेतना अभियान पर आधारित था। संस्था की छात्राओं के द्वारा एक नाटक भी प्रस्तुत किया गया। जो लोगों के द्वारा अपने घर के वृद्धजन को वृद्धाश्रम में रखने या घर से बाहर निकाल देने के विषय में था। एक छत्तीसगढ़ी नृत्य की भी प्रस्तुति दी गई। कार्यक्रम में ट्रेफिक

मास्टर ट्रेनर एसआई उमाशंकर पांडे, सिम्स की रिटायर्ड स्टाफ नर्स अंजली हक भी शामिल थी। सभी ने प्रमाण पत्र प्राप्त करने वाले वाले विद्यार्थियों का मार्गदर्शन किया तथा उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की।

कार्यक्रम में संस्था के अध्यक्ष मिंटू अरोरा, उपाध्यक्ष मानस्यु अरोरा, सचिव संध्या चंद्रसेन,मनीषा सैमुएल,मानसी सिंग, ओमकार बघेल,प्रकाश सोनछत्र,अभिषेक जोशी,दीप जोशी एवं संस्था के सभी छात्र छात्राएं उपस्थित रहीं।

छात्रों के लिए यह अत्यंत गर्व का क्षण था। कुछ छात्रों की आँखों में खुशी के आँसू भी देखे गए। कार्यक्रम में सांस्कृतिक प्रस्तुतियाँ भी दी गईं, जिससे वातावरण उत्साहपूर्ण हो गया।

भारत ग्लोबल साउथ की अग्रणी आवाज़ के रूप में स्थापित होकर पश्चिम नेतृत्व वाली वैश्विक व्यवस्था क़ा विकल्प बनने की ओर ?

क्या भारत ग्लोबल साउथ का नेतृत्व करने की और बढ़ा? 1 वर्ष में ग्लोबल साउथ के 12 से अधिक दौरों का पैटर्न, एक नए पश्चिमोत्तर विश्व व्यवस्था का नेतृत्व करने की ओर-

एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानी गोंदिया महाराष्ट्र

वैश्विक स्तरपर आज भारत की रेपुटेशन ऐसी हो गई है कि, भारत जो बोलता या करता है, उसे दुनियाँ गंभीरता पूर्वक ध्यान देता हुआ सुनती है, जिसका सटीक उदाहरण भारतीय पीएम की 2 से 9 जुलाई 2025 तक 8 दिवसीय पांच देशों की यात्रा जिसमें घाना व त्रिनिदाद टोबैको की यात्रा पूरी कर अर्जेंटीना, ब्राज़ील व नामीबिया की ओर बढ़ रहे हैं, जिसमें ब्राजील के रियो डी जेनेरियो में 17 वें ब्रिक्स लीडर्स समिट 5 से 8 जुलाई 2025 तक भाग लेंगे जिसमें वैश्विक मुद्दों पर विचार साझा कर आतंकवाद पर अपना पक्ष दुनियाँ के सामने रखने का सबसे बढ़िया मौका है, जिसपर बड़े-बड़े विकसित देशों की नज़रें लगी हुई है। मैं एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानीं गोंदिया महाराष्ट्र, यह मानता हूं के जिस तेजी के साथ ग्लोबल साउथ के छोटे-छोटे देशों में जाकर जहां मूल भारतीयों की संख्या अधिक है उन देशों के नेताओं से रणनीतिक स्वास्थ्य प्रौद्योगिकी सुरक्षाआर्टिफिशियल इंटेलिजेंस व जलवायु परिवर्तन सहित अनेकों रणनीतिक साझेदारी समझौते कर रहे हैं, जिससे पहला हमें हमारे विज़न 2047 में दूरगामी सकारात्मक परिणाम निकलने की संभावना है, दूसरा ग्लोबल साउथ में भारत का विश्वास बढ़कर नेतृत्व के लिए विश्वास में तब्दील होकर रहेगा, तब भारत ग्लोबल साउथ का नेतृत्व आवाज़ बनेगा इसलिए ही भारत उन देशों के साथ अपना जुड़ाव गहरा कर रहा है जो अक्सर वैश्विक निर्णय लेने में अपना कम प्रतिनिधित्व महसूस करते हैं। दिनांक 5 जुलाई 2025 को अर्ली मॉर्निंग तक हमारे पीएम के त्रिनिदाद टोबैको दौरे जिसमें करीब 40 परसेंट मूल भारतीय निवास करते हैं तथा वहां के प्रधानमंत्री और राष्ट्रपति भी मूल भारतीय ही हैं,उनका टीवी चैनलों के माध्यम से मैंने अध्यन किया और इसके पूर्व घाना यात्रा पर भी बारीकी से पैनी नजर रख, विशेषण इस आर्टिकल के माध्यम से कर रहे हैं।चूँकि, भारत ग्लोबल साउथ का नेतृत्व करने की और बड़ा 1 वर्ष में ग्लोबल साउथ के 12 से अधिक दौरों का पैटर्न एक नए पश्चिमोंत्तर विश्व व्यवस्था का नेतृत्व करने की और है, इसलिए आज हम मीडिया में उपलब्ध जानकारी के सहयोग से इस आर्टिकल के माध्यम से चर्चा करेंगे भारत ग्लोबल साउथ की अग्रणी आवाज के रूप में स्थापित होकर पश्चिमोंत्तर नेतृत्व वाली वैश्विक व्यवस्था का विकल्प बनेगा?

साथियों बात अगर हम भारतीय पीएम की 2 से 9 जुलाई 2025 तक 5 देश की यात्रा की करें तो,घाना के साथ भारत के ऐतिहासिक संबंधों को और प्रगाढ़ करने तथा निवेश, ऊर्जा, स्वास्थ्य, सुरक्षा, क्षमता निर्माण और विकास साझेदारी के क्षेत्रों में नए अवसर खोलने की आशा है। मोदी ने कहा, सहयोगी लोकतांत्रिक देशों के रूप में घाना की संसद में संबोधन मेरे लिए सम्मान की बात होगी। त्रिनिदाद-टोबैगो से ऐतिहासिक संबंध प्रधानमंत्री ने कहा, त्रिनिदाद और टोबैगो के साथ भारत का ऐतिहासिक संबंध है। मैं राष्ट्रपति क्रिस्टीन कार्ला कंगालू से मुलाकात करूंगा। मैं प्रधानमंत्री कमला प्रसाद- बिसेसर से भी मिलूंगा, जिन्होंने हाल ही में दूसरे कार्यकाल के लिए पदभार ग्रहण किया है। अर्जेंटीना में 57 वर्षों में पहले भारतीय पीएम प्रधानमंत्री ने कहा, अर्जेंटीना में 57 वर्षों में किसी भारतीय प्रधानमंत्री की पहली द्विपक्षीय यात्रा होगी। अर्जेंटीना लैटिन अमेरिका में एक प्रमुख आर्थिक भागीदार और जी-20 संगठन में एक करीबी सहयोगी है। मैं राष्ट्रपति जेवियर माइली के साथ मुलाकात के लिए उत्सुक हूं, जिनसे मुझे पिछले वर्ष मिलने का सौभाग्य भी मिला था। हम कृषि, दुर्लभ खनिज, ऊर्जा, व्यापार, पर्यटन, प्रौद्योगिकी और निवेश के क्षेत्रों में सहयोग को आगे बढ़ाने पर ध्यान केंद्रित करेंगे। रियो में ब्रिक्स में लेंगे हिस्सा पीएम ने कहा कि वह 6-7 जुलाई को रियो डी जनेरियो में ब्रिक्स शिखर सम्मेलन में भाग लेंगे। एक संस्थापक सदस्य के रूप में भारत उभरती अर्थव्यवस्थाओं के बीच सहयोग के लिए एक महत्वपूर्ण मंच के रूप में ब्रिक्स के लिए प्रतिबद्ध है। हम साथ मिलकर अधिक शांतिपूर्ण, न्यायसंगत,निष्पक्ष, लोकतांत्रिक और संतुलित बहुध्रुवीय विश्व व्यवस्था के लिए प्रयास करते हैं। शिखर सम्मेलन के अवसर पर कई वैश्विक नेताओं से भी भेंट होगी। इसके बाद द्विपक्षीय यात्रा के लिए वे ब्राजीलिया जाएंगे, जहां राष्ट्रपति लुइज इनासिओ लूला दा सिल्वा के साथ ग्लोबल साउथ की प्राथमिकताओं को आगे बढ़ाने पर बात होगी। नामीबिया एक विश्वसनीय भागीदार प्रधानमंत्री ने कहा, नामीबिया एक विश्वसनीय भागीदार देश है, जिसके साथ हम उपनिवेशवाद के खिलाफ संघर्ष का एक साझा इतिहास साझा करते हैं। वे राष्ट्रपति डॉ. नेटुम्बो नंदी-नदैतवाह से मिलने के लिए उत्सुक हैं तथा नामीबि याई संसद के संयुक्त सत्र को भी संबोधित करना भी उनके लिए सौभाग्य की बात होगी।

साथियों बात अगर हम ग्लोबल साउथ व ग्लोबल नॉर्थ को समझने की करें तो, क्या है ग्लोबल साउथ?-आर्थिक और सामाजिक विकास के आधार पर दुनिया को दो हिस्सों में बांटा गया है. एक है- ग्लोबल नॉर्थ और दूसरा- ग्लोबल साउथ (1) ग्लोबल नॉर्थ में अमेरिका, जापान, कोरिया, यूरोपीय देश जैसे दुनिया के विकसित और समृद्ध देश शामिल हैं (2)जबकि, ग्लोबल साउथ में

आर्थिक और सामाजिक विकास के आधार पर कम विकसित या विकासशील देश हैं. इसमें लैटिन अमेरिका, अफ्रीका,एशिया और ओशिनिया के देश हैं।ग्लोबल साउथ में कितने देश हैं? (1)ग्लोबल साउथ में लगभग 100 देश आते हैं।ग्लोबल साउथ और ग्लोबल नॉर्थ में क्या अंतर? (1) ग्लोबल साउथ और ग्लोबल नॉर्थ का इस्तेमाल सामाजिक-आर्थिक और राजनीतिक आधार पर दुनिया के देशों को बंटवारा करने के लिए किया जाता है।(2) ग्लोबल साउथ एक ऐसा शब्द है जिसका इस्तेमाल अक्सर लैटिन अमेरिका, एशिया, अफ्रीका और ओशिनिया के देशों की पहचान करने के लिए किया जाता है (3) ग्लोबल साउथ में विकासशील या कम विकसित देश हैं, जिन्हें पहले 'तीसरी दुनिया' या 'पूर्वी दुनिया' कहा जाता था,(4)वहीं, ग्लोबल नॉर्थ के हिस्से में उत्तरी अमेरिका और यूरोपीय देशों को देखा जाता है जो विकसित हैं, जहां बुनियादी ढांचा मजबूत है, औद्योगिक विकास है।

साथियों बात कर हम माननीय पीएम के बाकी बचे चौथे और पांचवें चरण की करें तो, अपनी यात्रा के चौथे चरण में प्रधानमंत्री 5 से 8 जुलाई तक ब्राजील जाएंगे। यहां वे 17 वें ब्रिक्स शिखर सम्मेलन 2025 में भाग लेंगे। इसके बाद वे ब्राजील की राजकीय यात्रा पर रहेंगे। प्रधानमंत्री की यह चौथी ब्राजील की यात्रा होगी। 17 वां ब्रिक्स लीडर्स समिट रियो डी जनेरियो में होगा। शिखर सम्मेलन के दौरान, हमारे पीएम वैश्विक मुद्दों पर विचार साझा करेंगे।आतंकवाद पर भारत को अपना पक्ष दुनिया के सामने रखने का यह एक बेहतर मौका है। इनके अलावा वैश्विक शासन में सुधार, शांति और सुरक्षा, बहुपक्षवाद को मजबूत करना,आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस का जिम्मेदारी से उपयोग, जलवायु कार्रवाई, वैश्विक स्वास्थ्य और आर्थिक और वित्तीय मामले भी शामिल रहेंगे। शिखर सम्मेलन के दौरान उनकी कई द्विपक्षीय बैठकें होने की संभावना है।राजकीय यात्रा के लिए प्रधानमंत्री वहां वे राष्ट्रपति लुइज़ इनासियो लूला दा सिल्वा के साथ व्यापार, रक्षा, ऊर्जा, अंतरिक्ष, प्रौद्योगिकी, कृषि और स्वास्थ्य जैसे आपसी हित के क्षेत्रों में रणनीतिक साझेदारी को व्यापक बनाने पर चर्चा करेंगे। ब्राजील, दक्षिण अमेरिका में भारत का सबसे बड़ा व्यापारिक भागीदार है। अपनी यात्रा के अंतिम चरण में पीएम 9 जुलाई को नामीबिया जाएंगे। यह पीएम की पहली नामीबिया यात्रा होगी। भारत से नामीबिया की यह तीसरी प्रधानमंत्री स्तरीय यात्रा है। अपनी यात्रा के दौरान, प्रधानमंत्री राष्ट्रपति न्देमुपेलिला नेटुम्बो नंदी-नदैतवाह के साथ द्विपक्षीय वार्ता करेंगे। वे नामीबिया की संसद को भी संबोधित करेंगे। हाल के वर्षों में भारत और नामीबिया के बीच व्यापार बढ़ा है। 2000 में यह 3 मिलियन डॉलर से भी कम था जो अब लगभग 600 मिलियन डॉलर हो गया है। भारतीय कंपनियों ने नामीबिया में खनन, विनिर्माण, हीरा प्रसंस्करण और सेवा क्षेत्रों में निवेश किया है। सितंबर 2022 में नामीबिया से भारत आए आठ चीतों को पीएम ने मध्य प्रदेश के कूनो राष्ट्रीय उद्यान में छोड़ा था। यह दुनिया में किसी बड़े मांसाहारी प्रजाति का पहला अंतरमहाद्वीपीय स्थानांतरण था। इन दिनों रेयर अर्थ मेटल पर चीन की पाबंदियों के चलते पूरी दुनिया परेशान है। ऐसे में पीएम की यह नामीबिया यात्रा भारत के इस संकट को दूर करने में मील का पत्थर साबित हो सकता है।पीएम की इस पांच देशों की यात्रा से भारत को अनेकों लाभ मिलने की उम्मीद है इस यात्रा से वैश्विक राजनीति में भारत की भूमिका में कोई महत्वपूर्ण बदलाव देखने को मिलेगा?

अतः अगर हम उपरोक्त पूरे विवरण का अध्ययन कर इसका विश्लेषण करें तो हम पाएंगे किभारत ग्लोबल साउथ की अग्रणी आवाज़ के रूप में स्थापित होकर,पश्चिम नेतृत्व वाली वैश्विक व्यवस्था क़ा विकल्प बनने की ओर?भारत उन देशों से जुड़ाव को गहरा कर रहा है जो अक्सर वैश्विक निर्णय लेने में,अपना कम प्रतिनिधित्व महसूस करते हैं।क्या भारत ग्लोबल साउथ का नेतृत्व करने की और बढ़ा? 1 वर्ष में ग्लोबल साउथ के 12 से अधिक दौरों का पैटर्न, एक नए पश्चिमोंत्तर विश्व व्यवस्था का नेतृत्व करने की ओर?

महिंद्रा 15 अगस्त को पेश होंगी 4 नई एसयूवी कॉन्सेप्ट्स, विजन एसएक्सटी का टीजर जारी

परिवहन विशेष न्यूज

महिंद्रा 15 अगस्त 2025 को फ्रीडम_एनयू इवेंट में चार नई कॉन्सेप्ट एसयूवी पेश करेगी। कंपनी ने Vision SXT का टीज़र जारी किया है जो ऑफ-रोडिंग पर केंद्रित है। Vision SXT में एक्सटर्नल बोनट हिंजेस क्लैमशेल बोनट डिज़ाइन और चौड़े टायर्स हैं। महिंद्रा की नई एसयूवी को NU मल्टी-एनर्जी प्लेटफॉर्म पर बनाया जा रहा है जो पेट्रोल डीजल हाइब्रिड और इलेक्ट्रिक पावरट्रेन को सपोर्ट करेगा।

नई दिल्ली। भारत की जानी-मानी ऑटो कंपनी महिंद्रा अपनी SUVs के लिए पहले से ही पॉपुलर है। अब कंपनी 15 अगस्त 2025 को एक और बड़ा धमाका करने जा रही है। महिंद्रा इस दिन अपनी चार नई कॉन्सेप्ट SUVs को पेश करने वाली है। इस इवेंट को Freedom_NU नाम दिया गया है। कंपनी अब एक और टीजर जारी किया है, जिसमें Vision SXT देखने के लिए मिली है। यह महिंद्रा की तीसरी कॉन्सेप्ट SUV Vision SXT है, इससे पहले कंपनी Vision T और Vision S का टीजर पहले ही जारी कर चुका है।

Mahindra Vision SXT होगी ऑफ-रोडिंग SUV

महिंद्रा ने Vision SXT को "A vision designed for bold adventures" यानी "साहसिक रोमांच के लिए डिजाइन की गई सोच" कहा है। यह SUV ऑफ-रोडिंग पर फोकस करेगी। इसमें एक्सटर्नल बोनट हिंजेस, क्लैमशेल बोनट डिजाइन, बोनट पर शार्प ग्रूव्स, चौड़े और फ्लेयर्ड व्हील आर्च, ऑफ-रोडिंग के लिए बड़े और चौड़े टायर्स, उभरा हुआ फ्रंट बंपर, जिसमें विन्च और टो हुक्स के लिए जगह हो सकती है। कुल मिलाकर Vision SXT का डिजाइन काफी मस्कुलर और अग्रेसिव है। इसका लुक किसी आर्मर्ड मिलिट्री व्हीकल की याद दिलाता है, जिससे सड़क पर इसका प्रेजेंस और भी दमदार दिखेगा।

Mahindra का फ्यूचर प्लान

महिंद्रा की सभी नई SUVs को NU मल्टी-एनर्जी प्लेटफॉर्म पर बनाया जा रहा है। इसका मतलब है कि ये SUV पेट्रोल, डीजल, हाइब्रिड और इलेक्ट्रिक पावरट्रेन को सपोर्ट करेंगी। इस प्लेटफॉर्म के जरिए कंपनी ग्लोबल मार्केट में भी अपनी पकड़ मजबूत करना चाह रहे हैं।

Vision SXT होगा नया Scorpio-N पिकअप

Vision SXT या तो एक नई SUV होगी या फिर यह Scorpio-N बेस्ड पिकअप ट्रक को जन्म दे सकती है। अगर ऐसा हुआ, तो हो सकता है कि यह मॉडल पूरी तरह इलेक्ट्रिक हो, जबकि पहले पेश किया गया Scorpio-N पिकअप साउथ अफ्रीका में इंटरनल कम्बशन इंजन (ICE) के साथ था। महिंद्रा के पिकअप ट्रक दुनिया के कई बाजारों में लोकप्रिय हैं क्योंकि ये मजबूत, भरोसेमंद और कीमत में प्रतिस्पर्धी होते हैं।

15 अगस्त को क्या होगा खास?

Vision T, Vision S और अब Vision SXT का टीजर आ चुका है। उम्मीद है कि 15 अगस्त को महिंद्रा एक और Vision कॉन्सेप्ट को पेश करेगी, जिससे कुल चार नई कॉन्सेप्ट गाड़ियां दिखाई जाएंगी।

क्या फ्लॉप हो रही है एलोन मस्क की टेस्ला साइबरट्रक? जानिए क्या है पीछे का कारण

टेस्ला साइबरट्रक जिसका प्रचार Elon Musk ने खूब किया उम्मीदों पर खरी नहीं उतरी। इसकी बिक्री में भारी गिरावट आई है दूसरी तिमाही में 52% तक की कमी देखी गई। ऊंची कीमत विवादास्पद डिज़ाइन और कम रेंज के कारण यह आम खरीदारों के लिए मुश्किल है। Tesla को अब Rivian Ford और GM जैसी कंपनियों से कड़ी चुनौती मिल रही है जिससे निवेशकों का भरोसा डगमगा सकता है।

नई दिल्ली। दुनिया की सबसे पॉपुलर इलेक्ट्रिक कारों में से एक Tesla Cybertruck है। टेस्ला कंपनी के मालिक Elon Musk ने इसका बढ़ चढ़कर प्रचार किया। इसके साथ ही इसकी खूबियों के बारे में काफी प्रचार किया। जिस तरह से साइबरट्रक का प्रचार किया गया था, उस तरह से यह खरी नहीं उतरी है। जब Elon Musk ने पहली बार Cybertruck को पेश किया था, तो उन्होंने इसे एक फ्यूचरिस्टिक की कार बताया था। सीएनएन की एक रिपोर्ट के मुताबिक, Cybertruck ने ना केवल Tesla के वादों को पूरा करने में असफलता पाई, बल्कि कंपनी की प्रतिष्ठा को भी झटका दिया है। आइए जानते हैं कि आखिर किस तरह से Cybertruck उस तरह से परफॉर्म नहीं कर पाई, जिस तरह से कंपनी चाहती थी?

Tesla Cybertruck की बिक्री में गिरावट

Tesla आमतौर पर अपने मॉडल्स की बिक्री के आंकड़े सार्वजनिक रूप से नहीं बताती है, लेकिन कंपनी के जरिए जारी किए गए आंकड़ों के मुताबिक, दूसरी तिमाही (अप्रैल-जून 2025) में Tesla की कुल ग्लोबल डिलीवरी में 13.5% की गिरावट आई है, जो अब तक की सबसे बड़ी तिमाही गिरावट मानी जा रही है।

Cybertruck की बिक्री को Tesla की दूसरे मॉडल्स की कैटेगरी में छिपा देती है, जिससे Model S, Model X, और Cybertruck शामिल होते हैं। इस कैटेगरी की बिक्री 21,500 से घटकर सिर्फ 10,400 यूनिट रह गई है, यानी करीब 52% की गिरावट, जो सीधे तौर पर एक क्लियर फेलियर को दिखाता है।

Cybertruck के फ्लॉप होने के पीछे के कारण

Cybertruck की कीमत लगभग $80,000 से $100,000 (68.40 लाख से 85.50 लाख रुपये) के बीच है, जो इसे आम खरीदारों की पहुंच से बाहर कर देती है। जल्द ही कई बाजारों में इलेक्ट्रिक व्हीकल्स पर मिलने वाले टैक्स बेनेफिट्स खत्म हो सकते हैं, जिससे इसकी लागत और भी बढ़ जाएगी। इसका डिजाइन काफी अनोखा है, जिसकी वजह से इसके डिजाइन को काफी आलोचना मिली है और आम उपभोक्ता इसे प्रैक्टिकल नहीं मानते है। Elon Musk ने शुरुआत में 500 मील की रेंज का दावा किया गया है, लेकिन वास्तविकता में यह केवल लगभग 200 मील ही दे पा रही है। Cybertruck को कई बार वापस बुलाया गया, जिनमें एक मामला ऐसा भी था जहां चलते ट्रक से स्टील पैनल गिर गया।

क्या Cybertruck Tesla को डुबो देगा?

Tesla की बाकी कारें जैसे Model 3 और Model Y अभी भी बाजार में अच्छा कर रही हैं, लेकिन उनकी तरह Cybertruck की बिक्री नहीं हो रही है। Tesla को अब Rivian, Ford, और GM जैसी कार निर्माता कंपनियों से भी कड़ी चुनौती मिल रही है। इसके साथ ही चीन की कंपनी BYD तेजी से Tesla से आगे निकल रही है। भले ही Tesla के स्टॉक्स लंबे समय में अच्छा प्रदर्शन करते रहे हों, लेकिन अगर प्रोडक्ट्स की गुणवत्ता और विश्वसनीयता में गिरावट जारी रही, तो निवेशकों का भरोसा भी डगमगा सकता है।

महिंद्रा की ये दमदार एसयूवी ऑस्ट्रेलिया में हुई लॉन्च, पावरफुल इंजन और शानदार फीचर्स से है लैस

परिवहन विशेष न्यूज

महिंद्रा ने अपनी सब-4 मीटर एसयूवी Mahindra XUV 3XO को ऑस्ट्रेलिया में लॉन्च किया है। यह ऑस्ट्रेलिया में लॉन्च होने वाली कंपनी की चौथी गाड़ी है। XUV 3XO में 1.2L mStallion टर्बो पेट्रोल इंजन दिया गया है जो 110 hp की पावर जनरेट करता है। इसमें 10.25-इंच HD टचस्क्रीन डिजिटल इंस्ट्रूमेंट क्लस्टर और ADAS जैसे फीचर्स हैं। साथ ही और भी कई बेहतरीन फीचर्स से लैस है।

नई दिल्ली। महिंद्रा ने अपनी सब-4 मीटर SUV Mahindra XUV 3XO को अब ऑस्ट्रेलिया में भी लॉन्च कर दिया है। ऑस्ट्रेलिया में लॉन्च होने वाली यह कंपनी की चौथी गाड़ी है। इससे पहले Mahindra Scorpio, XUV700 और S11 4X4 Pikup लॉन्च किया जा चुका है, जिन्हें काफी अच्छा रिस्पॉन्स मिला है। आइए XUV 3XO के बारे में विस्तार में जानते हैं कि इसे ऑस्ट्रेलिया में किन फीचर्स के साथ लॉन्च किया गया है?

Mahindra XUV 3XO के ऑस्ट्रेलियन वैरिएंट्स और कीमतें

AX5L : AUD 23,490 (लगभग 13.18 लाख रुपये)

AX7L : AUD 26,490 (लगभग 14.87 लाख रुपये)

ये कीमतें ड्राइव-अवे प्राइस हैं, जिसमें टैक्स, रजिस्ट्रेशन और सभी ऑन-रोड खर्च शामिल हैं। यह इंट्रोडक्टरी ऑफर 31 अगस्त 2025 तक वैध है। सितंबर से कीमत में AUD 500 की बढ़ोतरी होगी।

XUV 3XO का डिजाइन

डिजाइन के मामले में Mahindra XUV 3XO का एक्सटीरियर भारतीय वर्जन जैसा ही है। इसमें C-शेप LED DRLs, बोल्ड फ्रंट ग्रिल, इनोवेटिव Infinity टेललैंप्स, AX5L में 16-इंच डायमंड कट अलॉय व्हील्स, AX7L में 17-इंच बड़े अलॉय व्हील्स दिए गए हैं। इसे ऑस्ट्रेलिया में Everest White, Galaxy Grey, Stealth Black और Tango Red के साथ लॉन्च किया गया है, लेकिन AX7L में Citrine Yellow एक्सक्लूसिव कलर के साथ पेश किया गया है।

XUV 3XO का इंटीरियर्स

यह एक फुल-लोडेड स्मार्ट SUV है। इसके पीछे की वजह इसमें मिलने वाले फीचर्स है। इसमें 10.25-इंच HD टचस्क्रीन और डिजिटल इंस्ट्रूमेंट क्लस्टर, वायरलेस Android Auto और Apple CarPlay, ड्यूल जोन क्लाइमेट कंट्रोल, लेदर रैप्ड स्टीयरिंग और गियर नॉब, इलेक्ट्रिक फोल्डिंग ORVMs जैसे फीचर्स दिए गए हैं। वहीं, AX7L वेरिएंट को स्काईरूफ, Harman Kardon प्रीमियम साउंड सिस्टम, ब्लैक लेदरेट सीट्स और सॉफ्ट टच डैशबोर्ड, 360 डिग्री कैमरा और ब्लाइंड व्यू मॉनिटर और ADAS सिस्टम के ऑटो इमरजेंसी ब्रेकिंग, फॉरवर्ड कोलिजन अलर्ट, ट्रैफिक साइन रिकग्निशन जैसे फीचर्स से लैस किया गया है।

XUV 3XO का इंजन

ऑस्ट्रेलिया में Mahindra XUV 3XO को सिर्फ 1.2L mStallion टर्बो पेट्रोल इंजन के साथ पेश किया गया है। यह इंजन 110 hp की पावर और 200 Nm का टॉर्क जनरेट करता है। इसके इंजन को साथ में 6-स्पीड टॉर्क कन्वर्टर ऑटोमैटिक गियरबॉक्स के साथ जोड़ा गया है। XUV 3XO का मुकाबला ऑस्ट्रेलिया में Chery Tiggo 4, Mazda CX-3, MG ZS, Kia Stonic और Hyundai Venue जैसी कॉम्पैक्ट SUVs से होगा।

टाटा हैरियर ईवी ने मचाया धमाल, सिर्फ 24 घंटे में हुई 10,000 से ज्यादा बुकिंग

टाटा मोटर्स ने हाल ही में इलेक्ट्रिक व्हीकल Tata Harrier EV को लॉन्च किया जिसकी बुकिंग 2 जुलाई से शुरू हुई। इस इलेक्ट्रिक कार को 24 घंटे में 10000 से ज्यादा बुकिंग मिलीं। Harrier EV दो बैटरी विकल्पों के साथ आती है जो 65 kWh और 75 kWh है। इसमें कई बेहतरीन फीचर्स दिए गए हैं। इसमें कई एडवांस सेफ्टी फीचर्स भी मिलते हैं।

नई दिल्ली। टाटा मोटर्स ने हाल ही में इलेक्ट्रिक व्हीकल Tata Harrier EV को लॉन्च किया है। इसकी बुकिंग 2 जुलाई से शुरू हुई थी। टाटा की इस इलेक्ट्रिक कार की महज 24 घंटे में 10,000 से ऊपर पहुंच गई। इस सेगमेंट में यह दूसरी सबसे बड़ी बुकिंग रिकॉर्ड है। इससे पहले इसी साल फरवरी में Mahindra XEV 9e को लॉन्च के दिन 16,900 बुकिंग्स मिली थीं। इसकी बुकिंग के बाद डिलीवरी जुलाई 2025 से शुरू हो जाएगी। आइए जानते हैं कि हैरियर ईवी को किन फीचर्स के साथ पेश किया जाता है?

Harrier EV के स्पेसिफिकेशन्स

हैरियर ईवी को दो बैटरी ऑप्शन के साथ पेश किया जाता है, जो 65 kWh और 75 kWh है। इसका 65 kWh बैटरी पैक फुल चार्ज होने के बाद MIDC रेंज 538 किमी है। इसके 75 kWh बैटरी पैक के MIDC रेंज 627 किमी है। Harrier EV का टॉप वैरिएंट QWD में आता है, जिसमें बड़ा 75 kWh बैटरी पैक इस्तेमाल किया गया है।

इसके RWD वैरिएंट्स में 238 PS की पावर और 315 Nm का टॉर्क जनरेट करता है। इसका QWD ड्यूल मोटर वैरिएंट में फ्रंट मोटर से 158 PS और रियर मोटर से 238 PS की पावर के साथ ही 504 Nm का टॉर्क जनरेट करता है। RWD में Eco, City और Sport ड्राइव मोड्स, जबकि QWD में बाकि मोड्स के साथ ही एक Boost मोड भी मिलता है।

Harrier EV के फीचर्स

Tata Harrier EV में कई बेहतरीन फीचर्स दिए गए हैं। इसमें ड्यूल टोन इंटीरियर दिया गया है। इसमें पैनोरमिक सनरूफ, 36.9 सेमी QLED इंफोटेनमेंट सिस्टम, ड्यूल जोन टेंपरेचर मोड्स, एंबिएंट लाइट्स, ऑटो पार्क सिस्टम, की-लैस एंट्री, फोन एक्सेस एंट्री, 540 डिग्री सराउंड व्यू सिस्टम, E-iRVM, जेबीएल ऑडियो सिस्टम, एंड्राइड ऑटो, कार प्ले, छह टैरेन मोड्स नॉर्मल, मड, रॉक क्रॉल, सैंड, स्नो/ग्रास और कस्टम मोड्स, 22 सेफ्टी फीचर्स के साथ Level-2 ADAS, OTA, इन कार पेमेंट, रेंज पॉलिगॉन, OTA अपडेट, V2L, V2V, Arcade में 25 से ज्यादा एप, चार साल कनेक्टिड कार फीचर्स, फ्रंट वेंटिलेटिड सीट्स, पावर बॉस मोड, फ्रंट पावर्ड सीट्स, 502 से 999 लीटर बूट स्पेस जैसे कई बेहतरीन सुविधाएं दी गई हैं।

Harrier EV की कीमत

भारतीय बाजार में Tata Harrier EV को 21.49 लाख रुपये से लेकर 30.23 लाख रुपये की एक्स-शोरूम कीमत के बीच ऑफर किया जाता है।

अगले भारत मोबिलिटी एक्सपो की आ गई तारीख, जानें कहां और क्या होगा खास

भारत में ऑटोमोबाइल और मोबिलिटी सेक्टर को बढ़ावा देने के लिए भारत मोबिलिटी ग्लोबल एक्सपो का आयोजन किया जाता है। इसका तीसरा एडिशन 4 फरवरी से 9 फरवरी 2027 तक होगा। यह इवेंट इलेक्ट्रिक व्हीकल्स और मल्टी-मोडल ट्रांसपोर्ट जैसे मोबिलिटी के हर पहलू को दिखाता है। एक्सपो दिल्ली-एनसीआर के तीन वेन्यू पर आयोजित किया जाएगा जिसमें नई दिल्ली द्वारका और ग्रेटर नोएडा शामिल हैं।

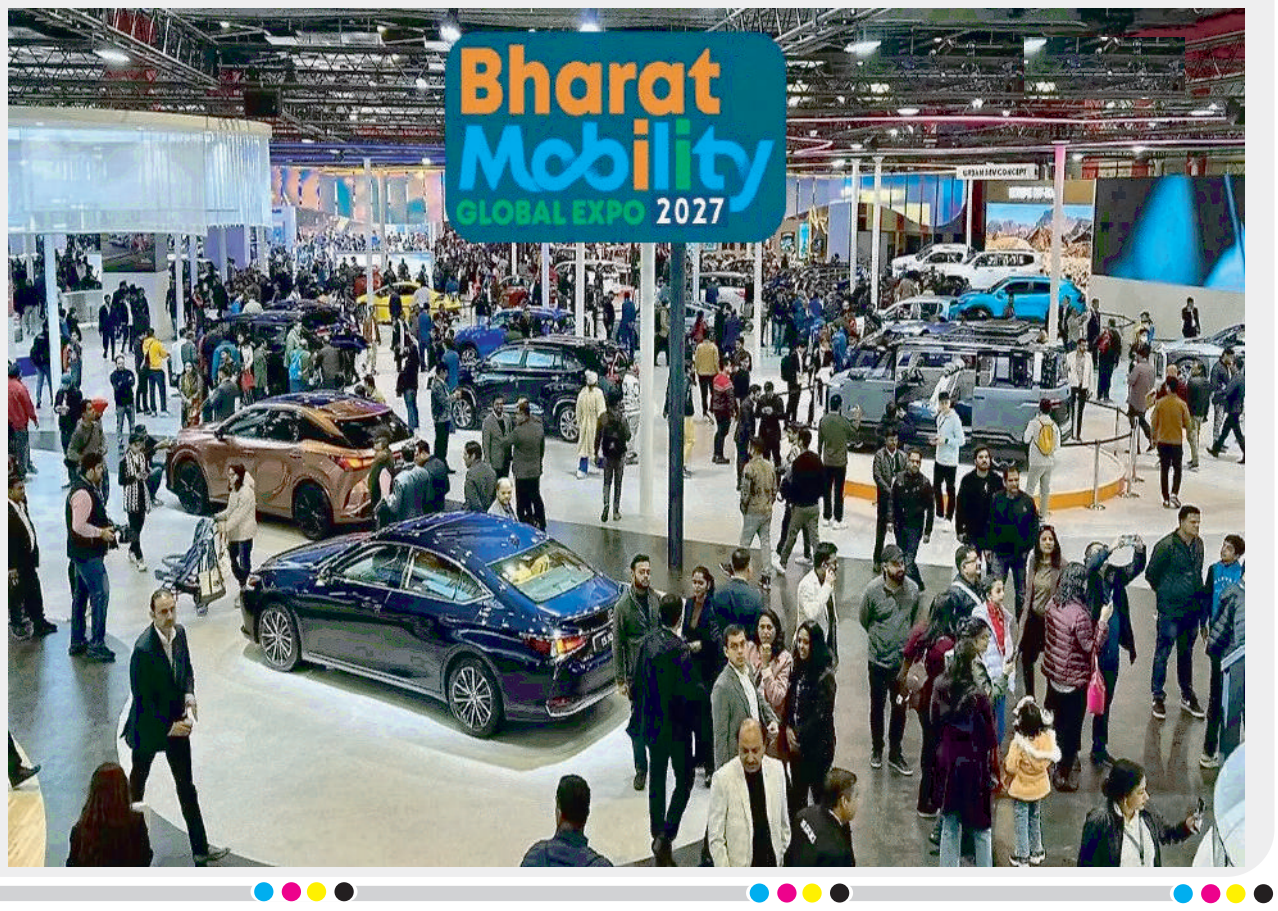

नई दिल्ली। भारत के ऑटोमोबाइल और मोबिलिटी सेक्टर में इनोवेशन और टेक्नोलॉजी को बढ़ावा देने के लिए भारत मोबिलिटी ग्लोबल एक्सपो (Bharat Mobility Global Expo) का आयोजन किया जाता है। अब इसके अलगे तारीख की घोषणा कर दी गई है। ऑटो एक्सपो का तीसरा एडिशन 4 फरवरी से 9 फरवरी 2027 तक आयोजित किया जाएगा। आइए भारत मोबिलिटी ग्लोबल एक्सपो के बारे में विस्तार से जानते हैं कि 2027 में होने जा रहे इस कार्यक्रम को कहां किया जाएगा और इस बार क्या कुछ खास देखने के लिए मिलेगा?

भारत मोबिलिटी ग्लोबल एक्सपो

यह इवेंट केवल कारों का मेला नहीं होता है, बल्कि आने वाले समय की मोबिलिटी के हर पहलू भी बताता है। इसमें इलेक्ट्रिक व्हीकल्स, मल्टी-मोडल ट्रांसपोर्ट से लेकर खेती के लिए ट्रैक्टर और मशीनरी को भी दिखाया जाता है। आइए जानते हैं इस मेगा शो की खास बातें।

अब दो साल में एक बार होगा

2024 और 2025 में भारत मोबिलिटी ग्लोबल एक्सपो को दो साल आयोजित किया गया था। हालांकि, असल में इसे दो साल में एक बार आयोजित किए जाने की योजना थी। अब इसे साल 2027 में फिर से उसी फॉर्मेट में लाया जा रहा है। इस बदलाव का यह फायदा होगा कि ऑटोमोबाइल कंपनियों (OEMs) को अपने नए प्रोडक्ट्स और टेक्नोलॉजी को तैयार करने और प्रदर्शित करने के लिए और ज्यादा वक्त मिलेगा। सरकारी अधिकारियों ने भी कहा है कि भारत मोबिलिटी ग्लोबल एक्सपो को को सालाना इवेंट बनाने की कोशिशें हुईं, लेकिन सभी स्टेकहोल्डर्स की राय और भागीदारी अहम है, ताकि इवेंट सभी के लिए फायदेमंद हो सके।

इन तीन जगहों पर होगा आयोजन

भारत मोबिलिटी एक्सपो 2027 को दिल्ली-एनसीआर के तीन बड़े वेन्यू पर आयोजित किया जाएगा। इसमें नई दिल्ली का भारत मंडपम, द्वारका का यशोभूमि कन्वेंशन सेंटर और ग्रेटर नोएडा का इंडिया एक्सपो सेंटर एंड मार्ट है। 2025 में आयोजित हुए भारत मोबिलिटी एक्सपो में भी इन्हीं वेन्यू का आयोजन किया गया था, जहां पर जहां एक्सहिबिशन, कॉन्फ्रेंस और विजिटर इंगेजमेंट के लिए पर्याप्त जगह थी। इस बार भी इन लोकेशन्स पर भव्य आयोजन की तैयारी है।

क्या-क्या होगा खास?

भारत मोबिलिटी एक्सपो 2027 में पहले की तरह ही कई एक्सहिबिशन, टेक्निकल सेशन, और स्टेकहोल्डर मीटिंग आयोजित की जाएंगी। इस बार एक नई खासियत जोड़ी जा रही है, जो मल्टी-मोडल मोबिलिटी और लॉजिस्टिक्स सेक्शन है। इसमें रेलवे, रोड, एयर, वाटर ट्रांसपोर्ट, अर्बन और रूरल मोबिलिटी, खेती-किसानी के लिए ट्रैक्टर और एग्रीकल्चरल मोबिलिटी सॉल्यूशंस शामिल है।

कौन कर रहा है आयोजन?

भारत मोबिलिटी एक्सपो पूरी तरह से इंडस्ट्री-ड्रिवन इवेंट है, जिसे इंजीनियरिंग एक्सपोर्ट प्रमोशन काउंसिल ऑफ इंडिया (EEPC) आयोजित कर रही है। इसमें SIAM (सोसाइटी ऑफ इंडियन ऑटोमोबाइल मैन्युफैक्चरर्स), ACMA (ऑटोमोटिव कंपोनेंट मैन्युफैक्चरर्स एसोसिएशन), ATMA (ऑटोमोटिव टायर मैन्युफैक्चरर्स एसोसिएशन), NASSCOM (नेशनल एसोसिएशन ऑफ सॉफ्टवेयर एंड सर्विसेज कंपनी) और CII (कन्फेडरेशन ऑफ इंडियन इंडस्ट्री) शामिल है।

कक्षाओं में बहुभाषावाद सीखने के परिणामों को बढ़ाएगा

विजय गर्ग
सेवानिवृत्त प्रिंसिपल, शैक्षिक स्तंभकार, प्रख्यात शिक्षाविद्, गली कौर चंद एमएचआर मलोट पंजाब

भारत में प्राथमिक स्कूलों में नामांकित 30% से अधिक बच्चों को मध्यम से गंभीर सीखने के नुकसान का सामना करना पड़ता है क्योंकि उन्हें एक ऐसी भाषा के माध्यम से पढ़ाया जाता है जिसे वे पहली बार स्कूल में शामिल होने पर नहीं बोलते या समझते हैं। इनमें दूरस्थ बस्तियों में आदिवासी समुदायों से संबंधित बच्चे शामिल हैं; अंतर-राज्य सीमा क्षेत्रों में बच्चे; मौसमी प्रवासियों सहित प्रवासी मजदूरों के बच्चे; जो बच्चे ऐसी भाषाएं बोलते हैं जिन्हें स्कूल में उपयोग की जाने वाली मानक भाषा का 'बोलियाँ' माना जाता है, लेकिन वे अलग हैं (उदाहरण के लिए बघेली, वागड़ी, बुंदेली बोलने वाले बच्चे जो हिंदी के माध्यम से पढ़ते हैं), और निश्चित रूप से, वे बच्चे जो घर पर भाषा के समर्थन के वातावरण के बिना अंग्रेजी-माध्यम के स्कूलों में पढ़ते हैं।

स्कूलों में सीखना भाषा का उपयोग करके होता है, चाहे वह बच्चे बात कर रहे हों, सुन रहे हों, सोच रहे हों, अन्य बच्चों के साथ सहयोग कर रहे हों, पढ़ रहे हों या लिख रहे हों। अनुसंधान से पता चलता है कि एक परिचित भाषा के माध्यम से सीखना जिसे बच्चे अच्छी तरह से समझते हैं, आत्मसम्मान और आत्मविश्वास को बढ़ावा देता है जो शुरुआती सीखने के लिए बहुत महत्वपूर्ण है, अतिरिक्त भाषाओं के सीखने का समर्थन करता है, कक्षाओं को अधिक सक्रिय और शिक्षार्थी केंद्रित बनाता है, जिसके परिणामस्वरूप सभी विषयों में बेहतर समझ और सीखने का परिणाम होता है, और रचनात्मकता, अभिव्यक्ति, उच्च क्रम सोच और तर्क को बढ़ावा देता है।

अपनेपन की भावना राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) 2020 और नेशनल करिकुलम फ्रेमवर्क फॉर द फाउंडेशनल स्टेज (एनसीएफ-एफएस) 2023 प्रारंभिक सीखने के चरण में बच्चों की पहली भाषा या सबसे परिचित भाषा के उपयोग पर जोर देती है। छात्रों को समय के साथ क्रमिक रूप से दूसरी और तीसरी भाषा के संपर्क में लाया जा सकता है। एनईपी कम उम्र के बच्चों के लिए कई भाषाओं के प्राकृतिक संपर्क को भी बढ़ावा देता है क्योंकि बच्चे आसानी से मौखिक भाषा प्राप्त कर सकते हैं।

एनईपी और एनसीएफ ने बहुभाषावाद के गुणों और कक्षा में इसके उपयोग की सराहना की। हालांकि, भारत में जटिल भाषा स्थितियों को देखते हुए, इन नीतिगत योगों को लागू करना आसान नहीं है। इसके अलावा, उन भाषाओं के बारे में बहुत कम विश्वसनीय डेटा उपलब्ध है जिन्हें बच्चे समझते हैं और बोलते हैं जब वे पहली बार 5 या 6 वर्ष की आयु में स्कूल में शामिल होते हैं। भाषण पैटर्न कम दूरी पर बदल जाते हैं और कभी-कभी बच्चों द्वारा बोली जाने वाली भाषाओं के लिए एक विशिष्ट भाषा लेबल असाइन करना मुश्किल होता है क्योंकि कुछ स्थानीय / क्षेत्रीय भाषाएं उन्हें प्रभावित कर सकती हैं। एक कक्षा में भी बच्चों द्वारा बोली जाने वाली कई घरेलू भाषाएं हो सकती हैं। चीजों को और जटिल बनाने के लिए, यह अनुमान लगाया जाता है कि लगभग 15% प्राथमिक विद्यालय के शिक्षक उस भाषा को नहीं समझते हैं या बोलते हैं जो उनके स्कूलों में बच्चों के लिए सबसे अधिक परिचित है।

चूंकि बच्चों द्वारा बोली जाने वाली सभी भाषाओं को निर्देश का माध्यम नहीं बनाया जा सकता है, इसलिए यह सुनिश्चित करना महत्वपूर्ण है कि जब कोई बच्चा ऐसी भाषा का अध्ययन कर रहा हो जिसे वह स्कूल में शामिल होने पर अच्छी तरह से समझ या बोल नहीं पाता है, तो उसकी मजबूत या परिचित भाषा को जगह दी जाती है औपचारिक शिक्षण में, कम से कम बोलते समय में। बच्चों द्वारा बहुत सारी बातचीत, उच्च-क्रम सोच कार्य और अभिव्यक्ति शुरू में बच्चों की मजबूत भाषा में हो सकती है, धीरे-धीरे MoI के रूप में उपयोग की जाने वाली भाषा के उच्च उपयोग में स्थानांतरित हो सकती है, जबकि कक्षा से बच्चों की परिचित भाषा को कभी नहीं हटाया जा सकता है।

उन रणनीतियों में से एक जो स्कूली शिक्षा के शुरुआती वर्षों में उन स्थितियों में सबसे अच्छा काम करती हैं जहां बच्चे द्विभाषी उभर रहे हैं, धीरे-धीरे एक कम परिचित भाषा सीख रहे हैं, शिक्षक और बच्चों के लिए उन भाषाओं के मिश्रण का उपयोग करना है जो किसी भी समय बच्चों की भाषा प्रदर्शनों की सूची के लिए सबसे उपयुक्त हैं। समय। इससे बच्चों को बेहतर तरीके से समझने, खुद को स्वतंत्र रूप से व्यक्त करने और अपने भावनात्मक समायोजन को बढ़ावा देने में मदद मिलेगी जो बेहतर सीखने के लिए महत्वपूर्ण है। शिक्षण के लिए इस तरह के दृष्टिकोण के लिए शिक्षा पारिस्थितिकी तंत्र में एक मजबूत बहुभाषी जागरूकता के निर्माण की आवश्यकता होती है जो दो या अधिक भाषाओं के एक साथ विकास को बढ़ावा देता है।

तीन भाषाएं सीखना जबकि सामाजिक बहुभाषावाद भारत में आदर्श है जहां ज्यादातर लोग रोजमर्रा की जिंदगी में दो या दो से अधिक भाषाओं (या मिश्रित रूप में) का उपयोग करते हैं, हमारे स्कूल अक्सर शिक्षण और सीखने की प्रक्रिया में इस बहुभाषी वास्तविकता को प्रतिबिंबित नहीं करते हैं। एनईपी 2020 निर्दिष्ट करता है कि बच्चों को उचित प्रवीणता के साथ तीन भाषाओं को सीखना चाहिए, जिनमें से कम से कम दो मूल भारतीय भाषाएं होनी चाहिए। बहुभाषी समाज को शिक्षण और सीखने के लिए एक समावेशी दृष्टिकोण की आवश्यकता होती है। बहुभाषी दृष्टिकोण यह भी सुनिश्चित करेगा कि बच्चे अंग्रेजी में मजबूत भाषा और साक्षरता कौशल विकसित करें जो एक मजबूत आकांक्षा है। शिक्षा के लिए बहुभाषी दृष्टिकोण के कुछ मुख्य सिद्धांतों में शामिल हैं: 1.। शिक्षण और सीखने के लिए औपचारिक रूप से बच्चों की सबसे परिचित भाषा का व्यापक उपयोग। 2.। मातृ भाषा के समर्थन से नई या अपरिचित भाषाओं को पढ़ाया जाता है। 3। एक बहुभाषी कक्षा सभी बच्चों की भाषाओं और संस्कृतियों के प्रति सहिष्णुता और आपसी सम्मान को दर्शाती है। 4। सभी विषयों के लिए पाठ्यक्रम में शिक्षण और सीखने के लिए एक बहुभाषी दृष्टिकोण का उपयोग किया जाना चाहिए। 5.। एक बहुभाषी और बहुसांस्कृतिक दृष्टिकोण का उद्देश्य बच्चों के स्थानीय संदर्भों और अनुभवों को कक्षा में लाना है।

तार्किक सोच और तर्क के साथ मजबूत मौखिक अभिव्यक्ति, गहरी अव्यक्त समझ के साथ धाराप्रवाह पढ़ना, और लिखित रूप में खुद को व्यक्त करने की क्षमता इस सदी में हमारे युवाओं के लिए सफलता के मूल में कौशल है। इसके लिए हमारे देश में भाषा शिक्षण प्रथाओं की अधिकता की आवश्यकता होगी और इस सुधार का केंद्र शिक्षा के लिए एक बहुभाषी दृष्टिकोण होना चाहिए।

व्यंग्य: ट्रम्प एक महान विदूषक !

कस्तूरी दिनेश

इस असार, नाशवान जगत में दुखी, परेशान बन्दों के मनोरंजन के लिए उपर वाले ने समय-समय पर एक से बढ़कर एक विदूषक पैदा किये। ऐसे ही महान मसखरे चार्ली चैपलिन और लारेल हार्डी को कौन भूल सकता है ? भोलेभाले मूर्ख बनकर उन्होंने लोगों को खूब हंसाया। उसी तरह राजनीति के ग्लोबल मैदान में भी उपरवाले ने पीड़ति –शोषित जनता के मनोरंजन के लिए धरती पर कई महान मसखरे राजनीतिज्ञ अवतरित किये ! भारत की दृष्टि से मसखरी की इस राजनीतिक विधा को स्व.राजनारायण और आयुष्मान यादववंश कुलदीपक लालू ने खूब पुष्पित-पल्लवित किया !अपने समय में वे भारत की भूखी-नंगी जनता को हंसा-हंसाकर खूब लोटपोट करते रहे। इतना हंसाया कि सालों तक रोटी, कपड़ा और मकान की अपनी समस्या की तरफ आम जनता का ध्यान ही नहीं गया ! राजनीति के इन महान मसखरों का जोकरपना देख-देखकर दुखी जनता भूखे पेट, नंग-धडंग, ठहाके पर ठहाके लगाने में मस्त रही और इधर ये मसखरे मोटा माल सड़पकर गुलफाम हो गये !

अब ग्लोबल राजनीति की तरफ दृष्टिपात करें तो वर्षों के सूखे के बाद जगत कोतवाल अमेरिका ने एक अभूतपूर्व महान विदूषक-रत्न पैदा किया है ! नाम है डोनाल्ड जॉन ट्रम्प ! वे बहुमुखी राजनीतिक प्रतिभा के धनी तो हैं ही साथ-साथ परमाणु बम सम्पन्न, अस्त्र-शस्त्र निर्माता राष्ट्र अमेरिका के राष्ट्रपति भी हैं !डोनाल्ड श्री एक चालाक व्यापारी होने के साथ-साथ, बड़बोले-मसखरे राजनीतिज्ञ की मनभावन छवि वाले सारे संसार के ग्लोबल कोतवाल भी हैं !इतना ही नहीं उनकी रोमांस के बादशाह की छवि को भी कौन टक्कर दे सकता है ? उनकी बहुमुखी प्रतिभा को देखकर कभी-कभी तो समझ में नहीं आता कि वह क्या हैं और नहीं हैं ? उनमें भगवान विष्णु-भक्त भारत के महान ऋषि नारद की नारदीय प्रतिभा भी कूट-कूटकर भरी हुई है !

किन्हीं दो देशों को लड़ा देना। फिर कृपापूर्वक लड़ने के लिए उन्हें अपने देश में बने संहारक अस्त्र-शस्त्र मुहैया करवाकर करोड़ो-अरबों डालर कमाना !अंत में शान्ति कि अपील करते हुए उनका युद्ध रुकवाना और नोबल पुरस्कार के लिए अपने आप को सबसे उपयुक्त व्यक्ति बताना ! ये पेंचदार काम सिर्फ उन्हीं के वश की बात है ! भारत-पाकिस्तान में युद्ध रुकवाने का श्रेय भी वे हफ्ते -दो-हफ्ते में एक बार लेते ही रहते हैं ! शान्ति के नोबल पुरस्कार के लिए उनकी बेचैन आत्मा की छटपटाहट "ड्रग-के विरह में ड्रग-एडिक्ट की तरह है ! उनकी बॉडी मोहल्ले के खाए-पले भाईगिरी करनेवाले ऐसे पहलवान के माफिक है जो अक्सर मोहल्ले में किसी न किसी को जब पाए तब धौसियाते ही रहता हैं। ग्लोबल लेबल पर उनकी भाईगिरी की यह धौसियाहट अभी बेचारे ईरान पर तारी है ! कुछ दिन पहले तक वे अपने सूट की जेब से "टैरिफ-बम" निकाल-निकालकर सभी देशों को चमकाया करते थे पर अब धीरे-धीरे यह टैरिफ-बम भी टिकली फटाका में परिवर्तित होकर फुस्स हो गया है !

बेटियों को सिर्फ संस्कारी नहीं, बल्कि सशक्त, आत्मनिर्भर और जागरूक बनाइए।

बेटी जिगर का टुकड़ा है, बेटियां माता-पिता के दिल के बेहद क़रीब होती हैं, उनकी परवरिश में प्यार और सुरक्षा दोनों जरूरी हैं। आज़ादी जरूरी है, सिर्फ अच्छे संस्कार देना ही काफी नहीं, बेटियों को आज़ादी देना भी उतना ही जरूरी है। उन्हें अपनी पहचान बनाने का मौका मिलना चाहिए।

तितली और मधुमक्खी का उदाहरण, बेटियों को नाजुक तितली की तरह उड़ने की आज़ादी दीजिए, लेकिन साथ ही मधुमक्खी की तरह आत्मरक्षा का हुनर भी सिखाइए, ताकि जरूरत पड़ने पर वे खुद का और अपनी इज्जत का बचाव कर सकें।आज के समय की आवश्यकता, सिर्फ संस्कार नहीं, आत्मनिर्भरता भी है, बेटियों को अच्छे संस्कार देना जरूरी है, लेकिन उन्हें आत्मनिर्भर बनाना उससे भी ज्यादा जरूरी है।

आत्मरक्षा के हुनर, बेटियों को आत्मरक्षा के गुर, आत्मविश्वास, और मुश्किल समय में सही फैसले लेने की क्षमता भी सिखानी चाहिए।सशक्तिकरण, बेटियों को सशक्त बनाइए, ताकि वे समाज में अपने अधिकारों के लिए खड़ी हो सकें। इन बातों का गलत अर्थ निकालना बिल्कुल भी उचित नहीं है। जो कहा गया है वो आज के सामाजिक परिवेश की सच्चाई है। बेटियों को सिर्फ सिखाना ही नहीं, उन्हें मजबूत भी बनाना है, ताकि वे हर परिस्थिति का सामना कर सकें।

समाज को और माता-पिता को यह समझना होगा कि बेटियों को सिर्फ संस्कारी नहीं, बल्कि सशक्त, आत्मनिर्भर और जागरूक बनाना समय की मांग है। आपकी बात को गंभीरता से लेना चाहिए, क्योंकि यही आज के युग की सच्ची आवश्यकता है।

डॉ.मुश्ताक अहमद शाह
सहज हरदा मध्य प्रदेश

उच्च शिक्षा: विकास, चुनौतियां और आगे सड़क : विजय गर्ग

भारत का उच्च शिक्षा क्षेत्र महत्वपूर्ण विकास, शैक्षणिक कार्यक्रम के विविधीकरण और हाइब्रिड लर्निंग मॉडल के उदय द्वारा चिह्नित एक गतिशील परिवर्तन से गुजर रहा है। क्षेत्रीय राजस्व में 14 प्रतिशत की वृद्धि के साथ, सकल नामांकन अनुपात को बढ़ाने के उद्देश्य से शिक्षार्थी की अपेक्षाओं, तकनीकी प्रगति और नीतिगत बदलावों को बदलकर गति दी जा रही है, जो वर्तमान में 28 प्रतिशत है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) 2020 में अगले दशक में इसे 50 प्रतिशत तक बढ़ाने का प्रावधान है-एक महत्वाकांक्षी लक्ष्य जो संरचनात्मक सुधार और अभिनव वितरण तंत्र दोनों की मांग करता है।

उच्च शिक्षा परिदृश्य को आकार देने वाली एक प्रमुख प्रवृत्ति पारंपरिक, सिलोएड विषयों से उद्योग-संरेखित, बहु-विषयक कार्यक्रमों में बदलाव है। देश भर के संस्थान उभरते डोमेन जैसे कृत्रिम बुद्धिमत्ता, डेटा एनालिटिक्स, फिनटेक, टिकाऊ विकास और डिजिटल मार्केटिंग में पाठ्यक्रम शुरू कर रहे हैं। हाइब्रिड लर्निंग मॉडल के उदय - ऑनलाइन और ऑफलाइन घटकों के संयोजन - ने पहुंच को लोकतांत्रिक बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। डिजिटल प्लेटफार्मों के 2020 के बाद के त्वरण ने दूरस्थ और अल्पसेवित क्षेत्रों में शिक्षा लाई है, जबकि साथ ही शहरी शिक्षार्थियों के लिए खानपान किया है जो लचीलेपन और स्वायत्तता को महत्व देते हैं। हाइब्रिड मॉडल शिक्षार्थियों की वर्तमान पीढ़ी के लिए विशेष रूप से आकर्षक हैं, जो कठोर, एक आकार-फिट-सभी कार्यक्रम के बजाय व्यक्तिगत और मॉड्यूलर सीखने की यात्रा चाहते हैं।

अंतर्राष्ट्रीय नामांकन भी क्षेत्र की जीवंतता में योगदान दे रहा है। अफ्रीका, दक्षिण पूर्व एशिया और मध्य पूर्व के कुछ हिस्सों के छात्र अपने सापेक्ष सामर्थ्य, गुणवत्ता आश्वासन और अंग्रेजी-भाषा के निर्देश के कारण उच्च शिक्षा के लिए भारत की तलाश कर रहे हैं। स्पष्ट रूप से परिभाषित अकादमिक रोडमैप और विनियमित संस्थागत ढांचे के साथ, भारत एक विश्वसनीय वैश्विक शिक्षा केंद्र के रूप में उभर रहा है।

हालांकि, तेजी से परिवर्तन ने अपने साथ नई चुनौतियां ला दी हैं। उनमें से प्रमुख उद्योग के अवरोधों के साथ तालमेल रखने के लिए निरंतर पाठ्यक्रम नवीकरण की आवश्यकता है, विशेष रूप से प्रौद्योगिकी के नेतृत्व वाले। जैसे-जैसे परिवर्तन की गति तेज होती है, हर कुछ वर्षों में पाठ्यक्रम को संशोधित करने का पारंपरिक मॉडल अपर्याप्त हो गया है। स्वायत्त कार्यक्रमों की पेशकश करने वाले संस्थान अब उद्योग के विशेषज्ञों के सहयोग से द्विवार्षिक पाठ्यक्रम समीक्षा जैसे तंत्र पेश कर रहे हैं।

यह फुर्तीले कोर्स अपडेट और वास्तविक दुनिया के अनुप्रयोगों को शामिल करने की अनुमति देता है। विशेष रूप से व्यावसायिक शिक्षा के दायरे में, नौकरी की तत्परता एक केंद्रीय चिंता का विषय बन गई है। किसी भी शैक्षणिक कार्यक्रम की सफलता को तेजी से मापा जा रहा है कि यह छात्रों को कार्यबल के लिए कितनी अच्छी तरह से तैयार करता है। इसमें न केवल अकादमिक ज्ञान, बल्कि व्यावहारिक कौशल का एक पोर्टफोलियो, वर्तमान उपकरणों के संपर्क में और नई प्रौद्योगिकियों के लिए अनुकूलनशीलता भी शामिल है। संस्थान उद्योग के नेताओं से प्रमाणन मॉड्यूल एम्बेड करके, हाथों पर प्रशिक्षण की पेशकश करके और पहले सेमेस्टर से प्लेसमेंट की तैयारी शुरू करके इसे संबोधित कर रहे हैं।

एनईपी 2020 का कार्यान्वयन बहु-विषयक शिक्षा, व्यावसायिक एकीकरण और कौशल-आधारित शिक्षा को प्रोत्साहित करके पिछली नीतियों से एक महत्वपूर्ण प्रस्थान है। जबकि नीति अपनी दृष्टि में अच्छी तरह से तैयार है, इसका निष्पादन राज्यों में असमान बना हुआ है। गोद लेने की समयसीमा और पाठ्यक्रम ढांचे में भिन्नता के कारण खंडित परिणाम सामने आए हैं। उदाहरण के लिए, एक ही संस्थान के भीतर छात्र राज्य-स्तरीय निर्देशों के आधार पर पूरी तरह से अलग-अलग शैक्षणिक मॉडल का पालन कर सकते हैं। सामंजस्य की यह कमी स्केलेबिलिटी और राष्ट्रीय बेंचमार्किंग में बाधा डालती है। संस्थागत भूमिकाओं को परिभाषित करने में नीति स्पष्टता विशेष रूप से महत्वपूर्ण है। एनईपी अनुसंधान विश्वविद्यालयों, शिक्षण विश्वविद्यालयों और स्वायत्त कॉलेजों में संस्थानों को वर्गीकृत करने की परिकल्पना करता है। इस तरह के वर्गीकरण से लक्षित विकास और धन की अनुमति मिलती है, लेकिन मानदंड और अतिव्यापी जनादेश में अस्पष्टता परिचालन अनिश्चितताओं का कारण बनी है। केंद्र और राज्य दोनों सरकारों के नेतृत्व में कार्यान्वयन के लिए एक एकीकृत और चरणबद्ध दृष्टिकोण, संक्रमण को सुव्यवस्थित करने के लिए आवश्यक है।

चिंता का एक और क्षेत्र शिक्षक प्रशिक्षण है। जैसे-जैसे छात्र अपेक्षाएं विकसित होती हैं, शिक्षकों की भूमिका ज्ञान डिस्पेंसर से सुविधाकर्ताओं और आकाओं में स्थानांतरित हो रही है। इस संक्रमण के लिए डिजिटल साक्षरता और अंतःविषय सोच से लेकर व्यक्तिगत सीखने के रास्तों के माध्यम से छात्रों का मार्गदर्शन करने की क्षमता तक दक्षताओं के एक नए सेट की आवश्यकता होती है। आगामी राष्ट्रीय शिक्षक शिक्षा ढांचा, जो 2026 में लॉन्च करने के लिए तैयार है, इनमें से कुछ अंतरालों को संबोधित कर सकता है, लेकिन निरंतर व्यावसायिक विकास और शैक्षणिक नवाचार को प्राथमिकता देनी चाहिए। डिग्री और प्रमाणपत्र की बदलती धारणा भी ध्यान आकर्षित करती है। आज के जॉब मार्केट में, प्रदर्शनीय कौशल अक्सर औपचारिक योग्यता से अधिक होते हैं। नियोक्ता तेजी से अकादमिक टेप पर समस्या को सुलझाने की क्षमता, संचार कौशल और डिजिटल दक्षता पर जोर दे रहे हैं। यह बदलाव विशेष रूप से मीडिया, डिजाइन, आईटी और उद्यमिता जैसे क्षेत्रों में स्पष्ट है। नतीजतन, संस्थानों को क्षमता को प्रतिबिंबित करने के लिए अपने मूल्यांकन प्रणालियों और पाठ्यक्रम परिणामों को फिर से संगठित करना चाहिए, न कि केवल अनुपालन।

आगे जाकर, भारत में उच्च शिक्षा का भविष्य सार्थक सहयोग में निहित है। प्रासंगिकता, इंटर्नशिप, सलाह और प्लेसमेंट सुनिश्चित करने के लिए शैक्षणिक संस्थानों को उद्योगों के साथ गहरी भागीदारी का निर्माण करना चाहिए। विशेषज्ञता, अनुकूलनशीलता और आजीवन सीखने के लिए एक प्रतिबद्धता प्रमुख विभेदक होगी। इन क्षेत्रों में निवेश करने वाले संस्थानों को तेजी से बदलती दुनिया के लिए छात्रों को तैयार करने के लिए सबसे अच्छा स्थान दिया जाएगा।

खेल के क्षेत्र में उत्कृष्टता हासिल करेगा इंडिया

हाल ही में केंद्रीय मंत्रिमंडल ने राष्ट्रीय खेल नीति 2025 (खेलो भारत नीति-2025) को मंजूरी दी है। वास्तव में, यह बहुत ही काबिले-तारीफ है। उपलब्ध जानकारी के अनुसार यह राष्ट्रीय खेल नीति-2001 का स्थान लेगी। भारत विश्व का सबसे अधिक जनसंख्या वाला देश है, लेकिन खेलों की दृष्टि से अब तक भारत को वह स्थान प्राप्त नहीं है, जो कि विश्व के अन्य देशों जैसे कि संयुक्त राज्य अमेरिका, चीन, रूस, जर्मनी, और ऑस्ट्रेलिया को है। अमूमन यह देखा गया है कि उक्त देश खेल के क्षेत्र में भारत से बहुत आगे हैं और ये खेल के क्षेत्र में शीर्ष पर या यूं कहें कि अव्वल रहते हैं। पाठक जानते होंगे कि इन देशों ने ओलंपिक और अन्य प्रमुख खेल प्रतियोगिताओं में बहुत बार शानदार प्रदर्शन किया है और खेल के क्षेत्र में खुद को साबित किया है। पाठकों को बताता चलूं कि ओलंपिक खेलों में तो, संयुक्त राज्य अमेरिका सबसे सफल देश रहा है, जिसके बाद चीन, रूस, जर्मनी और फ्रांस हैं। गौरतलब है कि जमैका स्प्रिंटिंग में, केन्या लंबी दूरी की दौड़ में, और ब्राजील फुटबॉल में मजबूत है।संयुक्त राज्य अमेरिका क्रमशः बास्केटबॉल, तैराकी, एथलेटिक्स, गोल्फ में, चीन क्रमशः टेबल टेनिस, बैडमिंटन, भारोत्तोलन में, भारत का मित्र देश रूस जिम्नास्टिक्स, मुक्केबाजी, आइस हॉकी में, जर्मनी क्रमशः घुड़सवारी और हॉकी में, ऑस्ट्रेलिया क्रमशः तैराकी, क्रिकेट और रग्बी में उत्कृष्ट प्रदर्शन करते आए हैं और इन खेलों में इन देशों का कोई सानी नहीं है। हाल ही में जिस 'खेलो भारत नीति-2025' को सरकार द्वारा मंजूरी प्रदान की गई है, यह नीति भारत को वैश्विक खेल महाशक्ति बनाने के लिये एक रोडमैप प्रस्तुत करती है, जिसका विशेष ध्यान वर्ष-2036 के ओलंपिक पर केंद्रित है। कहना ग़लत नहीं होगा कि भारत के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी की अध्यक्षता में केंद्रीय मंत्रिमंडल ने जिस राष्ट्रीय खेल नीति, 2025 को मंजूरी दी है, वह भारत को खेलों में विश्वशक्ति बनाने की एक बहुत ही जरूरी महत्वाकांक्षी व बड़ी ही शानदार योजना है। उपलब्ध जानकारी के अनुसार केंद्रीय मंत्रालयों, नीति आयोग, राज्य सरकारों, राष्ट्रीय खेल महासंघों, खिलाड़ियों, खेल विशेषज्ञों और सार्वजनिक हितधारकों के साथ व्यापक परामर्श के बाद इस नीति को तैयार किया गया है। पाठकों को बताता चलूं कि इस नीति में साल 2047 तक भारत को खेलों में दुनिया के शीर्ष पांच देशों में शामिल करने का लक्ष्य रखा गया है। कहना ग़लत नहीं होगा कि भारत अब ग्लोबल स्पोर्ट्स मार्केट में भी इस नीति के माध्यम से, मजबूत बन सकेगा।इस नीति के तहत ओलंपिक मेजबानी पर भी फोकस किया गया है, जो काबिले-तारीफ है। वास्तव में भारत की इस खेल नीति से खेल को जमीनी स्तर पर बढ़ावा मिल सकेगा, और गांवों-कस्बों से खिलाड़ी सामने आ पायेंगे।इस संबंध में हमारे देश के खेल मंत्री मनसुखलाल मंडाविया ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर यह बात कही है कि, 'नई पॉलिसी से भारत में स्पोर्ट्स कल्चर को जमीनी स्तर पर बढ़ावा मिलेगा। जिसका फोकस एथलीट डेवलपमेंट और इन्फ्रास्ट्रक्चर बढ़ाने पर रहेगा।' पाठकों को बताता चलूं कि भारत की यह खेल नीति पांच मजबूत आधारों पर आधारित है जिनमें क्रमशः ग्लोबल स्पोर्ट्स पर मजबूती, इकोनॉमी डेवलपमेंट के लिए खेल, सोशल डेवलपमेंट के लिए खेल, लोगों के विकास के लिए खेल तथा खेलों को शिक्षा के साथ जोड़ना तक शामिल किया गया है।अब स्पोर्ट्स प्रोग्राम गांवों तक पहुंचेंगे और वहां से टेलेंट सर्च के बाद खिलाड़ियों को आगे आने का मौका मिलेगा। शहरों के साथ ही गांवों में भी स्पोर्ट्स इंफ्रास्ट्रक्चर को बढ़ावा दिया जाएगा। खिलाड़ियों की ट्रेनिंग, कोचिंग और एथलीट सपोर्ट के लिए वर्ल्ड क्लास सिस्टम को बढ़ावा दिया जाने पर फोकस होगा। स्पोर्ट्स कोच, तकनीक, रेफरी सब पर विशेष ध्यान दिया जाएगा। स्पोर्ट्स मैनुफैक्चरिंग सिस्टम, स्पोर्ट्स ट्यूरिज्म, प्राइवेट सैक्टर की खेलों में हिस्सेदारी पर विशेष जोर दिया जाएगा। पारंपरिक और देशी खेलों पर विशेष फोकस होगा। साथ ही साथ आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग, महिलाओं, आदिवासी समाज, और दिव्यांग जनों की हिस्सेदारी बढ़ाई जाने का प्रयास होगा। स्पोर्ट्स को शिक्षा में करियर आप्शन का रूप दिया जाएगा। कम्यूनिटी इंवेट्स पर जोर होगा तथा देश के स्कूलों, कालेजों और आफिसेज में विभिन्न फिटनेस प्रोग्राम चलाए जाएंगे। स्कूलों में, कालेजों में यूनिवर्सिटीज में खेलों के प्रति जागरूकता विकसित की जाएगी। कहना चाहूंगा कि पांच महत्वाकांक्षी लक्ष्यों पर आधारित यह नीति फिट, समावेशी और सशक्त नागरिक तो बनायेगी ही, भारत को खेलों में विश्वशक्ति बनाने में भी मदद करेगी।सच तो यह है कि

देश के खेल परिदृश्य को नया आकार देने और खेलों के माध्यम से लोगों को सशक्त बनाने के उद्देश्य से एक यह एक बड़ी ऐतिहासिक, नायाब और शानदार पहल है। इतना ही नहीं कानूनी ढांचे सहित खेल प्रशासन के लिए एक मजबूत नियामक ढांचा स्थापित किया जाएगा। इसमें (खेल नीति में) निजी क्षेत्र का वित्तपोषण और सहयोग होगा। प्रौद्योगिकी और नवाचार पर फोकस होगा।एक राष्ट्रीय निगरानी रूपरेखा तैयार होगी तथा इस नीति में समग्र प्रभाव प्राप्त करने के लिए सभी मंत्रालयों और विभागों की गतिविधियों, योजनाओं और कार्यक्रमों में खेल प्रोत्साहन को जोड़ने का आह्वान भी किया गया है। अंत में यही कहूंगा कि कुल मिलाकर भारत की यह नीति हमारे देश को खेलों में विश्वशक्ति बनाने में तो मदद करेगी ही, यह फिट, समावेशी और सशक्त नागरिक भी बना सकेगी। कहा जा सकता है कि भारत की नई खेल नीति-2025 भारत में इस धारणा को बदलने में कामयाब हो पाएगी कि- 'खेलोगे-कूदोगे तो होओगे खराब, पढ़ोगे लिखोगे तो बनोगे नवाब।'

सुनील कुमार महला, फ्रीलांस राइटर, कालमिस्ट व युवा साहित्यकार, उत्तराखंड।

मस्तिष्क संगीत के माध्यम से भावनात्मक संक्रमण को ट्रैक करता है

विजय गर्ग

नए शोध से पता चलता है कि मस्तिष्क भावनात्मक बदलावों को कैसे नेविगेट करता है, संगीत को बदलते तंत्रिका पैटर्न को मैप करने के लिए एक उपकरण के रूप में उपयोग करता है। वैज्ञानिकों ने पाया कि मस्तिष्क में भावनात्मक प्रतिक्रियाएं श्रोता की पूर्व भावनात्मक स्थिति पर बहुत अधिक निर्भर करती हैं।

उदाहरण के लिए, एक उदास से पहले एक खुश धुन सुनने से मस्तिष्क उदासी को संसाधित करने का तरीका बदल जाता है, अगर तनाव पहले आया था की तुलना में। ये निष्कर्ष भावनात्मक विकारों के बीच भावनात्मक कठोरता के इलाज के लिए नई संभावनाएं खोलते हैं, यह लक्षित करके कि मस्तिष्क भावनात्मक राज्यों के बीच कैसे बदलता है।

संदर्भ मामले: पूर्व भावनात्मक राज्यों आकार कैसे मस्तिष्क नई भावनाओं के लिए प्रतिक्रिया करता है। एक उपकरण के रूप में संगीत: शोधकर्ताओं ने भावनात्मक संक्रमण को ट्रिगर करने और ट्रैक करने के लिए संगीतकार निर्मित संगीत का उपयोग किया। चिकित्सीय क्षमता: निष्कर्ष भावनात्मक कठोरता से जुड़े अवसाद और मनोदशा विकारों के लिए हस्तक्षेप को सूचित कर सकते हैं।

मानव मस्तिष्क भावनाओं को कैसे ट्रैक करता है और इन भावनाओं के बीच संक्रमण का समर्थन करता है?

एक नए eNeuro पेपर में, कोलंबिया विश्वविद्यालय के मैथ्यू सैक्स और सहयोगियों ने संदर्भ निर्भरता और भावनाओं की प्रकृति में उतार-चढ़ाव पर प्रकाश डालने के लिए मस्तिष्क गतिविधि का आकलन करने के लिए संगीत और

एक उन्नत दृष्टिकोण का उपयोग किया।

यह एक मस्तिष्क और संगीत नोट्स दिखाता है। ये निष्कर्ष बताते हैं कि तंत्रिका गतिविधि और भावनात्मक प्रतिक्रियाओं के बीच संबंध किसी व्यक्ति की पिछली भावनात्मक स्थिति के संदर्भ पर निर्भर हो सकते हैं। साभार: न्यूरोसाइंस न्यूज़

शोधकर्ताओं ने कंपोजर के साथ मिलकर ऐसे गाने बनाए, जिनसे अलग-अलग समय के बिंदुओं पर अलग-अलग भावनाएं पैदा हुईं। फिर उन्होंने अध्ययन प्रतिभागियों की मस्तिष्क गतिविधि का आकलन किया क्योंकि उन्होंने इन गीतों को सुना।

सैक्स एट अल। यह पता चला कि मस्तिष्क क्षेत्रों में गतिविधि के पैटर्न में परिवर्तन जो ध्वनि प्रसंस्करण और सामाजिक अनुभूति का समर्थन करते हैं, संगीत द्वारा ट्रिगर की गई विभिन्न भावनाओं के बीच संक्रमण को दर्शाते हैं।

विशेष रूप से, मस्तिष्क गतिविधि के पैटर्न में ये परिवर्तन पिछली भावनात्मक स्थिति से प्रभावित थे। उदाहरण के लिए, यदि किसी ने उदास मार्ग को सुनने से पहले संगीत का एक हर्षित मार्ग सुना, तो उनके मस्तिष्क ने किसी ऐसे व्यक्ति की तुलना में दुखद मार्ग का अलग जवाब दिया जो पहले एक तनावपूर्ण संगीत मार्ग सुनता था।

शोधकर्ताओं ने यह भी पाया कि जब पिछली भावना संगीत द्वारा शुरू की गई नई भावना के समान थी, तो मस्तिष्क में भावनात्मक संक्रमण पहले समय में हुआ था।

ये निष्कर्ष बताते हैं कि तंत्रिका गतिविधि और भावनात्मक प्रतिक्रियाओं के बीच संबंध किसी व्यक्ति की पिछली भावनात्मक स्थिति के संदर्भ पर निर्भर हो सकते हैं।

सैक्स कहते हैं, ?हम जानते हैं कि जो लोग मूड डिसऑर्डर या डिप्रेशन से पीड़ित होते हैं, वे अक्सर भावनात्मक कठोरता का प्रदर्शन करते हैं, जहां वे मूल रूप से भावनात्मक स्थिति में फंस जाते हैं.

इस अध्ययन से पता चलता है कि शायद हम किसी को अवसाद के साथ ले जा सकते हैं, उदाहरण के लिए, और भावनात्मक कठोरता है कि उंहें एक बहुत ही नकारात्मक स्थिति में रहता है के लिए तंत्रिका मार्कर की पहचान करने के लिए विकसित दृष्टिकोण का उपयोग करें।

वन, पशु और मानव — एक ही साँस की डोर पर टिके जीवन का महासंग्राम

एक नन्हा सा वायरस, किसी जंगल की गहराइयों में पल रहे प्राणी से जन्मा, पूरी मानव सभ्यता को हिलाकर रख सकता है। विश्व जूनोसिस दिवस, जो हर 6 जुलाई को आता है, हमें यही कठोर सत्य याद दिलाता है—हमारी धरती कितनी नाजुक है, हमारे जीवन कितने आपस में जुड़े हैं। एक कुत्ते का काटना, एक चमगादड़ की उड़ान, या गाय के दूध में छिपा रोग, चुपके से हमारे घरों तक पहुँच सकता है। यह दिन केवल चेतावनी नहीं, बल्कि एक प्रबल जागृति की पुकार है। यह हमें बताता है कि हम और पशु एक ही साँस, एक ही धरती के बंधन में बँधे हैं। लापरवाही अब मंजूर नहीं—यह समय है सजग होने का, एकजुट होने का, और इस अदृश्य शत्रु से डटकर मुकाबला करने का। विश्व जूनोसिस दिवस सिर्फ़ एक तारीख़ नहीं, यह एक संकल्प है—हमारी दुनिया को सुरक्षित रखने का, आज और हमेशा।

जूनोसिस—यह शब्द नहीं, एक चुपके से दस्तक देता तूफ़ान है, जो पशुओं से मनुष्यों तक छलाँग लगाकर सभ्यताओं को झकझोर सकता है। ग्रीक भाषा में "जून" यानी पशु और "नोसिस" यानी रोग—यह वे अदृश्य शत्रु हैं जो जंगलों, खेतों और हमारे आसपास के प्राणियों से निकलकर हमारे घरों की देहरी लाँघ जाते हैं। विश्व स्वास्थ्य संगठन की चेतावनी गूँजती है: विश्व के 60% संक्रामक रोग जूनोटिक हैं, और 75% से अधिक नई बीमारियाँ पशुओं से जन्म लेती हैं। रेबीज, जो हर साल 59,000 जिंदगियों को निगल जाता है, जिसमें 40% मासूम बच्चे हैं; ब्रुसेलोसिस, जो भारत के गाँवों में चुपके से तबाही मचाता है; और कोविड-19, जिसने 70 लाख से अधिक लोगों को असमय छीन लिया—ये जूनोसिस के भयावह चेहरे हैं। भारत में, राष्ट्रीय रोग नियंत्रण केंद्र (एनसीडीसी) की रिपोर्ट चीख-चीखकर बताती है: रेबीज हर साल 20,000 जिंदगियाँ छीन लेता है, जो वैश्विक आँकड़ों का एक तिहाई है। ये सिर्फ़ संख्याएँ नहीं, बल्कि टूटे परिवारों की अनसुनी पुकार हैं।

6 जुलाई का दिन इतिहास की एक ऐसी गूँज है, जो साहस और विज्ञान की विजय को गाती है। सन 1885 में, लुई पाश्चर ने रेबीज के टीके से एक मासूम बच्चे की जान बचाकर मानवता को एक नई उम्मीद दी। यह वह पल था, जब एक प्राणघातक रोग, जो एक बार पकड़ में आने पर 100% मृत्यु की सजा सुनाता है, पहली बार मानव के साहस के सामने घुटने टेका। रेबीज आज भी उन कोनों में कहर ढाता है, जहाँ जागरूकता की रोशनी मंद है और टीकाकरण का अभाव है। पाश्चर की यह जीत सिर्फ़ एक वैज्ञानिक मील का पत्थर नहीं, बल्कि एक ज्वलंत संदेश है—विज्ञान, दृढ़ता और सामूहिक संकल्प से कोई भी अदृश्य दुश्मन अजेय नहीं। आज की यह लड़ाई पहले से कहीं अधिक जटिल और गहन है। भारत, जहाँ पशुपालन न केवल आजीविका का आधार है, बल्कि संस्कृति का हिस्सा है, वहाँ जूनोटिक रोग एक निस्तब्ध, अदृश्य खतरा बनकर मँडराते हैं। ब्रुसेलोसिस, जो संक्रमित पशुओं के दूध या निकट संपर्क से फैलता है, ग्रामीण भारत में हज़ारों लोगों को लंबे बुखार और अंतहीन थकान की जकड़ में ले रहा है। राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन की चेतावनी गूँजती है—लेप्टोस्पायरोसिस और स्क्रब टाइफस जैसे रोग हर साल लाखों जिंदगियों को अपनी चपेट में लेते हैं। विश्व पशु स्वास्थ्य संगठन (ओआइई) का खुलासा और भी डरावना है—पशुजन्य रोगों से भारत को हर साल अरबों रुपये का आर्थिक नुकसान उठाना पड़ता है। लेकिन यह सिर्फ़ संख्याओं की कहानी नहीं; यह उन माँओं की पुकार है, जो अपने बच्चों को खो देती हैं; उन किसानों का दर्द है, जिनकी मेहनत की कमाई रोग की भेंट चढ़ जाती है।

हमारी अपनी करतूतों ने इस संकट को जन्म दिया है—वनों की बेरहम कटाई, अनियंत्रित शहरीकरण, और जलवायु परिवर्तन ने मनुष्य और जंगली जीवों के बीच की नाजुक रेखा को मिटा दिया है। खाद्य एवं कृषि संगठन (एफएओ) की चेतावनी चौंकाने वाली है—पिछले कुछ दशकों में वन्यजीवों के आवास 70% तक सिकुड़ चुके हैं, जिसने नए वायरस और बैक्टीरिया को मानवता के दरवाज़े तक ला खड़ा किया है। कोविड-19 इसका सबसे भयावह प्रमाण है—एक ऐसी त्रासदी, जिसने न केवल लाखों जिंदगियाँ छीनीं, बल्कि पूरी दुनिया को घुटनों पर लाकर समय को जैसे स्थिर कर दिया। विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) का अनुमान डरावना है—इस महामारी ने वैश्विक अर्थव्यवस्था को खरबों डॉलर का नुकसान पहुँचाया। यह प्रकृति का कठोर संदेश है: उसके साथ छेड़छाड़ की सजा सिर्फ़ एक नहीं, पूरी मानवता भुगतती है।

"वन हेल्थ" दृष्टिकोण इस संकट के खिलाफ हमारा सबसे शक्तिशाली हथियार है। यह सिद्धांत चीख-चीखकर कहता है कि मनुष्य, पशु और पर्यावरण का स्वास्थ्य एक अटूट बंधन में बंधा है—एक की रक्षा, सबकी रक्षा। यदि हम पशुओं को स्वस्थ रखें, प्रकृति को सहेजें, तो मानवता का कवच अपने आप मज़बूत होगा। भारत सरकार ने इस दिशा में साहसिक कदम उठाए हैं—'राष्ट्रीय पशु रोग नियंत्रण कार्यक्रम' के तहत फुट-एंड-माउथ डिज़ीज़ और ब्रुसेलोसिस जैसे रोगों के खिलाफ व्यापक टीकाकरण अभियान गूँज रहा है। साथ ही, 'राष्ट्रीय रेबीज नियंत्रण कार्यक्रम' का संकल्प है कि 2030 तक भारत रेबीज के भय से मुक्त होगा। मगर यह सपना तभी साकार होगा, जब समाज का हर व्यक्ति अपनी भूमिका निभाए। हमें स्वच्छता को जीवन का मंत्र बनाना होगा, पालतू पशुओं का नियमित टीकाकरण सुनिश्चित करना होगा, और दूषित मांस या दूध से दूरी बनानी होगी।

विश्व जूनोसिस दिवस केवल एक तारीख़ नहीं, बल्कि एक ज़ोरदार आह्वान है—एक ऐसी सामाजिक क्रांति का, जो अस्पतालों और प्रयोगशालाओं की दीवारों को तोड़कर हर गली, हर गाँव तक गूँजनी चाहिए। यह हमें पुकारता है कि हम अपने बच्चों को स्कूलों में पर्यावरण और पशु स्वास्थ्य की रक्षा का पाठ पढ़ाएँ, उनकी चेतना को जागृत करें। मीडिया को डर की लहरें फैलाने के बजाय समाधान की रोशनी बिखेरनी होगी, जागरूकता के दीप जलाने होंगे। गाँव की पंचायतों से लेकर शहर की नगरपालिकाओं तक, हर स्तर पर एकजुट और संगठित प्रयास अब अनिवार्य हैं। सोचिए, एक छोटा सा गाँव भी अगली वैश्विक महामारी की चिंगारी बन सकता है! जूनोटिक रोग न सीमाओं को मानते हैं, न जाति-वर्ग का भेद करते हैं। यह ऐसी आग है, जो एक चिंगारी से भड़ककर सारी दुनिया को राख कर सकती है।

विश्व जूनोसिस दिवस हमें हमारी नाजुकता का कठोर दर्पण दिखाता है। हमारी सभ्यता भले ही कितने ही ऊँचे शिखर छू ले, पर यदि हमने प्रकृति और पशुओं के साथ अपने बंधन को नहीं संवारा, तो हमारा सारा गर्व पल में राख हो जाएगा। यह दिवस कोई औपचारिक उत्सव नहीं, बल्कि एक गूँजता हुआ आह्वान है—करुणा, जिम्मेदारी और साहस की राह पर चलने की प्रेरणा। यह हमें सिखाता है कि हमारी असली ताक़त हमारी एकजुटता में, हमारे विज्ञान की प्रगति में, और हमारी जागरूकता की ज्वाला में छिपी है। यह वह निर्णायक क्षण है, जब हमें चुनना है—क्या हम अपने बच्चों को एक ऐसी दुनिया सौंपना चाहते हैं, जहाँ हर सुबह डर की छाया के साथ आए, या एक ऐसी दुनिया, जो स्वस्थ, सुरक्षित और सामंजस्य से भरी हो? विश्व जूनोसिस दिवस एक ऐतिहासिक चौराहा है—या तो हम आज सजग होकर अपने भविष्य को बचा लें, या अपनी लापरवाही की सजा अगली महामारी के रूप में भुगतें। यह वह घड़ी है, जब हमें विज्ञान की ताकत को अपनाना है, प्रकृति के प्रति श्रद्धा जागृत करनी है, और अपने समाज को एकता के सूत्र में बाँधना है। यह वह पल है, जब हमारा एक छोटा सा प्रयास, एक नन्हा कदम, मानवता की सबसे गौरवशाली विजय बन सकता है। इस 6 जुलाई को हम प्रण करें—हम न केवल अपने लिए, बल्कि इस धरती के हर प्राणी के लिए एक ऐसी दुनिया रचेंगे, जहाँ हर साँस जीवन की खुशबू बिखेरे, हर कदम उम्मीद की राह पर बढ़े। यह हमारा संकल्प हो—उस माँ धरती के लिए, जो हमें सींच रही है। यह हमारी हुंकार हो—एक स्वस्थ, एकजुट, और अडिग मानवता की हुंकार।

बौद्ध धर्मगुरु दलाईलामा का उत्तराधिकारी कौन होगा, इसमें दुनिया को मंजूर नहीं है चीनी दखल!

कमलेश पांडेय

चीन ने पहले भारतीय भूभाग रहे स्वायत्त प्रदेश तिब्बत पर अवैध कब्जा किया और अब वह चाहता है कि तिब्बती बौद्ध धर्मगुरु दलाईलामा का भावी उत्तराधिकारी कौन होगा, यह फैसला भी रिपब्लिक ऑफ चाइना की सहमति और स्वीकृति से ही तय हो लेकिन मौजूदा दलाईलामा, भारत और अमेरिका के अलावा बहुतेरे देशों को दलाईलामा के चयन में चीनी दखल मंजूर नहीं है। इसके पीछे उसका दुस्साहसी नेतृत्व भी जिम्मेदार है जो शुरू से ही तिब्बतियों के जनाधिकार को, मानवाधिकार को कुचलता आया है।

यही वजह है कि आए दिन बदलते भूराजनीतिक समीकरणों के बीच दलाईलामा के उत्तराधिकार के मसले पर भारत ने दलाई लामा का पक्ष लिया है। ऐसे में सवाल उठता है कि दलाई लामा के उत्तराधिकारी को चुने जाने का इतिहास क्या है? आखिर मौजूदा दलाई लामा को कैसे चुना गया था? वहीं, अब अगले दलाई लामा को चुने जाने की प्रक्रिया क्या हो सकती है? इसमें चीन की क्या आपत्तियां हैं? भारत और अमेरिका की अगले दलाई लामा को चुनने में क्या भूमिका हो सकती है? उल्लेखनीय है कि दलाई लामा 1959 से भारत में निर्वासन में रह रहे हैं। जब चीन के शासन के खिलाफ विद्रोह हुआ था तो वह वहां से भारत आ गए थे।

दरअसल, दलाई लामा को दुनिया भर में अहिंसा, करुणा और तिब्बती लोगों की सांस्कृतिक और धार्मिक पहचान की रक्षा के संघर्ष के प्रतीक के रूप में देखा जाता है जबकि बीजिंग उन्हें अलगाववादी बताता है। इसलिए दलाई लामा के उत्तराधिकार को लेकर दुनिया भर में हलचल है। खुद तिब्बती बौद्ध धर्मगुरु दलाई लामा ने पुष्टि की है कि उनके उत्तराधिकारी का चयन होगा। इसी के साथ यह तय हो गया है कि सैकड़ों वर्षों से चली आ रही तिब्बती बौद्धों की सर्वोच्च धर्मगुरु को चुनने की परंपरा आगे भी जारी रहेगी और भविष्य में नए दलाई लामा के नाम का एलान होगा।

मौजूदा दलाई लामा तेनजिन ग्यात्सो उर्फ ल्हामा थोंडुप के कार्यालय ने उनके हवाले से गत बुधवार को जारी एक बयान में कहा था, 'भविष्य के दलाई लामा को मान्यता देने की प्रक्रिया 24 सितम्बर 2011 के बयान में स्पष्ट रूप से स्थापित की गई है। इसमें कहा गया है कि ऐसा करने की जिम्मेदारी केवल गादेन फोडरंग ट्रस्ट के सदस्यों पर होगी।' जबकि परंपरागत रूप से दलाई लामा का चयन वर्तमान लामा की मृत्यु के बाद पुनर्जन्म के सिद्धांत के आधार पर होता है।

दरअसल, दलाई लामा के इस बयान के सामने आने के बाद से ही चीन से लेकर भारत और अमेरिका तक हलचल मच गई है। यह बयान देकर दलाई लामा ने इस अनिश्चितता को समाप्त कर दिया कि उनके बाद उनका कोई उत्तराधिकारी होगा या नहीं। हालांकि, अपने बयान से दलाई लामा ने चीन के साथ नए सिरे से टकराव की स्थिति पैदा कर दी है। दरअसल, उनका कहना है कि उनका उत्तराधिकारी चीन के बाहर पैदा होगा और अगर बीजिंग में उनके उत्तराधिकारी के चयन की कोशिश की जाती है तो उस व्यक्ति को अस्वीकार किया जाए।

अंतरराष्ट्रीय मामलों के जानकार बताते हैं कि इसमें कुछ भी अप्रत्याशित नहीं है क्योंकि भारत शुरू से ही तिब्बतियों के अधिकार, उनके हितों और उनकी परंपराओं व मूल्यों के समर्थन में खड़ा रहा है। यही वजह है कि केंद्रीय मंत्री किरेन रिजिजू का बयान चीन के लिए एक सख्त संदेश भी है कि इस संवेदनशील मसले पर अब उसकी मनमानी नहीं चलेगी। उनके बयानों से स्पष्ट है कि यह 1962 का भारत नहीं है बल्कि 2025 तक वह कई मामलों में चीन का मजबूत प्रतिद्वंद्वी बनकर उभरा है।

मौजूदा नौबत इसलिए आई कि 14वें दलाई लामा ने अपने वर्तमान पद के लिए अगले शख्स को चुनने की सारी जिम्मेदारी ₹गादेन फोडरंग ट्रस्ट₹ को दे दी है। साथ ही उन्होंने कहा भी है कि अगले दलाई लामा के चुनाव के मामले में किसी और को हस्तक्षेप करने का कोई अधिकार नहीं है। इसका मतलब साफ है कि उनका इशारा चीन की ओर था। यही वजह है कि रिजिजू ने भी उनकी इस बात का समर्थन किया है। वहीं, चीन का इस बारे में कहना है कि दलाईलामा के उत्तराधिकारी का चयन चीनी मान्यताओं के अनुसार और पेइचिंग की मंजूरी से होना चाहिए।

भारत शुरू से ही दलाई लामा के साथ है क्योंकि उनकी ताकत बहुत ज्यादा है। देखा जाए तो तिब्बत के लिए दलाई लामा केवल धार्मिक गुरु नहीं हैं, बल्कि वह उसकी सांस्कृतिक पहचान, उसके वजूद और उसके ताकत के केंद्र हैं। यही वजह है कि साल 1959 में जब उन्हें कम्युनिस्ट सरकार के दमन के चलते भारत में शरण लेनी पड़ी थी, तब से हालात बिल्कुल बदल गए हैं। अब भले ही चीन बेहद ताकतवर हो चुका है और तिब्बत कमजोर, लेकिन गुजरते वक्त के साथ बदला हुआ भारत प्रारंभ से ही तिब्बत के साथ है। ऐसे में यदि तिब्बत का मसला जिंदा है तो वजह हैं दलाई लामा और भारत के बीच का अटूट विश्वास। साम्राज्यवादी चीन भी इसे समझता है और इसी वजह से वह इस पद पर अपने प्रभाव वाले किसी शख्स को बैठाना चाहता है, ताकि उसके कथित आंतरिक मामले में भारत की दाल ज्यादा नहीं गल सके।

बदलते वैश्विक परिवेश में दलाईलामा के विचारों का भू-राजनीतिक असर स्वाभाविक है। ऐसा इसलिए कि चीन ने तिब्बत की पहचान को मिटाने की हर मुमकिन कोशिश कर ली है। इसी कड़ी में दलाई लामा के पद पर दावा उसकी ओर से ऐसी ही एक और अदद कोशिश भर है। उसकी वजह से ही यह मामला धर्म से आगे बढ़कर जियो-पॉलिटिक्स का रूप ले चुका है जिसका असर भारत और उन तमाम जगहों पर पड़ेगा जहां तिब्बत के लोगों ने शरण ली है।

वहीं, भारत पर तो चीन लंबे समय से दबाव डालता रहा है कि वह दलाई लामा को उसे सौंप दे लेकिन दुनिया के सबसे ऊंचे पठार और उसपर अवस्थित संसार के सबसे ऊंचे युद्ध स्थल से जुड़े सामरिक दृष्टिकोण को भारत भला कैसे विस्मृत कर सकता है, वो भी तब जब 1962 में आमने-सामने की लड़ाई के बाद लद्दाख, हिमाचल प्रदेश, उत्तराखंड, नेपाल, भूटान और अरुणाचल प्रदेश की सीमा पर जब तब दोनों देशों के बीच चूहे-बिल्ली का खेल चलता आया हो। इतना ही नहीं, भारत के पड़ोसी देशों में बढ़ते चीनी दखल और उसके पाकिस्तान-बंगलादेश प्रेम के मद्देनजर तिब्बत प्रसंग भारत के लिए भी चीन पर दबाव डालने का मौका है।

सच कहा जाए तो चीन और तिब्बत की लड़ाई भारतीय भूमि पर दशकों से चल रही है। नई दिल्ली-पेइचिंग के बीच गहरे तनाव का एक कारण यह भी है। दलाई लामा की घोषणा के अनुसार, उनका उत्तराधिकारी जब तिब्बत के बाहर का भी हो सकता है, तो यह तनाव और बढ़ सकता है लेकिन इसमें भारत के लिए मौका भी है क्योंकि वह चीन पर कूटनीतिक दबाव डाल सकता है, जो पहलगाम जैसी घटना में भी पाकिस्तान के साथ खड़ा रहा और बॉर्डर से लेकर व्यापार तक, हर जगह पर अमेरिकी इशारे पर भारत की राह में रोड़े अटकाने में लगा है।

उल्लेखनीय है कि दलाई लामा का उत्तराधिकार केवल धार्मिक नहीं बल्कि वैश्विक भू-राजनीति का एक महत्वपूर्ण मुद्दा है। 1951 में तिब्बत पर चीन के कब्जे के बाद से, बीजिंग ने तिब्बती बौद्ध धर्म को नियंत्रित करने का प्रयास किया है। 1995 में, जब दलाई लामा ने गेधुन चोएक्यी न्यिमा को 11वें पंचेन लामा (तिब्बती बौद्धों के दूसरे सर्वोच्च धर्मगुरु) के रूप में मान्यता दी, तो चीन ने उस बच्चे को हिरासत में ले लिया, जिसका ठिकाना आज तक अज्ञात है। इसके बजाय, चीन ने अपने चुने हुए पंचेन लामा को स्थापित किया, जिसे तिब्बती समुदाय ने अस्वीकार कर दिया।

इसलिए भारत और अमेरिका दोनों के लिए दलाई लामा के उत्तराधिकारी का मुद्दा अहम है। भारत के लिए इसलिए कि चीन की कम्युनिस्ट पार्टी के संस्थापक माओत्से तुंग की कमान में चीनी सेना लंबे समय तक तिब्बत पर कब्जे की कोशिश में जुटी रही। इसके खिलाफ जब दलाई लामा के नेतृत्व में तिब्बती बौद्धों ने आवाज उठाई तो चीनी सेना ने इसे बर्बरता से कुचल दिया। इसके बाद 1959 में चीन के तिब्बत पर कब्जा करने के बाद दलाई लामा तिब्बतियों के एक बड़े समूह के साथ भारत आ गए और यहां से ही तिब्बत की निर्वासित सरकार का संचालन करने लगे। तब

तिब्बत में घटी इस घटना ने पूरी दुनिया का ध्यान अपनी ओर आकर्षित किया। तब से दलाई लामा ने हिमाचल प्रदेश के धर्मशाला को अपना घर बना लिया जिससे बीजिंग नाराज हो गया और वहां उनकी उपस्थिति चीन और भारत के बीच विवाद का विषय बनी रही। भारत में इस वक्त करीब 1 लाख से ज्यादा तिब्बती बौद्ध रहते हैं जिन्हें पूरे देश में पढ़ाई और काम की स्वतंत्रता है। दलाई लामा को भारत में भी काफी सम्मान दिया जाता है।

वहीं, अमेरिका के लिए भी तिब्बती धर्मगुरु के चयन का मुद्दा काफी अहम है। कहा जाता है कि दूसरे विश्व युद्ध के अंत के बाद जब शीत युद्ध अपने शुरुआती चरण में था, तब अमेरिका की विदेश मामलों की खुफिया एजेंसी- सेंट्रल इंटेलिजेंस एजेंसी (सीआईए) ने चीनी कब्जे के खिलाफ तिब्बत के प्रतिरोध में सहायता की थी। दलाई लामा के तिब्बत छोड़ने और भारत में बसने के बावजूद अमेरिका ने निर्वासित तिब्बती सरकार की मदद नहीं छोड़ी है। अमेरिका में तिब्बती बौद्धों की धार्मिक स्वायत्तता को लेकर डेमोक्रेटिक और रिपब्लिकन पार्टी दोनों ही मुखर रही हैं। इतना ही नहीं, अमेरिकी सरकार अगले दलाई लामा के चयन में चीन के दखल को भी अमान्य करार देती आई है। इसका एक उदाहरण 2015 में देखने को मिला था, जब चीन ने अगले दलाई लामा को चुनने के लिए अधिकार होने की बात कही थी। तब अमेरिकी अधिकारियों ने सार्वजनिक तौर पर इसे नकारा था और कहा था कि तिब्बती बौद्ध खुद इसका फैसला कर सकते हैं।

अमेरिका की तरफ से तिब्बती बौद्धों और दलाई लामा के समर्थन में सबसे बड़ा फैसला 2020 में आया, जब राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप की सरकार ने तिब्बत नीति और समर्थन कानून (टीपीएसए) को संसद से पारित करवाया था। अपने इस कदम से अमेरिका ने यह तय कर दिया कि दलाई लामा का उत्तराधिकारी तिब्बत के बौद्धों द्वारा ही चुना जाएगा और इस मामले में चीन के अधिकारियों के दखल को मान्यता नहीं मिलेगी।

झारखंड सीआईडी साईबर सेल ने चीनी सायबर अपराधियों के भारतीय ऐजेंटों को किया गिरफ्तार

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड-झारखंड

रांची। झारखंड सीआईडी की साइबर क्राइम ब्रांच ने पहली बार एक साथ सात साइबर अपराधियों को गिरफ्तार किया है. गिरफ्तार सभी साइबर अपराधी चीनी साइबर अपराधियों के भारतीय एजेंट हैं. ये सभी झारखंड में रहकर चीनी साइबर अपराधियों के लिए काम करते थे.

सीआईडी की ओर से जारी प्रेस रिलीज में बताया गया है कि साइबर क्राइम ब्रांच को अपनी टेक्निकल टीम के जरिए सूचना मिली थी कि रांची के जगन्नाथपुर थाना क्षेत्र के ओलिव गार्डन होटल में संगठित साइबर अपराधियों का एक गुट जमा हुआ है. यह गिरोह निवेश घोटाला और डिजिटल अरेस्ट जैसी धोखाधड़ी की गतिविधियों में संलिप्त है. सूचना के आधार पर साइबर क्राइम ब्रांच की ओर से होटल में अचानक छापेमारी की गई, जहां से एक साथ सात साइबर अपराधी पकड़े गए. गिरफ्तार साइबर अपराधियों के पास से 12 मोबाइल, 11 लैपटॉप, 14 एटीएम, चेक बुक के साथ ही व्हाट्सएप और टेलीग्राम के 60 से अधिक चैट बरामद किए गए हैं.

सीआईडी की साइबर क्राइम ब्रांच ने जानकारी दी है कि गिरफ्तार किए गए सभी साइबर अपराधी चीनी साइबर अपराधियों के भारतीय एजेंट हैं. साइबर क्राइम ब्रांच के मुताबिक गिरफ्तार किए गए साइबर अपराधी देश के अलग-अलग हिस्सों से चीनी साइबर अपराधियों को म्युल बैंक खातो की सप्लाई करते थे. गिरफ्तार किए गए साइबर अपराधियों में एक स्पेशल एजेंट भी शामिल है. स्पेशल एजेंट चीनी milnay, dargonpay, super pay, mangopayindia के लिए काम कर रहा था.

सीआईडी की साइबर क्राइम ब्रांच के मुताबिक, गिरफ्तार किए गए चीनी नेटवर्क से जुड़े लोगों के पास से व्हाट्सएप और टेलीग्राम से बड़ी संख्या में बैंक अकाउंट की डिटेल और डिजिटल सबूत बरामद किए गए हैं. जांच में यह भी पता चला है कि टेलीग्राम के जरिए चीन से चीनी साइबर अपराधियों के लिए काम करने वाले एजेंटों को एक एप्लीकेशन भेजी जाती थी. भारत में बैठे साइबर अपराधी एप्लीकेशन पर सिम कार्ड में बैंक से जुड़ा डेटा इंस्टॉल कर देते थे. इसे इंस्टॉल करने के बाद एप्लीकेशन अपने आप ओटीपी और बैंक प्लेट चीनी सर्वर पर पहुंचा देता था. चीन में बैठे अपराधी उन खातों तक रिमोट एक्सेस पाकर करोड़ों रुपये की ठगी कर रहे थे.

व्यंग्य : एक सड़क की मौत हो गई! क्या कहा आपने?

मैंने अपने जीवन में कई प्रकार की मौत देखीं है किंतु एक सड़क की मौत का समाचार जीवन में पहली बार सुना है। समाचार सुनते ही मुझे चक्कर आने लगे, आंखों के सामने अंधेरा छाने लगा और सोचते सोचते चिंतन के सागर में चिंतक की तरह गोते लगाने लगा कि, आखिर सड़क की मौत हुई तो कैसे हुई। मीडिया घराने के तमाम कलमकार, बहस कार, मुद्दा कार आदि आदि इस मामले पर चर्चा करने के लिए आपस में एकजुट होकर तकरार तक कर बैठे। सबसे तेज दिखाने के चक्कर में उनसे आगे निकल कर राज और सोनम केस की तरह सड़क की लाश तक खोजने निकल पड़े। वैसे भी इसे सच मान सकते हैं ? कि, मीडिया को पहले पता चलता है मेरे सरकार को और पुलिस को बाद में पता चलता है।

एक सड़क की मौत का समाचार सुनकर शहर की हर गली, मोहल्ले, चौराहे पर एक ही आवाज उठ रही आखिरकार सड़क की मौत हुई तो कैसे हुई ? बेवफा सनम कौन है ? सड़क की मौत के पीछे किसका हाथ है ? पर्दे के पिछे कौन-कौन शातिर षड्यंत्रकारी है। इसका पता लगाने के लिए एक सर्वदलीय समिति को ठोस रूप में गठित की गई। यह तय किया गया कि, जो पूर्ण रूप से ईमानदारी से काम करेंगी। कुछ समय बाद परिणाम ईमानदारी से निकलकर सामने आया कि, इंजीनियर और ठेकेदार को मुख्य रूप से दोषी पाया गया लेकिन जब इन दोनों के पीछे दिखावे की ईमानदारी दिखाते हुए जांच पड़ताल की गई तो सत्ता में बैठे स्वार्थी तत्वों ने चंद सिक्कों के लालच में आकर इंजीनियर और ठेकेदारों को डरा धमका कर उनसे सड़क बनाने के लिए जितना अर्थ लगाया था उस अर्थ में से कुछ अर्थ को लेने के लिए एड़ी चोटी का जोर लगा दिया था तब जाकर इंजीनियर और ठेकेदार से सम्मान जनक अर्थ गोपनीय रुप से प्राप्त हुवा श्रीमान जी आप इसे काले धन कि श्रेणी में नहीं रख सकते हैं।

पापी पेट के सवाल के लिए इंजीनियर और ठेकेदार मरता क्या नहीं करता वालीं हरकत में आकर उन्हेंने आमजन के हिस्से की सड़क में से कुछ सड़क निकाल कर उनको दे दी इस तरह से एक सड़क की मौत हो गई। इंजीनियर और ठेकेदार के साथ अर्थ लेने वाले अर्थाकार के त्रिकोणीय मुकाबले के चलते न्यायालय ने लक्ष्मी नारायण की असीम कृपा से मामला अगली तारीख तक ठंडे बस्ते में पहुंचा दिया और जनता की भुलाने वालीं आदत का भरपूर लाभ उठाकर मामला कुछ दिनों, महीनो बाद शांत हो जाएगा यह तय माना जाए। इस तरह से एक सड़क की मौत को भुल भुलैया की भुल में अच्छे दिन की तरह, सब भुल जाएंगे।

प्रकाश हेमावत

ई-वोटिंग: लोकतंत्र की मजबूती या तकनीकी जटिलता?

ई-वोटिंग मतदान प्रक्रिया को सरल, सुलभ और व्यापक बनाने की दिशा में एक क्रांतिकारी कदम हो सकता है। बिहार के प्रयोग से स्पष्ट है कि मोबाइल ऐप के माध्यम से मतदान प्रतिशत में बढ़ोतरी संभव है। हालांकि, तकनीकी पहुंच, साइबर सुरक्षा, मतदाता की पहचान और गोपनीयता जैसी चुनौतियाँ इस प्रणाली के समक्ष खड़ी हैं। डिजिटल असमानता और भरोसे की कमी को दूर किए बिना इसका व्यापक क्रियान्वयन उचित नहीं होगा। ई-वोटिंग का भविष्य उज्ज्वल है, बशर्तें इसे संतुलित, सुरक्षित और समावेशी ढंग से लागू किया जाए।

डॉ. सत्यवान सौरभ

भारतीय लोकतंत्र की सबसे बड़ी ताकत है– जनभागीदारी। यह भागीदारी जितनी व्यापक होती है, उतना ही लोकतंत्र मजबूत होता है। लेकिन जब आम चुनावों में भी 100 में से केवल 60-65 लोग ही अपने मताधिकार का उपयोग करते हैं, तो सवाल उठता है कि शेष 35-40 प्रतिशत वोटर क्यों चुप रह जाते हैं? क्या यह निष्क्रियता है, उदासीनता है, या व्यवस्था की असुविधा?

इस संदर्भ में ई-वोटिंग (इलेक्ट्रॉनिक वोटिंग, मोबाइल या इंटरनेट के माध्यम से) को भविष्य का समाधान बताया जा रहा है। हाल ही में बिहार में हुए नगर निकाय उपचुनाव में एक ऐतिहासिक प्रयोग हुआ — मोबाइल ऐप के जरिए कुछ क्षेत्रों में वोटिंग करवाई गई और उस क्षेत्र में मतदान प्रतिशत उल्लेखनीय रूप से बढ़ा। यह प्रयोग कई मायनों में संकेत देता है कि यदि तकनीक को सही तरीके से अपनाया जाए तो चुनावी भागीदारी क्रांतिकारी रूप से बढ़ सकती है।

कई बार यह माना जाता है कि जो लोग वोट नहीं डालते, वे लोकतंत्र को गंभीरता से नहीं लेते। लेकिन यह दृष्टिकोण अधूरा है। प्रवासी मजदूर, जो चुनाव के समय अपने घर नहीं लौट पाते; वृद्ध या अस्वस्थ नागरिक, जो लंबी कतारों में खड़े नहीं हो सकते; और दूरदराज क्षेत्रों के नागरिक, जहाँ मतदान केंद्र तक पहुँचना एक कठिनाईपूर्ण कार्य है – इन सभी को यदि घर बैठे सुरक्षित और विश्वसनीय माध्यम से वोट डालने का विकल्प मिले, तो शायद भारत का मतदान प्रतिशत 90% तक पहुँच सकता है।

ई-वोटिंग का सबसे बड़ा लाभ है सुलभता। मोबाइल फोन आज हर हाथ में है। यदि बैंकिंग, शिक्षा, स्वास्थ्य, मनोरंजन, नौकरी आवेदन – सब कुछ मोबाइल से हो सकता है, तो मतदान क्यों नहीं? ई-वोटिंग से लाइन में लगने की आवश्यकता नहीं रहती, दिव्यांगजन और बुजुर्गों के लिए राहत होती है, कामकाजी वर्ग को कार्यालय से छुट्टी लेने की बाध्यता नहीं होती और प्रवासी नागरिक भी मतदान कर सकते हैं। यह तकनीक 'हर मतदाता तक पहुंचने' के लक्ष्य को साकार कर सकती है।

ई-वोटिंग जितनी आकर्षक है, उतनी ही चुनौतियों से घिरी भी है। सबसे पहले साइबर सुरक्षा का प्रश्न आता है – क्या वोट सुरक्षित रहेंगे? क्या हैकिंग या डेटा लीक से लोकतंत्र खतरे में पड़ सकता है? दूसरा प्रश्न है प्रामाणिकता – मोबाइल पर वोट डालने वाले व्यक्ति की पहचान कैसे सुनिश्चित होगी कि वह वही मतदाता है? तीसरा प्रश्न है गोपनीयता – वोट की गोपनीयता कैसे कायम रहेगी जब व्यक्ति अपने घर में बैठकर वोट डाल रहा है? चौथा प्रश्न है टेक्नोलॉजी की पहुंच – क्या भारत का हर नागरिक स्मार्टफोन, इंटरनेट और ऐप का उपयोग करने में सक्षम है?

बिहार नगर निकाय चुनाव में ई-वोटिंग को पायलट प्रोजेक्ट के रूप में लागू किया गया था। मोबाइल ऐप आधारित वोटिंग से बूथ स्तर पर बढ़ा हुआ मतदान प्रतिशत दर्ज किया गया। इससे यह प्रमाणित हुआ कि तकनीक अपनाने से न केवल सुविधा बढ़ती है, बल्कि मतदाता सक्रियता भी। लेकिन इसे पूर्णतः सफल मानना जल्दबाजी होगी। यह प्रयोग सीमित क्षेत्र, चयनित मतदाताओं, और निगरानी में किया गया था। पूरे देश में इस मॉडल को लागू करना वृहद तैयारी, भरोसेमंद तकनीकी आधारभूत ढाँचा और कानूनी वैधता की मांग करेगा।

भारत में आज भी 70 करोड़ से अधिक लोग ग्रामीण क्षेत्रों में रहते हैं, जिनमें से बहुतों के पास स्मार्टफोन या तेज इंटरनेट नहीं है। डिजिटल साक्षरता की कमी, महिलाओं की तकनीकी पहुंच, बुजुर्गों का तकनीक के प्रति झुकाव – यह सभी कारक ई-वोटिंग को समावेशी नहीं, बल्कि विभाजनकारी बना सकते हैं, यदि इसे बिना तैयारी के लागू किया जाए।

इसलिए आवश्यक है कि वोटर वेरिफिकेशन सिस्टम तैयार किया जाए, जैसे आधार कार्ड आधारित OTP, फेस रिकग्निशन, या बायोमेट्रिक लॉगिन। पहले कुछ महानगरों या संस्थानों में स्वैच्छिक रूप से इसे लागू कर प्रभाव का अध्ययन किया जाए। हर चरण पर डेटा एनक्रिप्शन और ट्रैकिंग सिस्टम का निर्माण हो। ग्रामीण और अशिक्षित वर्ग को तकनीकी मतदान की प्रक्रिया समझाई जाए। यह भी आवश्यक है कि कोई भी वोटर दबाव में या निगरानी में वोट न करे, इसके लिए गोपनीयता कानून स्पष्ट हों।

ई-वोटिंग लोकतंत्र को और भी पारदर्शी बना सकती है, बशर्ते उस पर जनविश्वास हो। यदि सही तकनीक, मजबूत साइबर सुरक्षा, पारदर्शिता, और व्यापक जनशिक्षा को मिलाया जाए, तो ई-वोटिंग न केवल मतदान प्रतिशत बढ़ा सकती है, बल्कि लोकतंत्र को सशक्त, समावेशी और समयानुकूल बना सकती है।

कोई भी प्रणाली तभी सफल होती है जब उस पर जनविश्वास हो। ई-वोटिंग में सबसे बड़ी चुनौती है लोगों का भरोसा जीतना। जिस दिन यह विश्वास बन जाएगा कि ₹मोबाइल पर दिया गया मेरा वोट उतना ही सुरक्षित और गोपनीय है जितना मतदान केंद्र पर₹, उसी दिन भारत में 90% से अधिक मतदान हो सकता है।

ई-वोटिंग कोई कल्पना नहीं, बल्कि एक संभावनाशील भविष्य है। लेकिन इसे जल्दबाजी में नहीं, बल्कि संवेदनशीलता, समावेशिता और सुरक्षा के साथ अपनाना होगा। लोकतंत्र की मजबूती केवल कानूनों से नहीं, बल्कि हर नागरिक की भागीदारी से बनती है। और यदि तकनीक उस भागीदारी को सहज बना सकती है, तो क्यों न उसका स्वागत किया जाए – सोच-समझकर, संतुलन के साथ।

बाहुडा यात्रा के दौरान बजरंग दल की मानव श्रृंखला

मनोरंजन सासमल , स्टेट हेड ओड़िशा

भूबनेश्वर : विश्व प्रसिद्ध पुरी बहुदा यात्रा के अवसर पर बजरंग दल, ओडिशा (पूर्व) द्वारा पुरी में विशाल मानव श्रृंखला का आयोजन किया गया। बजरंग दल लिखी भगवा टी-शर्ट पहने तीन हजार से अधिक बजरंग दल कार्यकर्ताओं ने सड़क के दोनों ओर हाथ पकड़कर मानव श्रृंखला बनाई और गुंडिचा मंदिर से काफी दूर तक असंभव भीड़ को रोक दिया। इससे भीड़ में बेहोश हुए श्रद्धालुओं को लेकर एंबुलेंस बहुत जल्दी चिकित्सा केंद्रों तक पहुंच सकी। बीच-बीच में पार्टी कार्यकर्ता श्रद्धालुओं को पानी पिलाने, भोजन बांटने और झाड़ू से कूड़ा हटाने में भी जुटे रहे। आज के कार्यक्रम का नेतृत्व बजरंग दल के निजेरा संयोजक प्रभात भूषण त्रिपाठी ने किया, जबकि विश्व हिंदू परिषद के क्षेत्रीय सेवा प्रमुख हरीश चंद्र प्रधान, पुरी विभाग के संपादक भागीरथी स्वैन, पुरी जिला अध्यक्ष राजेंद्र प्रसाद मोहंती, संपादक रघुनाथ महापात्र, निजेरा के सह-संपादक उमाशंकर आचार्य, निजेरा के कार्यकारी अध्यक्ष पबित्र कुमार स्वैन, निजेरा संगठन के संपादक शरत कुमार प्रधान, पश्चिमी निजेरा संगठन के संपादक सत्य नारायण थानपति, निजेरा सेवा प्रमुख जगन्नाथ पट्टनायक, बजरंग दल के बालासोर जिला संयोजक रश्मी रंजन दाश, निजेरा सह प्रचार प्रमुख अर्धेन्दु शेखर दास, मानस पंडा, नयागढ़ सेवा प्रमुख जगन्नाथ पानीग्राही, देवगढ़ सेवाधाम के संपादक घनश्याम साहू आदि ने इसमें भाग लिया।

BNTG ऐसोसिएशन ऑफिस का शुभारंभ

परिवहन विशेष न्यूज

हैदराबाद नाचाराम : भाग्यनगर तेलंगाना गिरवी और पॉन ब्रोकर्स ऐसोसिएशन के न्यु ऑफिस का शुभारंभ किया गया। जारी प्रेस विज्ञप्ति में मीडिया प्रभारी सुरेश सैणचा ने बताया कि नाचाराम स्थिति नेमाचंद जैन के निवास स्थान पर भाग्यनगर तेलंगाना गिरवी और पॉन ब्रोकर ऐसोसिएशन के ऑफिस का शुभारंभ विधिवत रूप से पुजा अर्चना कर किया गया। इस मौके पर अध्यक्ष मदनलाल रावल, सचिव तुलसाराम सिन्दडॉ, सह सचिव हरिश शर्मा, कोषाध्यक्ष ओमप्रकाश पंवार, उपाध्यक्ष मोहनलाल हाम्बड़, महावीर जैन,तेजाराम काग, राजेश शर्मा, सलाहकार कालुराम काग, डायाराम लचेटा,नेमाराम हॉम्बड़ राकेश शर्मा, बाबुलाल मुलेवा व सभी क्षेत्रों के चुनें हुए सदस्य व व्यापारी उपस्थित रहे। इस अवसर पर अध्यक्ष मदनलाल रावल और सचिव तुलसाराम सिन्दडॉ ने सभी व्यापारियों कों बधाई देते हुए कहा कि आगे से इसी ऑफिस के माध्यम से ऐसोसिएशन के कार्य सम्पन्न किये जायेंगे। तथा व्यापारिक एकजुटता के लिए हमेशा प्रतिबद्ध रहेंगे साथ ही उन्होंने नेमिचंद जैन का भी धन्यवाद किया जिन्होंने यह ऑफिस 2 साल तक लिए निःशुल्क सेवा के लिए ऐसोसिएशन कों दिया है। धन्यवाद ज्ञापित कर सचिव तुलसाराम सिन्दडॉ ने कार्यक्रम को समापन किया।

रांची पब्लिक ट्रांसपोर्ट में अब होगी फ्लैस चार्ज बसें : गडकरी

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड -झारखंड

रांची ,राजधानी रांची के पब्लिक ट्रांसपोर्ट सिस्टम को हाईटेक और इको-फ्रेंडली बनाने की नितिन गडकरी ने सोचा है ।यह महत्वपूर्ण सुधार केंद्रीय सड़क परिवहन एवं राजमार्ग मंत्री नितिन गडकरी गुरुवार को रांची में आयोजित कार्यक्रम में रांची में फ्लैश चार्ज बस शुरू करने की घोषणा की। उन्होने कहा फ्लैशचार्ज बस का पायलट प्रोजेक्ट नागपुर में शुरू किया गया है और अब रांची देश का दूसरा शहर होगा, जहां यह अत्याधुनिक इलेक्ट्रिक बस सेवा शुरू की जाएगी।

गडकरी ने बताया कि नागपुर में इस प्रोजेक्ट का टेंडर मंगलवार को ही फाइनल हुआ है। इस बस में 135 सीटें होंगी, जो एयरलाइंस जैसी आरामदायक होंगी। इसमें सफर करना न सिर्फ

आरामदायक बल्कि सस्ता भी होगा, क्योंकि इसका किराया डीजल बस की तुलना में 35 प्रतिशत कम होगा।श

शहर के भीतर इलेक्ट्रिक फ्लैशचार्ज बसें चलने से डीजल वाहनों पर निर्भरता घटेगी। साथ ही ट्रैफिक में सुगमता और पब्लिक ट्रांसपोर्ट की स्थिति में सुधार होगा। यात्रियों को सस्ती, तेज और आरामदायक यात्रा का अनुभव मिलेगा। साथ ही प्रदूषण नियंत्रण में मदद मिलेगी।

रांची की ट्रैफिक व्यवस्था को सुगम और बेहतर बनाने की दिशा में बड़ा कदम उठाया जा रहा है। केंद्रीय मंत्री नितिन गडकरी ने कहा की विकास रिंग रोड के पास 350 करोड़ रुपये की लागत से अत्याधुनिक इंटरचेंज का निर्माण किया जाएगा। इस परियोजना के तहत ट्रैफिक जाम से निजात दिलाने के लिए प्रमुख चौराहों और मार्गों को एक-दूसरे से जोड़ा जाएगा, जिससे वाहनों की निर्बाध आवाजाही सुनिश्चित की जा सके।

झारखंड में कोयला खदान का हिस्सा ढहा चार की मौत, अन्य फंसे होने की आशंका

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड - झारखंड

राजरप्प , रामगढ़ के कुजू क्षेत्र में बंद कोयला खदान में अवैध खनन के दौरान चार लोगों की मौत हो गई और कई अन्य के फंसे होने की आशंका है. हादसे के बाद इलाके में तनाव है और ग्रामीणों ने सी सी एल प्रबंधन के खिलाफ विरोध प्रदर्शन किया .

झारखंड के रामगढ़ जिले में शनिवार को एक बंद पड़ी कोयला खदान में अवैध खनन के दौरान बड़ा हादसा हो गया. रामगढ़ के कुजू थाना क्षेत्र के कर्मा इलाके में तड़के एक बंद कोयला खदान का हिस्सा ढह गया, जिसमें चार लोगों की मौत हो गई जबकि कुछ अन्य लोगों के फंसे होने की आशंका जताई जा रही है.

रिपोर्ट के मुताबिक रामगढ़ के एसडीपीओ परमेश्वर प्रसाद ने बताया कि अब तक चार शव बरामद किए जा चुके हैं, जबकि घटनास्थल पर राहत और बचाव कार्य जारी है. हालांकि स्थानीय लोगों ने पुलिस के मौके पर पहुंचने से पहले तीन शवों को वहां से हटा लिया.

जमशेदपुर, कोलकाता के 730 करोड जीएसटी घोटाले में ईडी ने किया आरोप पत्र दायर

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड- झारखंड

रांची, प्रवर्तन निदेशालय ने 730 करोड़ रुपये के जीएसटी घोटाले में चार लोगों के खिलाफ आरोप पत्र दायर किया. आरोपित लोगों में घोटाले का मास्टर माइंड शिव कुमार देवड़ा उसका बेटा मोहित देवड़ा के अलावा अमित गुप्ता और अमित अग्रवाल उर्फ विक्की भालोटिया.

इन लोगों पर 135 कागजी कंपनियों के सहारे फर्जी 5000 करोड़ का फर्जी व्यापार दिखा कर 730 करोड़ रुपये का इनपुट टैक्स क्रेडिट लेने और मनी लॉन्ड्रिंग का आरोप लगाया गया है.ईडी ने आठ मई को जीएसटी घोटाले से जुड़े लोगों के रांची, जमशेदपुर और कोलकाता स्थिति ठिकानों पर छापा मारा था. जमशेदपुर से व्यापारी अमित अग्रवाल उर्फ विक्की भालोटिया, कोलकाता से शिवकुमार देवड़ा, मोहित देवड़ा और अमित गुप्ता को गिरफ्तार किया गया था.

ईडी ने जांच के दौरान पाया कि इन अभियुक्तों ने बिना वास्तविक व्यापार के ही जीएसटी बिल अपने ही द्वारा बनायी गयी शेल कंपनियों के नाम जारी किया और आइटीसी का गलत लाभ लिया. जांच में पाया गया कि इन कागजी कंपनियों में

जीएसटी घोटाले से जुड़े लोगों ने फर्जी निदेशक भी बना रखा था. कुछ कंपनियों में खुद भी निदेशक थे.

हालांकि सभी कंपनियों का नियंत्रण उन्हीं लोगों के पास था. आरोपित व्यापारियों ने गलत तरीके से आइटीसी का लाभ लेने के लिए 5000 करोड़ रुपये फर्जी व्यापार का बिल जारी किया था.

जीएसटी घोटाले में छापेमारी के दौरान नौ लाख रुपये नकद जब्त किये गये थे. इसके अलावा जीएसटी घोटाले में आइटीसी का गलत लाभ लेने के लिए बनाये गयी 135 कंपनियों के खातों में जमा 63 लाख रुपये जब्त किये गये.

जालसाजी कर आइटीसी का गलत लाभ लेकर मनी लॉन्ड्रिंग के साहरे खरीदी गयी 5.30 करोड़ रुपये की अचल संपत्ति भी जब्त कर ली गयी है. जीएसटी घोटाले में आगे की जांच जारी है.

छापेमारी के दौरान मिले दस्तावेज के आधार पर जमशेदपुर के व्यापारी अमित अग्रवाल उर्फ विक्की भालोटिया को दिसंबर 2023 में गिरफ्तार किया था. शिव कुमार देवड़ा को अप्रैल 2024 में, अमित गुप्ता व सुमित गुप्ता को अप्रैल 2024 में गिरफ्तार किया था. डीजीजीआइ की टीम विवेक नारसरिया को गिरफ्तार करने उसके घर पर पहुंची थी. लेकिन वह टीम के पहुंचने के पहले ही घर से गायब हो गया था.

डीजीजीआइ ने नारसरिया पर 14 करोड़ रुपये की वसूली के लिए दावा किया है. क्षेत्र के मामले में उभरे विवाद के बाद हाईकोर्ट ने नारसरिया द्वारा की गयी गड़बड़ी की जांच राज्य सरकार को सौंप दी. डीजीजीआइ ने हाइकोर्ट के इस फैसले के खिलाफ सुप्रीम कोर्ट में याचिका दायर की है. मामला सुप्रीम कोर्ट में विचाराधीन है.

कानपुर में गवाह विमल के हत्यारों की तलाश तेज, पुलिस पर लापरवाही का भी आरोप

सुनील बाजपेई

कानपुर। यहां सेन पश्चिम पारा कैटरीना हमले के गवाह विमल गौतम की अपहरण के बाद हत्या मामले में आरोपियों की तलाश तेज कर दी गई है। इस बीच पुलिस पर भी आरोप लगाया गया है जिसके मुताबिक अगर सूचना के आधार पर तत्काल कार्रवाई की जाती तो विमल की जान बचाई जा सकती थी।

आरोप है कि रात करीब साढ़े नौ बजे अपहरण की घटना होने के बाद परिजनों ने पुलिस को सूचना दे दी थी, लेकिन रिपोर्ट अगले दिन दर्ज हुई। घरवालों का आरोप है कि पुलिस ने कोई कार्रवाई नहीं की, जिसका नतीजा है कि उनकी हत्या कर दी गई।

फिलहाल मामले में पुलिस द्वारा मुख्य हत्यारोपी इरफान को इटावा से उठाये जाने की भी खबर है, लेकिन अब तक गिरफ्तारी नहीं दिखाई है। उसकी सफेद कार भी इटावा से मिली है। जबकि थाना प्रभारी के मुताबिक कार इरफान के रमईपुर स्थित घर से मिली है।

सूत्रों से मिली जानकारी के मुताबिक पुलिस की जांच में सामने आया कि खागल पासवान और विमल से विवाद के बाद इरफान बिनगवां गांव छोड़कर रमईपुर में शटरिंग का काम करने लगा। बिनगवां में शटरिंग का काम मिलने से वह पिछले एक सप्ताह से गांव में नजर आ रहा था। हत्याकांड में गांव के अन्य लोगों की भी शामिल होने की आशंका व्यक्त की गई। अधिकारियों के मुताबिक टीमों का गठन कर आरोपियों की तलाश बहुत तेजी से की जा रही है।

पुरी शहर एक महानगर निगम होगा, एक विश्व स्तरीय आध्यात्मिक शहर भी होगा

मनोरंजन सासमल , स्टेट हेड ओड़िशा

भूबनेश्वर : मुख्यमंत्री मोहन माझी ने पवित्र शहर पुरी के लिए बड़ी घोषणा की है। मुख्यमंत्री ने कहा कि पुरी शहर को नगरपालिका से महानगर निगम में अपग्रेड करके आध्यात्मिक राजधानी में तब्दील करने का खाका तैयार किया जा रहा है। स्थानीय लोगों और पुरी के निवासियों ने सरकार के इस फैसले का स्वागत किया है।बहुदा यात्रा से पहले मुख्यमंत्री मोहन माझी ने पुरी के लिए 4 बड़ी घोषणाएं की हैं। सरकार ने ओडिशा की आध्यात्मिक राजधानी के विकास के साथ-साथ पुरी को विश्व पर्यटन स्थल का दर्जा दिलाने का खाका तैयार कर लिया है। पुरी महानगर पालिका बनने जा रही है, यानी राज्य में महानगर पालिकाओं की संख्या 5 से बढ़कर 6 हो जाएगी। पुरी शहर और आसपास की ग्राम पंचायतों को मिलाकर पुरी महानगर पालिका

का गठन किया जाएगा। जिससे पुरी सदर और ब्रह्मगिरी प्रखंड की करीब 7 से 8 ग्राम पंचायतें शामिल होंगी, ताकि इन पंचायतों के निवासियों को शहर जैसी सुविधाएं मिल सकें। इस संबंध में प्रक्रिया जल्द ही शुरू होगी, ऐसा मुख्यमंत्री मोहन माझी ने कहा। पुरी की छवि बदली जाएगी। यहां आने वाले पर्यटकों को महाप्रभु के दर्शन और कुछ अनूठी यादों के साथ विशाल समुद्र तट का अनुभव होगा। नीलमाधव से मंदिर निर्माण का इतिहास, मूर्ति स्थापना, कांची विजय, जनयात्रा, मंदिर अनुष्ठान आदि को चित्रों के माध्यम से प्रदर्शित किया जाएगा। परिसर में एक पुस्तकालय, एक जगन्नाथ संस्कृति अनुसंधान केंद्र और 300 सीटों वाला एक सभागार बनाया जाएगा। सभागार में हर दिन लाइट एंड साउंड शो का आयोजन किया जाएगा। सरकार के इस फैसले का स्वागत करते हुए और मुख्यमंत्री को धन्यवाद देते हुए सांसद संबित पात्रा ने मुख्यमंत्री को धन्यवाद दिया है। सरकार के इस फैसले से पुरी शहर का विकास चरम पर पहुंचेगा। नतीजतन, देश-विदेश से पर्यटकों की संख्या में वृद्धि होगी और पर्यटन उद्योग भी फलेगा-फूलेगा।

जयपुर-मलकानगिरी रेलवे भूमि अधिग्रहण: प्रभावित लोगों को नकद भुगतान

मनोरंजन सासमल , स्टेट हेड ओड़िशा

भूबनेश्वर : मलकानगिरी जिले में रेल लाइन बिछाई जाएगी। जिले के लोगों का चिर प्रतीक्षित सपना पूरा होगा। लम्बे इंतजार के बाद शुक्रवार को मैथिली प्रखंड कार्यालय परिसर में जयपुर से भद्राचलम रेलवे के लिए अधिग्रहित जमीन का मूल्य मैथिली प्रखंड और खैरपुट प्रखंड के प्रथम चरण में अपनी जमीन गंवाने वाले लोगों को दिया गया।

कार्यक्रम में नबरंगपुर के सांसद बलभद्र माझी, मलकानगिरी के विधायक नरसिंह मदकामी, चित्रकोंडा के विधायक गोविंदा पात्रा, मलकानगिरी के जिलाधिकारी आशीष एलोहिम पाटिल ने भाग लिया और लोगों को मुआवजा वितरित किया। जिले में रेलवे लाइन के लिए भूमि अधिग्रहण का काम लगभग पूरा हो चुका है और आज जमीन खोने वाले कुछ लोगों को मुआवजे की पहली किस्त दी गई है।यह रेलमार्ग

मैथिली प्रखंड के 15 गांवों, खैरपुट प्रखंड के 13 गांवों तथा मलकानगिरी प्रखंड के 14 गांवों से होकर गुजरेगा। भूमि अधिग्रहण पर 476 करोड़ रुपये खर्च होंगे। जिसमें से 150 करोड़ रुपये रेल विभाग तथा शेष राशि सरकार देगी। इस रेल परियोजना के लिए आवश्यक 1946 एकड़ में से 714 एकड़ निजी भूमि, 1002 एकड़ वन विभाग की भूमि तथा 231 एकड़ सरकारी भूमि है। नबरंगपुर के सांसद बलभद्र माझी ने कहा कि पिछली सरकार ने इस ओर ध्यान नहीं दिया, लेकिन वर्तमान डबल इंजन सरकार ने इसे प्राथमिकता दी है। उन्होंने कहा कि अधिग्रहित भूमि 6 माह के भीतर रेल विभाग को सौंप दी जाएगी तथा कार्य को आगे बढ़ाया जाएगा। इस बीच कांग्रेस ने प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए कहा है कि यह स्पष्ट नहीं किया गया है कि लोगों को प्रति एकड़ कितना मुआवजा दिया जाएगा तथा सभी लोगों को अभी तक मुआवजा नहीं दिया गया है। इसलिए जब तक यह सब नहीं हो जाता, लोग सस्पेंस में रहेंगे। विपक्ष ने कहा है कि इस पर स्पष्ट जानकारी दी जानी चाहिए।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक संजय कुमार बाटला द्वारा इम्प्रेशंस प्रिंटिंग एंड पैकेजिंग लिमिटेड, सी-18,19,20 सेक्टर 59, नोएडा (उत्तर प्रदेश) से मुद्रित एवं 3, प्रियदर्शनी अपार्टमेंट ए-4, पश्चिमी विहार, नई दिल्ली- 110063 से प्रकाशित। सम्पर्क : 9212122095, 9811902095. newstransportvishesh@gmail.com
(इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी) किसी भी कानूनी विवाद की स्थिति में निपटारा दिल्ली के न्यायालय के अधीन होंगे। RNI No :- DELHIN/2023/86499. DCP Licensing Number F.2 (P-2) Press/2023